विश्व-प्रसिद्ध
मिथक एवं
पुराण-कथाएं
World-Famous Mythologies
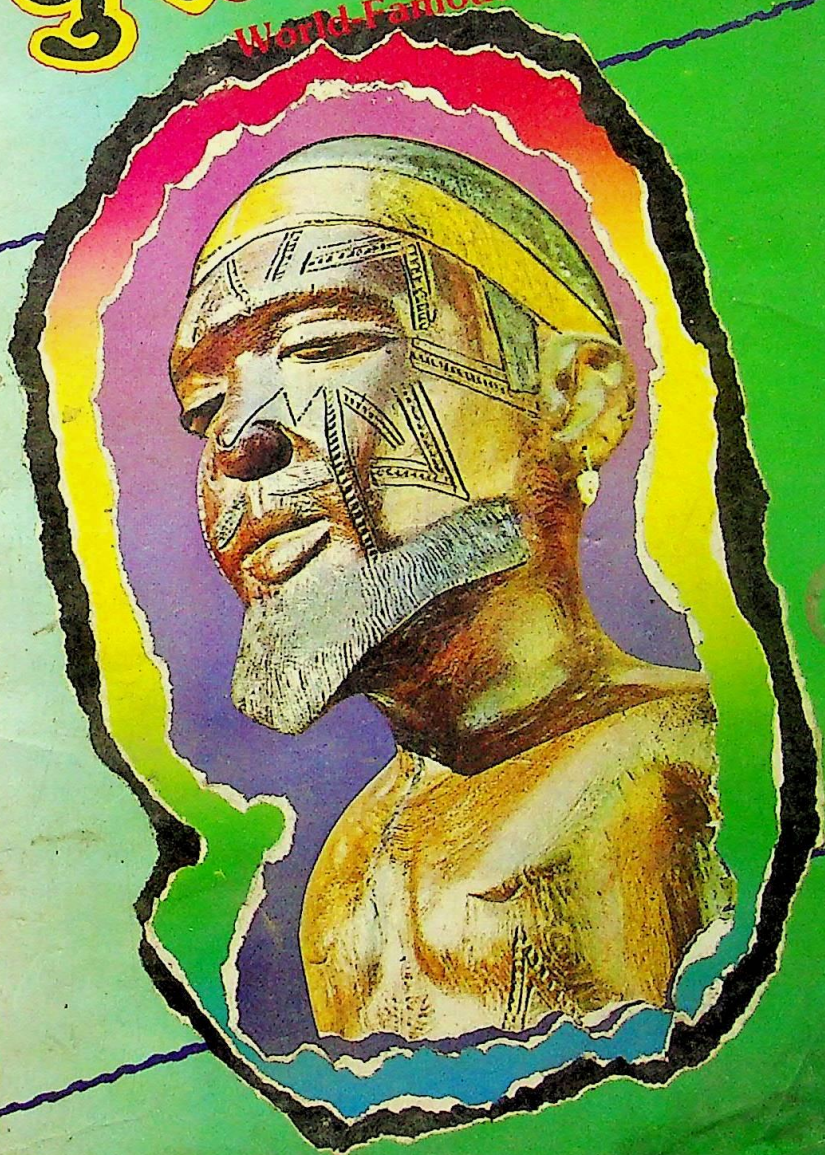
विश्व-प्रसिद्ध मिथक एवं पुराण-कथाएं
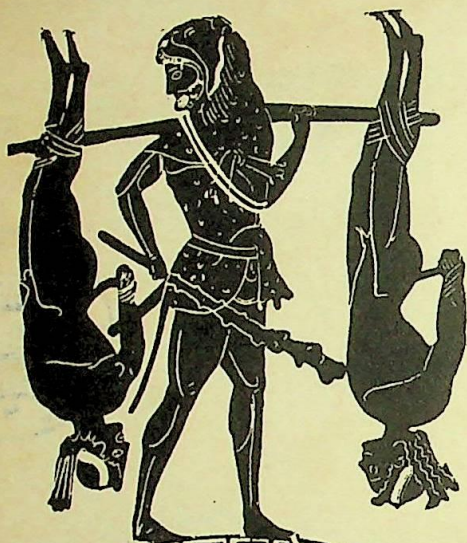
विश्व-प्रसिद्ध

मिथक एवं पुराण-कथाएं

लेखक
नेमिशरण मित्तल

प्रकाशक

पुस्तक महल®

खारी बावली, दिल्ली-110006

फैमिली बुक्स प्रा. लि.

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

1992 में फैमिली बुक्स प्राइवेट लिमि. के साथ एक अनुबन्ध के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रकाशक

पुस्तक महल®, खारी बावली, दिल्ली-110006

विक्रय केन्द्र

• 6686, खारी बावली, दिल्ली-110006........................फोन: 2944314, 2911979
• 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002............फोन: 3268292-93

प्रशासनिक कार्यालय

एफ-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 3276539, 3272783-3272784
Telex : 031-78090 SBP IN • Fax : 91-11-2924673

शाखाएं

• 22/2, मिशन रोड (शामा राव कम्पाउंड), बंगलौर-560027 फोन : 2234025
• खेमका हाउस, प्रथम मंजिल, अशोक राजपंथ, मुरादपुर, पटना-800004 फोन : 656775
• 23–25, जाओबा वाडी, ठाकुरद्वार, बम्बई–400002, फोन: 2010941, 2053387

मूल्य
पेपरबैक संस्करण
सजिल्द लाइब्रेरी संस

Revised Price
Rs. 30/-
PUSTAK MAHAL

चौथा संस्करण: जनवरी, 1995

लेजर टाइप सैटिंग : एस.बी.पी. इलैक्ट्रॉनिक्स पब्लिशिंग, 4/45, रूप नगर, दिल्ली-110007

Printed at Roopak Printers, Navin Shahdra, Delhi-110032

प्रकाशकीय

सुरुचिपूर्ण, कलात्मक एवं प्रामाणिक सामग्री से युक्त हमारी पुस्तकों की ज्ञान-विज्ञान की लेखन-शैली ऐसी होती है कि एक बार उन्हें कोई पढ़ना शुरू करं दे तो पढ़ता ही चला जाये और दूसरी ओर दाम इतने वाजिब होते हैं कि साधारणतम आय वर्ग का पाठक भी उसे खरीद पाये। यही कारण है कि आज हमारी पुस्तकें पॉकेट बुक्स से बाजी लेती हुई लोकप्रियता एवं विक्रय के नये प्रतिमान स्थापित करती जा रही हैं।

कुछ वर्ष पूर्व ज्ञान एवं चिंतन के धरातल पर एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए, उसके ज्ञानक्षेत्र का चहुंमुखी विस्तार करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गयी ***विश्व-प्रसिद्ध शृंखला*** अब निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुकी है। लाखों-लाख पाठकों द्वारा इसे अब तक पढ़ा एवं सराहा जा चुका है और उनमें जैसे इस शृंखला की प्रत्येक पुस्तक को संग्रह करने की होड़-सी लग चुकी है। दरअसल इस शृंखला में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को पूर्णरूप से उजागर करने वाला एक संग्रहणीय सचित्र ***मिनि एनसाइक्लोपीडिया*** है।

प्रस्तुत पुस्तक ***विश्व-प्रसिद्ध मिथक एवं पुराण कथाएं*** इस शृंखला की 33वीं पुस्तक है। मिथक किसी भी संस्कृति विशेष की अमूल्य थाती होते हैं, जिन्हें वह बड़े जतन के साथ सहेज कर रखती है क्योंकि मिथकों की खड्डी पर ही प्रत्येक सभ्यता विशेष का ताना-बाना बुना जाता है।

हर सभ्यता के अनगिनत मिथक हैं। उन सभी को एक स्थान पर दे पाना पुस्तक के सीमित कलेवर को देखते हुए न तो संभव ही था और न ही हमारा साध्य। हमने तो लगभग 20 प्रतिनिधि दुर्लभ चित्रों से युक्त मिथक कथाएं देकर अपने पाठकों के दर्शनार्थ मिथकों की अपार रहस्यमयी दुनिया की कुछ खिड़कियां भर खोलने की चेष्टा की है—तो पलटिये पन्ने.... हर पृष्ठ एक खिड़की है।

—प्रकाशक

मिथक-क्रम

1. भूमिका 9
2. बेबीलोन के मिथक–1: मरडूक 11
3. बेबीलोन के मिथक–2: प्रलय 17
4. चीन के मिथक–1: चांग ताओ-लिंग 22
5. चीन के मिथक–2: च्यांग त्जू-या 25
6. चीन के मिथक–3: मिआओ शान 30
7. मिस्र का मिथक: ओसिरिस 37
8. भारत के मिथक–1: मनुष्यों की उत्पत्ति 48
9. भारत के मिथक–2: शिव के अवतार चन्द्रशेखर 51
10. भारत के मिथक–3: वेदवती की प्रतिज्ञा 57
11. यूनानी मिथक–1: जीयस 63
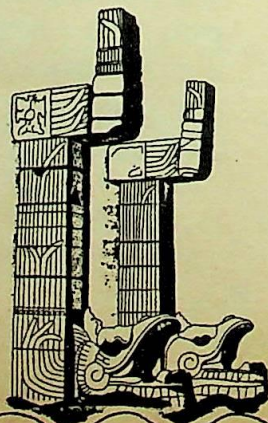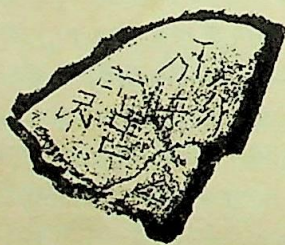
12. **यूनानी मिथक–2:** पर्सीफोन 72
13. **रोम के मिथक–1:** देवता 79
14. **रोम के मिथक–2:** रोम्यूलस और हर्क्यूलीज़ 88
15. **जापान के मिथक–1:** देवता.. 94
16. **जापान के मिथक–2:** बेनटेन और तितली................. 101
17. **उत्तरी युरोप के मिथक–1:** थोर का हथौड़ा 106
18. **उत्तरी युरोप के मिथक–2:** इडुन के सेब.................. 111
19. **कनाडा का मिथक:** रेवेन 115
20. **मैक्सिको का माया मिथक:** मनुष्य की सृष्टि 119
21. **अफ्रीका का मिथक:** मावू देवी के पुत्र 125
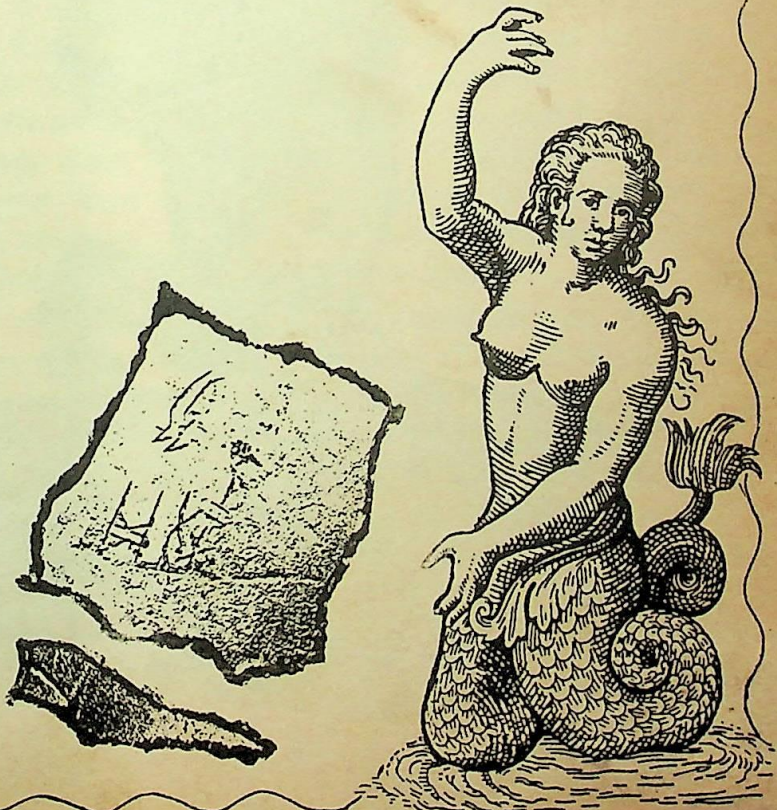
भूमिका

मिथक अतिमानवीय संकल्प, साहस और शक्ति की गाथा, कथा अथवा कहानी होते हैं, जो किसी जाति में पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक लंबे समय तक कहे और सुने जाते रहते हैं और जिन्हें कवि और कथाकार लिखित रूप प्रदान करते समय कालांतर में अपने प्रयोजनों के अनुसार मोड़ते और ढालते जाते हैं।

मिथकों के बारे में ऐसा माना जाता है कि वे ऐसी गंभीर कथाएं होती हैं, जिनमें किसी समाज और जाति के आधारभूत आध्यात्मिक तत्त्व प्रतिबिंबित होते हैं। मिथक दृढ़ आस्था अथवा विश्वास के मूर्तिमान प्रतीक होते हैं तथा सृष्टि-विषयक दृष्टिकोण का निरुपण हैं। मिथकों का उदय एक विशिष्ट संस्कृति के भीतर से होता है। वे उस संस्कृति की अतिशय प्रिय तथा बहुमूल्य धरोहर होते हैं, जिसे वह संस्कृति परिश्रम और आग्रहपूर्वक सुरक्षित रखती है।

मिथकों का स्वभाव है कि उनके चारों ओर धीरे-धीरे धार्मिक आस्थाएं पनपने लगती हैं और वे धर्म का सारतत्त्व बन जाते हैं। मिथकों के बारे में यह धारणा प्रचलित रही है कि उनका उदय गहन धार्मिक अनुभूतियों में से होता है। मनुष्य की पावन अनुभूतियां मिथकों को मूल ढांचा प्रदान करती हैं और उन्हें विश्वास में बदल डालती हैं। कार्ल जुंग सरीखे प्रसिद्ध मनोविज्ञानी मिथकों को व्यापक सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति मानते हैं। मिथकों में जीवन, जीवन-प्रक्रिया और मनुष्यों के चारों ओर काम कर रही शक्तियों के विषय में उनकी अनुभूतियों और संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व होता है।

मिथकों को शुद्ध कल्पना के रूप में देखा जा सकता है और उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे रचनात्मक कल्पनाशीलता और कलात्मक भावना से ओतप्रोत जाति के मस्तिष्क की उपज होते हैं। यह कल्पनाशीलता और कलात्मक भावना उस जाति के लोगों को वह दृष्टि प्रदान करती है, जो उन वस्तुओं में भी सौंदर्य का दर्शन कर लेती है, जिन्हें सामान्यतया कुरूप माना जाता है। कल्पनाशीलता और सौंदर्यबोध के तत्त्व जब सघन हो जाते हैं तब विचार और अनुभव सहज ही कथा और गाथा का रूप ग्रहण कर लेते हैं।

मिथक कोरे इतिहास न होकर विवेक, तर्क और अनुभूति के संगम से उत्पन्न गाथा होते हैं परंतु इस कारण मानव जीवन में उनका महत्त्व और स्थान कम नहीं हो जाता। मिथकों को अनुभव किया जाता है और समझा भी जाता है। वे हमारे

व्यक्तित्व के श्रेष्ठ तत्त्वों के विकास में प्रमुख भूमिका निबाहते हैं। मिथक संस्कृति का एक अनिवार्य और बहुमूल्य अंग होते हैं। उन्हें कृत्रिम राजनीतिक सीमाएं विभाजित नहीं कर पातीं। उदाहरण के लिए मिस्र, यूनान,इटली, फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल में कुछ मिथक समान रूप से प्रचलित हैं। इसी प्रकार भारत, चीन, जापान, थाई देश, मलेशिया, कम्बोडिया, इंडोनेशियाऔर लाओस के अधिकांश मिथकों का तानाबाना एक ही कथावस्तु के इर्द-गिर्द बुना गया है।

अनादिकाल से मनुष्य के मन में कुछ मूलभूत प्रश्न उठते रहे हैं और उसे उनके समाधान की तलाश रही है, जैसे—व्यक्ति की क्या पहचान है, अर्थात् मैं कौन हूं, विश्व की क्या प्रकृति है, इस समूचे ब्रह्मांड के पीछे कौन-सी शक्ति, कौन-सा मूलभूत तत्त्व और क्या वास्तविकता है, मनुष्य का विश्व और ब्रह्मांड के मूल तत्त्व के साथ क्या संबंध है, वह जीवन के संघर्ष में कैसे विजयी हो सकता है, मृत्यु क्या है और व्यक्ति को उसके प्रति क्या रुख अपनाना चाहिए, परिवार, समुदाय और विराट मानव समाज के साथ व्यक्ति का क्या समीकरण है, इत्यादि?

मनुष्य की चेतना में सदा यह अनुभूति बनी रही है कि इस समूचे भौतिक अस्तित्व के पीछे एक अदृश्य सारतत्त्व है, जो भौतिक पदार्थ से सर्वथा अछूता रहता है तथा विघटन और मृत्यु से परे है। मिथक इसी भावना और आस्था का प्रतिनिधित्व और प्रतिपादन करते हैं।

मिथकों का प्रयोजन

मिथकों के पीछे गंभीर प्रयोजन निहित होते हैं। मिथक महज़ मनोरंजन प्रदान करने वाली कहानियां नहीं होते। संसार की प्रत्येक महान संस्कृति ने ब्रह्मांड के अस्तित्व तथा उसके भौतिक तत्त्वों के पीछे निहित शक्तियों, विश्व की रचना तथा मानवीय और नैतिक मूल्यों, न्याय और उदार सामाजिक तथा राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था की स्थापना के संघर्ष की व्याख्या मिथकों और उनके पात्रों, देवताओं तथा वीर नायकों के माध्यम से करने की चेष्टा की है।

मिथक संस्कृति का एक अनिवार्य अंग तो होते ही हैं, वे मनुष्यों के लिए आचरण संहिता का निर्धारण भी करते हैं। उनके पीछे एक नैतिक दृष्टि तथा नीतिमूलक स्वर का आग्रह भी बना रहता है। उन्हें वास्तव में संस्कृति का सारतत्त्व माना जा सकता है।

मिथकों का एक मूलभूत प्रयोजन मृत्यु, प्रेतलोक, पुनर्जन्म और अमरत्व का विश्लेषण भी है। मिथकों का एक अन्य प्रयोजन मनुष्यों को उन कार्यों के बारे में सावधान करना है, जिनके कारण वे देवताओं के कोप-भाजन बन सकते हैं। प्रायः सभी महान संस्कृतियों में ऐसे मिथक विद्यमान हैं, जिनमें देवताओं की अप्रसन्नता के कारण सृष्टि के सिर पर टूट पड़ने वाली प्रलयों और विनाशलीलाओं के वर्णन हैं।

■■

बेबीलोन के मिथक-1: मरडूक

विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में बेबीलोन की सभ्यता का एक प्रमुख स्थान है। इस लुप्त सभ्यता के रहस्य उस समय प्रामाणिक तौर पर सामने आये जब सन् 1845 में ब्रिटेन के पुरातत्त्वविदों ने निनेवेह नामक उस क्षेत्र की खुदाई में, जिसे वर्तमानकाल में ईराक कहा जाता है, मिट्टी की कुछ पट्टिकाएं खोज निकालीं। सुमेरियाई कीलाकार लिपि में मिट्टी की ये पट्टिकाएं ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व की हैं, लेकिन इस बात के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं कि इन पट्टिकाओं पर जो कहानी अंकित है वह ईसा से 1900 वर्ष पूर्व भी प्रचलित थी। ईसा पूर्व 1782 से 1686 तक बेबीलोन पर शासन करने वाले प्रख्यात सम्राट हम्मूराबी ने अपनी प्रख्यात विधि-संहिता की भूमिका में मरडूक देवता को : 'सर्वोच्च देवता', तथा 'समस्त मानव मात्र का राजा' कहकर संबोधित किया है।

बेबीलोन के मिथकों के अनुसार सृष्टि के आरंभ में केवल जल था—मीठा जल और खारा जल। खारे जल की प्रतीक और शासिका मातृदेवी तियामत थी और मीठे जल का प्रतीक और शासक पितृदेव आप्सू था। आप्सू और तियामत आदि देव हैं तथा पति-पत्नी भी। उनका एक बेटा था—मुम्मू, जो जल पर फैले हुए कुहरे में निवास करता था। बाद में आप्सू और तियामत ने एक अन्य बेटे अन्शर और बेटी—किशर को जन्म दिया। अन्शर ने अपनी बहन किशर के साथ विवाह कर लिया और उन्होंने एक पुत्र अनु तथा बेटी निनटू को जन्म दिया। अनु ने अपनी बहन निनटू के साथ विवाह कर लिया और उन्होंने दो बेटों—वायु के देवता एनलिल तथा ईया और दो बेटियों—प्रेम और युद्ध की देवी इश्तर तथा दमकिना को जन्म दिया। ईया ने अपनी बहन दमकिना के साथ विवाह कर लिया और वह मरडूक का पिता बना। बाद में मातृदेवी तियामत ने एक अन्य पुत्र किंगु को जन्म दिया तथा ग्यारह दैत्यों का निर्माण भी किया—सांप, अजगर, स्फिन्क्स, शेर, पालतू कुत्ता, बिच्छू-मानव, तीन महाबली झंझावत, अजगर-मक्खी और सेन्टोर।

आप्सू षड्यंत्र

एक लंबे समय से तियामत, आप्सू और मुम्मू के सिवाय सृष्टि में और कोई न था, अतः उन्हें शांतिपूर्वक जीने का अभ्यास पड़ गया था। उनकी इस शांति को उनकी संतान, पौत्र-पौत्रियों तथा प्रपौत्र-प्रपौत्रियों ने भंग कर दिया। ये देवता

बहुत ऊधम और शोर मचाते थे। तियामत उन पर किसी भी प्रकार नियंत्रण नहीं कर पायी। अतः उसने अपने पति आप्सू से कहा कि जरा तुम ही इन लोगों से बात करके इन्हें समझाओ कि ये इतना उत्पात न मचाया करें। आप्सू ने उन्हें समझाया, लेकिन उन्होंने आप्सू की बात की भी अवहेलना कर दी। इस पर आप्सू क्रोधित हो उठा और उसने अपने बच्चों तथा उनके परिवारों को नष्ट करने का निश्चय कर लिया। तियामत उसके इस निर्णय से सहमत न थी। उसने आप्सू को बच्चों के प्रति सहनशीलता का व्यवहार करने की सलाह दी। परंतु मुम्मू ने आप्सू का समर्थन किया तथा उन दोनों ने मिलकर देवताओं को नष्ट करने का षड्यंत्र रच डाला। मुम्मू ने आप्सू से कहा कि तुम अपनी योजना को क्रियान्वित करो क्योंकि तुम्हारी संतान उच्छृंखल हो गई है और वह तुम्हारी सत्ता के प्रति तनिक-सा भी आदर प्रदर्शित नहीं करती। इतना ही नहीं उसके व्यवहार से तुम्हारी शांति भी नष्ट हो गयी है।

देवताओं में से ईया के पास परामानसिक और चमत्कारी शक्तियां थी, जिनके द्वारा उसने देव-परिवार के आदि-पुरुष आप्सू और धुंध तथा कोहरे के देवता मुम्मू के षड्यंत्र को भांप लिया। ईया ने उस षड्यंत्र की सूचना समस्त देव-परिवार को दी, जिसे सुनकर सब देवता आतंकित हो उठे। ईया देवताओं में सबसे अधिक बुद्धिमान और शक्तिशाली था। अतः उसने आप्सू-मुम्मू-षड्यंत्र को विफल करने का निश्चय कर लिया। ईया ने जादू के बल पर एक सुरक्षा-वृत्त तैयार किया और देवताओं को उसके भीतर रहने के लिए कहा। अब उसने अपनी चमत्कारपूर्ण दृष्टि आप्सू पर डाली, सम्मोहन-शक्ति के बल पर उसे गहरी नींद में सुला दिया तथा मुम्मू की सारी शक्ति छीन ली।

इसके बाद ईया ने आप्सू को जंजीरों से जकड़ दिया। उसने आप्सू का राजमुकुट और उसकी आभा का हरण करके उन्हें अपने सिर पर धारण कर लिया। राजमुकुट धारण करने के बाद ईया ने आप्सू की हत्या कर दी और आप्सू की नाक में नकेल डालकर उसे पशु की तरह अपने पीछे-पीछे खींचने लगा। ईया ने तियामत को नहीं छेड़ा। वह खारे जल पर पहले की भांति शासन करती रही। ईया ने आप्सू की लाश और मीठे जल पर अपने शासन की नींव रखी। उसने अपनी बहन दमकिना के संग विवाह कर लिया और आनंदपूर्वक रहने लगा। कुछ समय पश्चात् दमकिना की कोख से ईया के पुत्र मरडूक का जन्म हुआ। मरडूक जन्म के समय ही भरापूरा जवान और देवताओं की तीनों पीढ़ियों में सबसे अधिक बुद्धिमान तथा योग्य था। मरडूक के मस्तक पर और सिर के पीछे कुल मिलाकर चार आंखें थीं। उसके कान भी चार थे, जो चारों दिशाओं में से किसी में भी होने वाली ध्वनि को तुरंत सुन सकते थे। चार आंखों के बल पर वह हर दिशा में होने वाली घटनाओं को देख सकता था। मरडूक जब होंठ हिलाता तो उसके मुख से अग्नि की लपट निकलती थी। वह असाधारण रूप से लंबा था और उसके शरीर के अंग भारी तथा मजबूत थे।

तियामत से युद्ध करते हुए मरडूक

मरडूक को सूर्य देवता का अवतार माना जाता था। उसके सिर से दस सूर्यों जैसी आभा फूटती थी। उसे देखकर उसके दादा अनु ने निश्चय किया कि अब तियामत तथा उसके दैत्य-पुत्र किंगु को नष्ट करने का समय आ गया है। अतः अनु ने चारो दिशाओं में प्रवाहित होने वाले चार शक्तिशाली झंझावात उत्पन्न किये, जिन्होंने किंगु और खारे जल की सम्राज्ञी तियामत की शांति नष्ट कर दी। किंगु ने तियामत को भड़काया कि उसे अपने पति की हत्या का बदला लेने के लिए देवताओं को नष्ट कर डालना चाहिए। तियामत को यह विचार बहुत पसंद आया। उसने तुरंत ग्यारह दैत्यों की रचना कर डाली और उनकी काया को घातक विष से भर दिया। तियामत ने अपनी इस सेना का सेनापति किंगु को नियुक्त किया। अब तियामत की सेना देवताओं को नष्ट करने पर उतारू हो गयी। ये देवता और कोई नहीं तियामत की ही संतान थे, जो उसके और उसके पति के प्रति बागी हो गये थे।

देवताओं का नेतृत्व

ईया ने अपनी परामानसिक शक्तियों द्वारा यह जान लिया कि तियामत देवताओं को नष्ट करनें की योजना बना रही है और वह तुरंत अपने पितामह अन्शर के पास जाकर बोला कि देवताओं पर मुसीबत का पहाड़ टूटने वाला है। अन्शर ने सोचा कि ईया तियामत की दैत्य सेना को नष्ट करने में पूर्णतया समर्थ है। अतः उसने देवताओं की ओर से संघर्ष का नेतृत्व ईया को सौंप दिया। परंतु जब

ईया ने तियामत की दैत्य सेना का सर्वेक्षण किया तो उसका हृदय डूबने-उतराने लगा और उसने अन्शर से कहा कि तियामत की सेना पर उसका जादू नहीं चलेगा।

इसके बाद अन्शर की निगाह अपने बेटे अनु पर गयी और उसने सोचा कि किंगु की सेना को नष्ट करने में अनु पूरी तरह समर्थ रहेगा। मगर अनु ने भी यही महसूस किया कि वह दैत्य सेना के विरुद्ध युद्ध में नहीं जीत पायेगा। यह सुनकर पहले तो अन्शर बहुत निराश हुआ परंतु अगले ही क्षण उसका चेहरा दमक उठा और उसने अपने पोते ईया से कहा कि तुम अपने बेटे को मेरे पास लाओ। उसे यह विश्वास था कि ईया का बेटा मरडूक तियामत तथा किंगु के सेनापतित्व में संगठित दैत्य सेना को नष्ट करने में पूर्णतया सफल रहेगा।

थोड़ी देर बाद मरडूक अपने प्रपितामह अन्शर के सामने जा पहुंचा और उसने अन्शर को विश्वास दिलाया कि वह उसके आदेश का अक्षरशः पालन करेगा और तियामत तथा उसके दैत्यों को पूरी तरह नष्ट कर देगा। मरडूक के ये शब्द सुनकर अन्शर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसे आशीर्वाद दिया तथा अपनी शुभकामनाएं प्रदान कीं।

वास्तव में मरडूक एक बहुत बुद्धिमान देवता था। उसने इस अवसर का भी पूरा-पूरा लाभ उठाया और देवताओं के साथ सौदा करने का निश्चय करके देवसभा के अध्यक्ष अन्शर से यह वचन मांगा कि यदि मरडूक तियामत पर विजय प्राप्त करने और देवताओं की जान बचाने में सफल रहा तो देवसभा उसे अपना मुखिया नियुक्त करेगी। यही नहीं उसके बाद देवताओं को मरडूक का प्रत्येक आदेश भी मानना होगा, उसके द्वारा रची सृष्टि नष्ट नहीं की जायेगी और उसकी आज्ञाओं का पालन किया जायेगा।

यह सुनकर अन्शर तनिक भी नहीं हिचका। उसने देवसभा बुलाने के आदेश तुरंत जारी कर दिये और देवताओं को कहलवा दिया कि सभा बुलाने का प्रयोजन मरडूक को देवताओं का राजा घोषित करना है। समस्त देवता इकट्ठे हो गये। पहले तो उन्होंने रोटी और मदिरा का आनंद लिया और उसके बाद मरडूक को उस राजसिंहासन पर बिठा दिया, जिसका निर्माण उन्होंने स्वयं किया था। इस प्रकार देवताओं ने मरडूक को सर्वोच्च देवता घोषित कर दिया। उन्होंने वचन दिया कि वे मरडूक की प्रत्येक आज्ञा का पालन करेंगे और मरडूक को समूची सृष्टि का राजा मानेंगे। मरडूक को अपनी प्रजा के नाश, निर्माण और उसके भाग्य का फैसला करने का पूरा अधिकार दे दिया गया। देवताओं ने मरडूक को राजसी वस्त्र, राजदंड और उत्तम शस्त्र प्रदान किये। वरिष्ठ देवताओं ने मरडूक को सलाह दी कि वह अपने शत्रुओं में से उन लोगों के प्राणों की रक्षा करे, जो उस पर आस्था और अपना विश्वास प्रकट करें, अर्थात् वह शत्रुओं की अंधाधुंध हत्या न करे।

देवताओं ने मरडूक को जो शस्त्र दिये, उन्हें उसने स्वीकार कर लिया परंतु वह जानता था कि वे शस्त्र तियामत के विषैले जीवों का नाश करने में बहुत सहायक नहीं रहेंगे, अतः उसने अपने लिए एक विराट धनुष और एक तीर का

निर्माण किया। उसने धनुष को कंधे पर लटकाया तथा अपनी गदा के साथ तियामत को बंदी बनाने के लिए जाल तथा विष के प्रभाव को नष्ट करने के लिए एक जड़ी-बूटी भी अपने हाथों में ले ली। जड़ी-बूटी उसने इसलिए ली थी क्योंकि उसे पता था कि तियामत द्वारा उत्पन्न किये गये सांप, अजगर तथा अन्य विषैले दैत्य संघर्ष के दौरान निश्चय ही उसके शरीर में अपना विष उड़ेलने की चेष्टा करेंगे, जिसे निष्प्रभाव करना युद्ध जीतने के लिए अनिवार्य था। यह एक प्रतिरक्षात्मक उपाय था।

इसके पश्चात् मरडूक ने सात तूफानी आंधियों का आह्वान किया, जिन्होंने खारे जल को मथ डाला और तियामत को क्रुद्ध कर दिया। उसके आदेश पर महाबली वर्षा के तूफान ने चारों ओर बाढ़ उत्पन्न कर दी, जिसके कारण समुद्र जल से भर गया। अब क्रुद्ध तियामत मरडूक को नष्ट करने के लिए उसके सामने जा पहुंची। मरडूक ने उसे इस बात के लिए बहुत भला-बुरा कहा कि वह अपनी ही संतान के विरुद्ध षड्यंत्र रच रही थी और उसने समस्त नियमों का उल्लंघन करके किंगु को सृष्टि का सर्वोच्च देवता घोषित कर दिया था। मरडूक ने तियामत को अपने साथ अकेले युद्ध के लिए ललकारा। तियामत सहमत हो गयी और आगे बढ़ी। मरडूक ने तुरंत उसके चारों ओर जाल फैला दिया और जैसे ही तियामत ने मरडूक को निगलने के लिए मुंह खोला, वैसे ही मरडूक के आदेश पर भीषण आंधी उसके भीतर प्रवेश कर गयी और उसने उसके शरीर को फुला दिया। अब मरडूक ने अपना धनुष संभाला तथा तियामत के पेट पर एक तीर छोड़ा जो उसके हृदय को बेधता हुआ चला गया और तियामत तुरंत मर गयी।

मरडूक निर्भयतापूर्वक तियामत के शव पर खड़ा हो गया और जब तियामत के दैत्य तियामत को मरा हुआ देखकर इधर-उधर भागने लगे तब मरडूक ने उन्हें पकड़कर अपने जाल में फंसा लिया। उसने तियामत के ग्यारह दैत्यों को कुचल डाला तथा किंगु को बंदी बनाकर उससे सत्ता के सभी प्रतीक छीन लिये।

विश्व की रचना

शत्रु को पराजित करने के बाद मरडूक सृष्टि की रचना में व्यस्त हो गया। तियामत के पैरों पर खड़े होकर उसने तियामत की खोपड़ी कुचल दी और तियामत के शरीर को बीच में से चीर डाला। ऊपर के आधे भाग से उसने आकाश की और नीचे के भाग से पृथ्वी की रचना कर डाली। उसने तियामत का सिर पृथ्वी पर जमाकर पर्वत बनाया और उसकी आंखों से मेसोपोटामिया की दोनों नदियां—दजला और फरात प्रवाहित कीं।

मरडूक ने अपने पितामह अनु को स्वर्ग का, पिता ईया को पृथ्वी का और एनलिल को पृथ्वी और आकाश के बीच बहने वाली हवा का शासक नियुक्त किया। उसने सिन अर्थात् चंद्रमा का निर्माण किया और उसको रात में प्रकाश करने की जिम्मेदारी सौंपी तथा सिन के बेटे शम्स अर्थात् सूर्य को दिन के समय प्रकाश फैलाने का काम दिया।
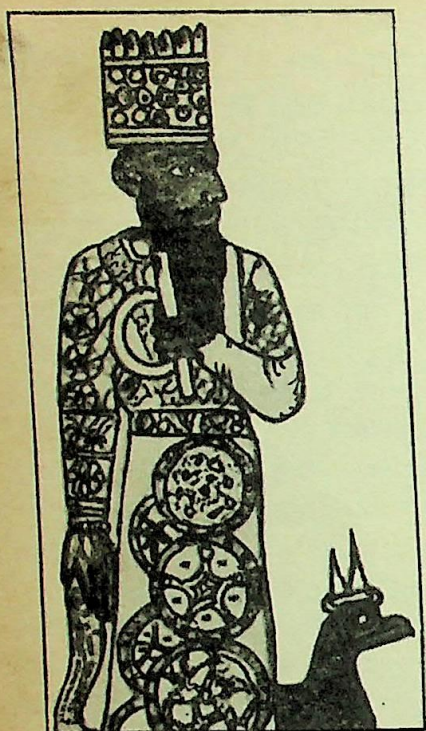
मरडूक, जिसने अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से देवताओं का मुखिया बनने में सफलता प्राप्त की।

इसके बाद उसने पृथ्वी को सुदृढ़ बनाकर उस पर एक विशाल मंदिर का निर्माण कराया, जिससे कि पृथ्वी की यात्रा पर आने वाले देवता उसमें ठहर सकें और उनका आदर-सत्कार हो सके। मरडूक ने घोषणा की कि उसके द्वारा बनवाये गये मंदिर का नाम बेबीलोन अर्थात् 'महान देवताओं का घर' होगा। मंदिर का संरक्षण ईया को सौंप दिया गया। अब समस्या यह उठी कि देवताओं को भोग कौन लगायेगा और उनकी सेवा कौन करेगा? इस समस्या को सुलझाने के लिए मरडूक ने घोषणा की कि वह रक्त का संग्रह और अस्थियों का निर्माण करेगा, जिनसे वह एक जंगली प्राणी की रचना करके उसका नाम मनुष्य रखेगा। मनुष्य के जीवन का लक्ष्य देवताओं की सेवा करना होगा।

ईया के आदेश पर यह निश्चय किया गया कि तियामत को भड़काने वाले देवता की हत्या करके उसके रक्त से मनुष्यों का निर्माण किया जायेगा। देवसभा ने सर्वसम्मति से घोषणा कर दी कि विद्रोह भड़काने का काम किंगु ने किया था। उन्होंने किंगु को बांधकर मरडूक तथा ईया के सामने पेश किया। ईया ने किंगु की हत्या कर दी तथा उसके रक्त से मनुष्यों का निर्माण किया। इसके बाद ईया ने मनुष्यों से कहा कि उनके जीवन का प्रयोजन देवताओं की सेवा करना है।

देवताओं ने अगले दो वर्ष मंदिर के निर्माण पर खर्च किये। मंदिर बन जाने पर उसे मरडूक को समर्पित कर दिया गया। समर्पण-समारोह लगातार कई दिन तक चलता रहा और अंत में मरडूक को हमेशा के लिए बेबीलोन का सम्राट घोषित कर दिया गया। ■■

बेबीलोन के मिथक-2 :प्रलय

बेबीलोन के मिथकों में प्रलय अर्थात् रुष्ट देवताओं द्वारा सुमेर और बेबीलोनिया की भूमि और जनता पर ढाए गये विनाशकारी बाढ़ के संकट का विस्तृत विवरण मिलता है। प्रलय की गाथा को लिखित रूप पहली बार 2100 ईसा पूर्व में दिया गया। मरडूक मिथक में यह संकेत किया गया है कि देवताओं ने मनुष्य जाति का निर्माण अपनी सेवा के लिए किया था। अत: जब उन्होंने यह देखा कि मनुष्य देवताओं के प्रति अपने कर्तव्यों के पालन की ओर से उदासीन हो गये हैं तो मनुष्य जाति के प्रति उनका क्रोध और उसे नष्ट करने का निर्णय बहुत स्वाभाविक था परंतु जिन देवताओं ने मनुष्य जाति का अपने हाथों से निर्माण किया था, वे सहज ही उन्हें अपने बच्चों की तरह मानने और उनसे प्यार करने लगे थे। अत: वे इस बात के लिए तैयार न थे कि उनके द्वारा रची गयी सृष्टि को पूर्णतया नष्ट कर दिया जाये। इस मिथक का वर्णन इस प्रकार किया गया है:—

''फरात नदी के किनारे बसा हुआ प्राचीन नगर शुरुप्पक सुमेर की राजधानी था। नगर में देवता और मनुष्य दोनों निवास करते थे—देवता अपने मंदिरों में और मनुष्य अपने घरों में। जब मनुष्य और देवता बूढ़े हो गये, तब देवताओं के शासक एनलिल ने देवसभा की एक बैठक बुलायी और उसने देवताओं के सामने यह शिकायत रखी कि पथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गयी है कि उनकी गिनती भी नहीं की जा सकती तथा वे बहुत शोर मचाते हैं। पृथ्वी पर जंगली भैंसों के झुंड के चीखने जैसा शोर मचा रहता हैं। मनुष्यों की आपा-धापी और भाग-दौड़ ने मेरी नींद हराम कर दी है।''

मनुष्यों के प्रति एनलिल की शिकायत ठीक वैसी ही थी जैसी कि तियामत को अपने बच्चों से थी। आप्सू की भांति एनलिल ने भी यह निश्चय किया कि वह उसे परेशान करने वाली मानव जाति को पूर्णतया नष्ट कर देगा और इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए उसने वर्षा के देवता अदाग को आदेश दिया कि वह दिन-रात पृथ्वी पर मूसलाधार पानी बरसाये और यह सिलसिला तब तक जारी रखे जब तक पूरी पृथ्वी पर्वतों समेत जल में न डूब जाये। उसने अदाग से यह भी कहा कि पृथ्वी पर यह प्रलय चोर की तरह चुपचाप भेजी जाये, जो शुरुप्पक के निवासियों से उनका आहार छीन ले तथा उन्हें डुबाकर मार डाले। देवसभा के सम्मुख रखे गये एनलिल के प्रस्ताव का समर्थन इश्तर देवी ने किया तथा ईया के अतिरिक्त अन्य सभी

देवताओं ने इस प्रस्ताव के साथ सहमति व्यक्त की। ईया यह सोचकर खामोश बैठा रहा कि उसने अपने हाथों से परिश्रमपूर्वक जिस सृष्टि का निर्माण किया है, उस सृष्टि को पूर्णतया नष्ट करना उचित नहीं है। ईया को मनुष्य जाति पर गहरा प्रेम था, अतः उसने पृथ्वी पर जीवन के बीज की रक्षा के लिए एक योजना तैयार की। अपनी दैवी शक्तियों द्वारा वह शुरुप्पक के राजा उत्तानपिश्तिम के सम्मुख प्रकट हो गया और उसने उससे कहा, ''तुम अपने सरकंडे की झोंपड़ी में दीवार के पास खड़े होकर मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें एक गोपनीय कार्य सौंपना चाहता हूं, जिसका पालन तुम्हें मेरे प्रति पूर्ण आस्था और आज्ञाकारितापूर्वक करना होगा।''

उत्तानपिश्तिम सरकंडे की दीवार के पास कान लगाकर खड़ा हो गया और उसने ईया की आवाज सुनी। ईया ने कहा, ''शुरुप्पक शीघ्र ही बहुत भयंकर बाढ़ में आप्लावित होने वाला है, जिससे वह पूर्णतया नष्ट हो जायेगा। देवताओं की सहमति से यह आदेश एनलिल ने दिया है।'' ईया ने उत्तानपिश्तिम से कहा कि वह अपने जीवन की रक्षा करे तथा उसने इसका मार्ग भी सुझाया। उसने राजा से कहा कि ''तुम अपना घर उखाड़कर उसकी लकड़ी से मंजूषा के आकार की एक विशाल नौका तैयार करो, जिसकी लंबाई और चौड़ाई एक समान हो। यह नौका ठोस इमारती लकड़ी की बनायी जानी चाहिए, जिससे कि उसमें शम्स अर्थात् सूर्य की किरणें प्रवेश न कर सकें। इसके अतिरिक्त उसके सूराख और दरारों को इतनी अच्छी तरह भर दिया जाना चाहिए कि उनमें से होकर पानी नौका में प्रवेश न कर सके।'' ईया ने उत्तानपिश्तिम से कहा कि ''तुम अपनी पत्नी, अपने संबंधियों, नगर के दस्तकारों, सब प्रकार के अनाज, समस्त जीवित वस्तुओं के युगल, पशुओं और पक्षियों को लेकर नौका पर सवार हो जाना और मेरा संकेत मिलने पर इसका द्वार पूरी तरह बंद कर लेना।'' राजा की प्रार्थना पर ईया ने जमीन पर नौका का रेखाचित्र भी तैयार कर दिया।

यह सुनकर राजा ने ईया देवता से पूछा, ''जब शुरुप्पक के लोग मझसे यह पूछेंगे कि मैं यह क्या कर रहा हूं तो मैं क्या जवाब दूंगा?'' ईया ने उत्तर दिया, ''उनसे कहना कि मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि एनलिल मुझसे इतनी घृणा करता है कि मैं अब तुम्हारे नगर में और अधिक समय नहीं रह सकता, इतना ही नहीं मैं एनलिल देवता के राज्य में कहीं भी पांव नहीं धर सकता। अतः मैं गहरे समुद्र में जाकर अपने स्वामी ईया के साथ रहूंगा। लेकिन मुझे यह भी मालूम हुआ है कि एनलिल देवता तुम लोगों पर समृद्धि की वर्षा करने वाला है। एक शाम तूफान के बाद तुम्हें असाधारण पक्षी और मछलियां मिलेंगी और तुम्हारी भूमि पर समृद्ध फसलें उगेंगी।''

शुरुप्पक के दस्तकारों ने पूरे पांच दिन लगाकर उत्तानपिश्तिम की विशाल नौका तैयार कर दी। वह 200 फुट लंबी, 200 फुट चौड़ी और 200 फुट ऊंची थी तथा उसके भीतर लगभग एक एकड़ स्थान था। नौका के भीतर राजा ने लकड़ी का सात मंजिला भवन तैयार कराया और प्रत्येक मंजिल को नौ खंडों में बांटा। छठे
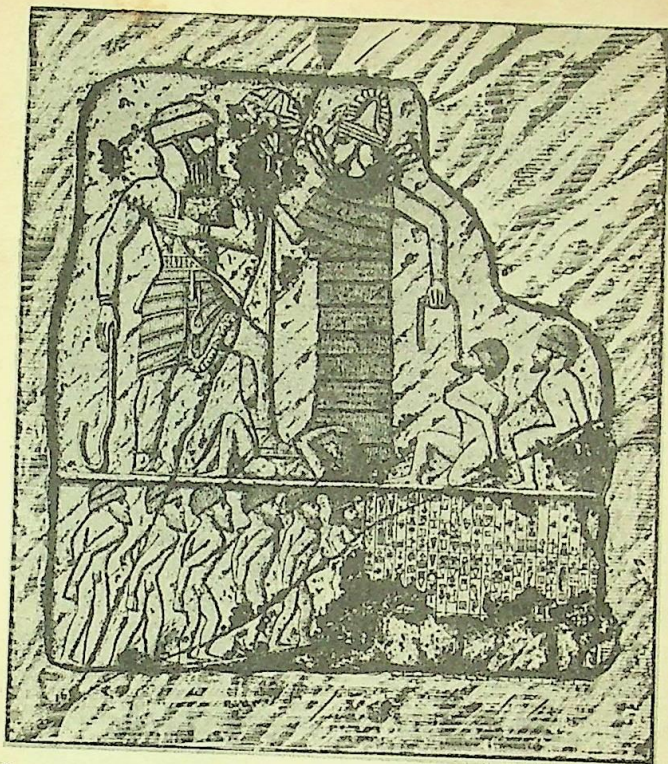
प्रलय के जल पर उत्तानपिश्तिम का जहाज और एनलिल (ऊपर बायें) इश्तर (दायें) और उस पर सवार लोग (नीचे)

दिन नौका के प्रत्येक छेद और दरार को सावधानीपूर्वक बंद कर दिया गया और सातवें दिन उसे फ़रात नदी के जल में उतारा गया। अब राजा अपने परिवार, संबंधियों, दस्तकारों, अन्य प्राणियों, समस्त जीवों के जोड़े, घास और अनाज लेकर नौका पर सवार हो गया। अदाग देवता ने जैसे ही भीषण तूफानी बादलों से आकाश को ढंक लिया, वैसे ही शम्स के संकेत पर राजा ने नौका का द्वार बंद कर लिया। उसके बाद नौका को प्रलय के जल में उमड़ते तूफान की दया पर भटकने के लिए छोड़ दिया गया।

समूची सृष्टि अंधकार में डूब गयी तथा उमड़ते हुए जल ने शुरुप्पक की जनता और समस्त जीवों को आप्लावित करके नष्ट कर दिया। देवी इश्तर ने जिस समय पृथ्वी पर सर्वनाश का यह दृश्य देखा तो वह चिल्ला उठी और उसे इस बात का पछतावा होने लगा कि स्वयं उसने जिस सृष्टि का निर्माण किया था और जिस पर उसे अपार प्रेम था, उसके विनाश के प्रस्ताव पर उसने एनलिल का समर्थन क्यों किया? यह पछतावा केवल इश्तर के मन में न था। विनाश की भीषणता देखकर एनलिल के अतिरिक्त सभी देवताओं ने यह महसूस किया कि विनाश के प्रस्ताव का समर्थन करके उन्होंने भारी भूल की है। वे सभी इश्तर के साथ मिलकर अपनी भूल पर रोने लगे। लगातार सात दिन और सात रात प्रलय मची रही। उत्तानपिश्तिम की विशाल नौका उमड़ते हुए बाढ़ के जल पर तूफानी

हवाओं से भटकती और हिचकोले खाती रही। आठवें दिन बाढ़ लाने वाला दक्षिण पवन धीमा पड़ गया और अशांत जल शांत होने लगा। सूर्य एक बार फिर तेजी से चमक उठा और उसके प्रकाश में देवताओं ने भीषण विनाश का दृश्य पूरी तरह देखा। उत्तापिश्तिम की नौका जल पर स्थिर हो गयी और राजा को जब यह विश्वास हो गया कि उग्र तूफान अब थमने वाला है तो उसने सातवीं मंजिल की एक खिड़की खोलकर बाहर झांका, दूर-दूर तक उसे कहीं भी भूमि का तट दिखायी नहीं दिया। बाढ़ के जल की एक विराट परत के नीचे पृथ्वी पूरी तरह डूबी हुई थी। चारों ओर कहीं भी जीवन का कोई लक्षण दिखायी नहीं दिया। जीवित प्राणी केवल उसकी नौका पर ही थे।

राजा के चेहरे पर जैसे ही सूर्य की प्रथम किरण पड़ी, वह विराट शक्ति के पुंज सूर्य के सम्मुख श्रद्धापूर्वक झुक गया। उसने सूर्य और अन्य देवताओं को प्रणाम किया। उसने अपनी नौका पर जिन पशुओं को शरण प्रदान की थी, उनमें से एक बैल और एक भेड़ को देवताओं के लिए बलि चढ़ाया। उत्तानपिश्तिम पृथ्वी पर जीवन के संपूर्ण विनाश के दृश्य से अत्यंत दुःखी हो गया और बैठकर रोने लगा। चारों ओर फैले जल में उसे इस बात का ज्ञान नहीं हो सका कि वह उस समय किस स्थान पर है। सभी पर्वतों की चोटियां पूरी तरह जल में डूबी हुई थीं। उसने खिड़की बंद कर ली और अगले बारह दिन तक नौका को जल पर तैरने दिया। बारहवें दिन उसने खिड़की खोली, तब उसने देखा कि उसकी नौका निसिर पर्वत की चोटी से अटकी हुई खड़ी है। अगले सात दिन नौका वहीं खडी रही, मानो उसे पहाड़ की चोटी से बांध दिया गया हो। सातवें दिन राजा ने एक कबूतर आकाश में उड़ाया। कबूतर थोड़ी देर तक उड़ता रहा लेकिन जब उसे बैठने और आराम करने का कोई अन्य स्थान दिखायी नहीं दिया तो वह नौका पर लौट आया।

कुछ समय बाद उत्तानपिश्तिम ने निसिर पर्वत की चोटी पर देवताओं के लिए भोजन और पेय पदार्थों की भेंट चढ़ाई। भेंट की गंध से आकर्षित होकर सभी देवता पलभर में राजा के चारों ओर एकत्र हो गये। राजा ने अनु और एनलिल देवताओं के सम्मुख साष्टांग प्रणाम किया। इश्तर देवी यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुई कि राजा ने उसकी सृष्टि में से कुछ जीवों को बचा लिया है। वह मरने वालों का शोक मनाती रही और एनलिल द्वारा किये गये विनाश के लिए उसे कोसती रही। इसके विपरीत एनलिल यह देखकर क्रुद्ध हो उठा कि नौका के भीतर राजा और अन्य प्राणी सुरक्षित हैं। उसने तुरंत देवताओं से पूछा कि "तुममें से किस देवता ने राजा और उन सब लोगों को बचने की अनुमति दी, जो नौका पर हैं?" एनलिल को इस बात पर बहुत झुंझलाहट आयी कि जब उसने यह स्पष्ट आदेश दे दिया था कि प्रलय में पृथ्वी पर जीवन का एक भी चिह्न शेष नहीं रहना चाहिए तब उत्तानपिश्तिम और उसकी नौका पर सवार प्राणी तथा पदार्थ किस प्रकार बच गये?

एनलिल के भड़कने पर ईया आगे बढ़ा और उसने एनलिल से कहा कि बाढ़
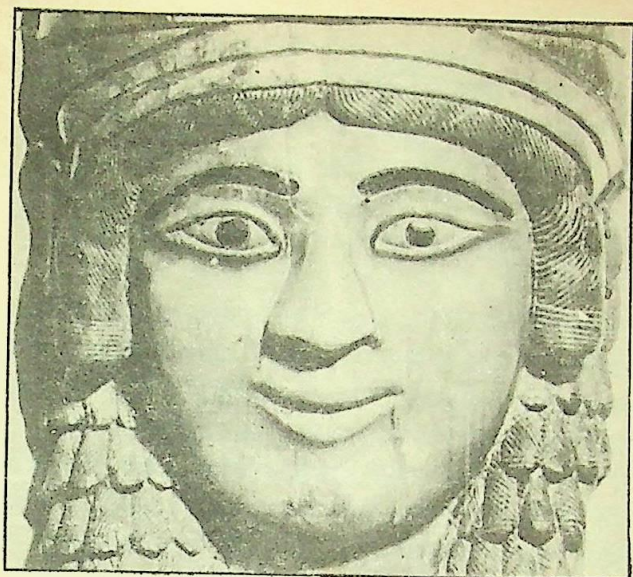
देवी इश्तर, जिसे स्वनिर्मित सृष्टि को नष्ट करने पर बाद में बेहद पछतावा हुआ।

का प्रयोजन पापियों और अपराधियों को दंड देना था, परंतु दड का अर्थ यह नहीं होता कि अविवेकपूर्वक संपूर्ण विनाश कर दिया जाये। ईया ने एनलिल को यह भी बताया कि उत्तानपिश्तिम के बच निकलने के पीछे उनका हाथ नहीं था। उसने कहा कि ''उत्तानपिश्तिम ने एक स्वप्न देखा था, जिसमें उसे प्रलय के खतरे की चेतावनी दी गयी थी और उसे यह भी बताया गया था कि उससे कैसे बचा और जीवित रहा जा सकता है।'' यह सुनकर एनलिल ने सोचा कि निश्चय ही उत्तानपिश्तिम की आत्मा शुद्ध रही होगी, तभी उसे ऐसा स्वप्न आया और वह भीषण प्रलय से बच निकला। अतः उसने राजा और उसकी पत्नी का हाथ पकड़ा तथा उन्हें नौका पर ले जाकर आशीर्वाद दिया। एनलिल ने उन्हें अमरता प्रदान कर दी और मनुष्य जाति, पशुओं तथा पौधों के बीज को सुरक्षा प्रदान करने के लिए उसकी प्रशंसा की।

एनलिल ने उत्तानपिश्तिम को शुरुप्पक में फिर से अपना राज स्थापित करने की अनुमति प्रदान कर दी और उससे कहा कि ''तुमने अपनी नौका पर जिन मनुष्यों की रक्षा की है, उन्हें फिर से शुरुप्पक में बसाओ और इस पृथ्वी को फिर से जीवन की चहल-पहल प्रदान करो।'' यह सुनकर उत्तानपिश्तिम ने देवताओं को प्रणाम किया। एक न्यायप्रिय तथा अपनी भूमि और प्रजा को प्यार करने वाले उदार राजा के कारण पृथ्वी पर एक बार फिर से जीवन लौट आया। ■■

चीन के मिथक-1: चांग ताओ-लिंग

चांग ताओ-लिंग चीनी मिथकों का एक प्रमुख पात्र है। ऐसा माना जाता है कि वह चीन के दार्शनिक-संत-कवि लाओ-त्जे का शिष्य था और लाओ-त्जे ने उसे समाधि में एक रहस्यवादी ग्रंथ प्रदान किया था, जिसके निर्देशों के अनुसार चांग ताओ-लिंग ने जीवनदायी अमृत तैयार करने में सफलता प्राप्त कर ली थी। एक दिन अमृत तैयार करते समय उसके सामने एक प्रेतात्मा प्रकट हुई और उसने चांग ताओ-लिंग से कहा कि पो-सुंग नामक पर्वत पर पत्थरों से बने एक घर में कुछ प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित रखे हैं, जिनमें स्वर्गारोहण का उपाय विस्तार से समझाया गया है।

ताओ-लिंग ने उन ग्रंथों को खोज लिया और उनमें बताये गये उपायों के आधार पर आकाश में उड़ने, दूर की ध्वनियां सुनने तथा अपना भौतिक शरीर पृथ्वी पर छोड़कर जगत और स्वर्ग, सब लोगों में विचरण करने और उसके बाद जब चाहे तब पृथ्वी पर अपने शरीर में लौटने की शक्तियां प्राप्त कर लीं। अपनी इस अतिमानुषी साधन में उसे एक देवी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ था और उसने दैत्यों तथा आंधी और बिजली जैसी प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर ली थी।

एक दिन उसने अपने शिष्यों से कहा कि सप्तमी को पूर्व दिशा से एक व्यक्ति उसके पास आयेगा और सचमुच निश्चित तिथि को चाओ शंग नामक व्यक्ति पूर्व दिशा से चलकर उसके पास आ पहुंचा। चाओ शंग आगे चलकर चांग ताओ-लिंग का प्रमुख शिष्य बना। चाओ शंग के आने के बाद चांग ताओ-लिंग अपने शिष्यों को लेकर यून-टाई पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी पर चला गया, जिससे कुछ नीचे आड़ू का एक पेड़ था। चांग ने अपने शिष्यों से कहा कि "तुममें से जो भी इस पेड़ के फल तोड़कर लायेगा, उसे मैं एक मंत्र दूंगा।" चाओ शंग के अतिरिक्त यह दुस्साहसपूर्ण कार्य और कोई न कर सका। चाओ शंग पेड़ पर पहुंचने में सफल हो गया। उसने फल तोड़े और एक-एक फल ऊपर की ओर चांग ताओ-लिंग के पास फेंकता गया, मगर पहाड़ की चोटी पर वापस चढ़ने में उसे कठिनाई महसूस हुई। वह चोटी से तीस फीट नीचे था। चांग ताओ-लिंग ने अपनी बांह बढ़ाकर जब चाओ शंग को ऊपर उठाया तो चांग ताओ-लिंग के शिष्य अपने गुरु की यह चमत्कारपूर्ण शक्ति देखकर उसके सामने नतमस्तक हो गये।

एक दिन चांग ताओ-लिंग अपने एक शिष्य वांग छांग के साथ हो-मिंगशान पर्वत पर बैठा था कि उसे सफेद प्रकाश की एक रेखा दिखलाई पड़ी। उसने वांग छांग को वह प्रकाश-रेखा दिखाई और उससे कहा कि "यह प्रकाश दूरवर्ती यांग शान पर्वत की चोटी से आ रहा है, जहां कुछ दुष्ट प्रेतात्माएं निवास करती हैं। वह वांग को साथ लेकर यांग शान पहाड़ी तक पैदल चल कर गया, जहां उसे बारह स्त्रियों की दुष्ट प्रेतात्माएं मिलीं। चांग ने उनसे पूछा कि सफेद प्रकाश कहा से आ रहा है। प्रेतात्माओं ने उत्तर दिया कि वह सफेद प्रकाश ब्रह्मांड का नारीतत्व अर्थात् 'यिन' के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। इसके बाद चांग ताओ-लिंग को ऐसा लगा कि वह उन दुष्ट प्रेतात्माओं के साथ जहां खड़ा है, उसके समीप ही कहीं खारा पानी है। उसने उन प्रेतात्माओं से खारे जल के स्रोत का पता पूछा। उन्होंने चांग ताओ-लिंग के सामने की ओर एक तालाब की ओर इशारा किया और बताया कि उसमें एक विषैला अजगर दैत्य निवास करता है। चांग ने उस अजगर को तालाब से निकालने की भरसक चेष्टा की परंतु पहले प्रयास में वह विफल हो गया। तत्पश्चात् उसने जादू द्वारा सुनहरे पंखों वाले अमर पक्षी का आह्वान करके उसे तालाब के ऊपर वायु में उछाला। अजगर दैत्य यह देखकर डर गया और तालाब क्षण भर में सूख गया। चांग ताओ-लिंग ने अजगर की हत्या नहीं की वरन् उसे भाग जाने दिया। उसके बाद उसने अपनी तलवार म्यान में से निकाली और उसे भूमि में गाड़ दिया। जिस स्थान पर भूमि में तलवार गाड़ी गयी थी, उस स्थान पर खारे पानी का एक गहरा कुआं बन गया।

यह देखकर दुष्ट प्रेतात्माएं चांग के सम्मुख नतमस्तक हो गयीं और उनमें से प्रत्येक ने चांग को मूंगे की एक-एक अंगूठी भेंट की। चांग ताओ-लिंग ने सभी बारह अंगूठियों को अपनी मुट्ठी में रखकर उनसे एक बड़ी अंगूठी का निर्माण कर दिया। अंगूठी भेंट करते समय प्रत्येक दुष्ट प्रेतात्मा ने उसकी पत्नी बनने की इच्छा प्रकट की थी। चांग ताओ-लिंग ने बड़ी अंगूठी खारे पानी के कुएं में फेंक कर उन दुष्ट प्रेतात्माओं से कहा, "तुममें से जो स्त्री इस अंगूठी को कुएं से निकाल लायेगी, मैं उसी के संग विवाह कर लूंगा।" एक-एक करके वे सभी कुएं में कूद गयीं, परंतु अंगूठी किसी के हाथ नहीं लगी। उनमें से कोई भी कुएं से नहीं निकल पायी। इस प्रकार चांग ताओ-लिंग ने उन दुष्ट प्रेतात्माओं को नष्ट कर दिया और उन्हें नया नाम प्रदान किया, 'कुएं की आत्माएं।'

इसके पश्चात् चांग ताओ-लिंग उस स्थान से चलने को उद्यत हुआ परंतु तभी एक शिकारी उस स्थान पर जा पहुंचा। चांग ने उससे कहा कि वह अपनी आजीविका कमाने के लिए जीवित प्राणियों की हत्या करने का यह निकृष्ट धंधा छोड़ दे। यह सुनकर शिकारी ने उससे कहा कि यदि वह उसे किसी अन्य धंधे का सुझाव देगा तो वह उसे अपना लेगा और शिकार करना छोड़ देगा। वह शिकारी की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उससे कहा कि वह खारे जल के कुएं से पानी निकालकर नमक बनाने और बेचने का धंधा करे। शिकारी ने चांग ताओ-लिंग का सुझाव मानकर शिकार करना छोड़ दिया।

चांग ताओ लिंग: चीनी मिथको का प्रमुख पात्र

उस क्षेत्र के लोगों को शीघ्र ही यह बोध हो गया कि चांग ताओ-लिंग के वहा आगमन से उनका कितना भारी हित हुआ है। अजगर के भाग जाने से उनके पालतू पशुओं की रक्षा हो गयी, उन्हें दुष्ट प्रेतात्माओं का भय तनिक नहीं रहा और उन्हें घर बैठे नमक प्राप्त होने लगा। शिकारी को भी ऐसा लगा कि उसे चांग ताओ-लिंग के कारण पहले की अपेक्षा अधिक सम्मानपूर्ण धंधा प्राप्त हो गया है। उन सब लोगों ने मिलकर उस लिंग चाउ नामक क्षेत्र को चांग ताओ-लिंग के प्रति समर्पित कर दिया और उसके आगमन की स्मृति में तथा उसके प्रति भेंट चढ़ाने के लिए एक मंदिर का निर्माण किया।

चीन में आज भी चांग ताओ-लिंग का नाम घर-घर में आदरपूर्वक लिया जाता है और वह समूचे देश में महान आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बन गया है। ■■

चीन के मिथक-2: च्यांग त्जू-या

च्यांग त्जू-या चीन के मिथकों में सबसे अधिक लोकप्रिय देव-सेनापति है। उसने आततायी चाऊ वांग और उसके वंश का शासन समाप्त करने के लिए युद्धों का संचालन किया। उसे महान चाऊ राजवंश का संस्थापक माना जाता है। चाऊ वांग के विरुद्ध अंतिम निर्णायक युद्ध ईसा से 1122 वर्ष पूर्व हुआ, जिसके फलस्वरूप चाऊ वांग अपने राजमहल की आग की लपटों में झुलसकर मर गया। इस युद्ध का सेनापतित्व करने के कारण वू वांग ने च्यांग त्जू-या को पिता और परामर्शदाता की पदवी प्रदान की।

च्यांग त्जू-या परम ईश्वर-भक्त और आध्यात्मिक पुरुष था। उसे हमेशा दैवी मार्गदर्शन प्राप्त होता था, जिसके कारण उसके पांव कुमार्ग पर नहीं पड़ते थे। युद्ध के दौरान एक बार वह अपनी आत्मा के रथ पर सवार होकर पवित्र कुनलुन पर्वत पर जा पहुंचा और वहां के प्राकृतिक सौंदर्य में खो गया। वहां से चलकर वह निराकार परमात्मा के महल में पहुंचा, जहां उसे अराजकता में से व्यवस्थित विश्व का निर्माण करने वाले महान् देवता पान-कू के पुत्र और उसके अवतार परम-बुद्ध युआन-शिह के सामने पेश किया गया। युआन-शिह को स्वर्ग में सर्वोच्च देवता तथा वज्र का देवता होने का गौरव प्राप्त था। युआन-शिह ने च्यांग त्जू-या को उन आत्माओं की सूची प्रदान की, जिन्हें वीरता के कारण अमरत्व प्रदान किया गया था और उससे कहा कि वह एक पवित्र दीर्घा का निर्माण करके उस सूची को वहां प्रदर्शित करे। युआन-शिह ने च्यांग त्जू-या को यह चेतावनी भी दी कि यदि रास्ते में कोई उसका नाम लेकर पुकारे तो वह उस पर ध्यान न दे तथा उसकी ओर मुड़कर न देखे।

युआन-शिह देवता था। उसे घटनाओं का पूर्वाभास हो गया था। च्यांग त्जू-या जब कुनलुन से वापस राजधानी के लिए चला तो रास्ते में उसके पुराने सहपाठी शेन कुन-पाओ ने तीन बार उसका नाम लेकर उसे आवाज दी। शेन कुन-पाओ उसे यह समझाने की कोशिश करता रहा कि निराकार ब्रह्म की उपासना की अपेक्षा जादुई कलाएं अधिक श्रेष्ठ होती हैं। उसने उसके सामने अपनी जादुई शक्तियों का बखान किया और उससे कहा कि वह अपने हाथ से अपना सिर काटकर उसे आकाश में उछाल सकता है और वहा से वापस लाकर फिर से अपनी गर्दन पर प्रत्यारोपित करके सामान्य व्यक्ति का रूप ले सकता है।

धन का वृक्ष : चीन में मान्यता है कि समृद्धि का देवता चाओ कुंग-मिंग, जिस पर कृपा करता है, उसके घर में धन का वृक्ष उग आता है।

शेन कुन-पाओ ने च्यांग त्ज़ू-या के सामने अमरत्व की निंदा की और उसे परामर्श दिया कि वह अमर पद प्राप्त करने वालों की सूची फेंक कर उसके साथ शामिल हो जाये। च्यांग त्ज़ू-या इस शर्त पर सूची जलाने के लिए तैयार हो गया कि शेन कुन-पाओ अपनी गर्दन पर से अपना सिर काटकर उसे वापस प्रत्यारोपित करने के जादू को उसके सामने प्रदर्शित करे।

शेन कुन-पाओ ने अपने दाहिने हाथ में तलवार लेकर अपना सिर काटा और उसे अंतरिक्ष में उछाल दिया। यहां तक उसका प्रदर्शन ठीक वैसा ही था, जैसा कि उसने दावा किया था। च्यांग त्ज़ू-या जिस समय से कुनलुन पर्वत से चला था, तभी से दक्षिण ध्रुव का अध्यक्ष देवता और प्राचीन अमरदेव की दृष्टि उस पर लगी हुई थी। उसने च्यांग त्ज़ू-या के सम्मुख शेन कुन-पाओ द्वारा अपना सिर काटने और उछालने की घटना का अतीन्द्रिय दर्शन किया तथा तुरंत ही अपने अमर देवताओं में से एक देवता को सारस पक्षी का रूप धारण करके आकाश में उड़ने और शेन कुन-पाओ का सिर अपनी चोंच में दबाकर लाने का आदेश दिया।
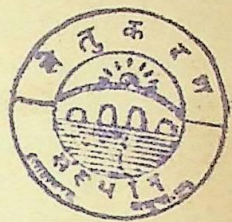
वज्रपात का देवता वेन चुंग, जिसे च्यांग त्जू-या ने पराजित किया।

शेन कुन-पाओ के करतब पर च्यांग त्जू-या चकित रह गया। वह कटे हुए सिर को देखने के लिए आकाश की ओर ताक रहा था कि अचानक उसे ऐसा लगा कि पीछे से उसे कोई खींच रहा है। वह पीछे मुड़ा और यह देखकर चकित रह गया कि प्राचीन अमर देवता ह्सियेन-वेंग उसके पीछे खड़ा है। च्यांग त्जू-या ने ह्सियेन-वेंग से पूछा, "आपने यहां आने का कष्ट क्यों उठाया।" इस पर ह्सियेन-वेंग ने उसे बताया कि "मुझे तुम्हारा पीछा इसलिए करना पड़ा क्योंकि तुमने युआन-शिह के निर्देशों का उल्लंघन किया है और तुमने अमरत्व प्रदान करने वाली आत्माओं की सूची जलाने का वायदा भी कर लिया है। मेरे ही आदेश पर वह सारस शेन कुन-पाओ का सिर अपनी चोंच में दबाकर ले जा रहा है। यह सिर अब उसे नहीं लौटाया जायेगा और उसे मरना होगा क्योंकि यदि उसका सिर पौने दो घंटे के भीतर उसकी गर्दन पर फिर से प्रत्यारोपित नहीं किया गया तो रक्त-संचार थम जायेगा और उसके बाद सिर का प्रत्यारोपण संभव नहीं रहेगा। मैं शेन कुन-पाओ को यह पाठ सिखाना चाहता हूं कि जादू में यह शक्ति नहीं है कि वह मनुष्य की आत्मा को अमरता के स्तर तक ले जा सके।"

यह सुनकर च्यांग त्ज़ू-या अपने मित्र शेन कुन-पाओ के जीवन के बारे में चिंतित हो उठा और उसने ह्स्येन-वेंग से प्रार्थना की कि वह उसके सिर को निश्चित अवधि के भीतर लौटा दे, जिससे कि शेन कुन-पाओ जीवित रह सके। इस बीच शेन कुन-पाओ भी अपने जीवन के बारे में चिंतित होने लगा था। ह्स्येन-वेंग ने च्यांग त्ज़ू-या के अनुरोध पर सारस को संकेत दिया कि वह शेन कुन-पाओ का सिर उसकी गर्दन पर फेंक दे। आकाश से गिरते समय वह सिर उलटा हो गया था, अतः शेन कुन-पाओ ने अपना कान पकड़कर उसे सीधा किया। शेन कुन-पाओ ने आंखें खोल लीं और अपने सामने ह्स्येन-वेंग को देखकर वह लज्जित हो गया। ह्स्येन-वेंग ने उसे उसकी जादूगरी के लिए खूब लताड़ा। शेन कुन-पाओ ने लज्जा से सिर झुका लिया और सिंह पर सवार होकर वहां से चल दिया।

च्यांग त्ज़ू-या ने एक अन्य युद्ध में गर्जन के देवता वेन चुंग को पराजित किया। इस कार्य में उसे अमर आत्माओं का सहयोग मिला। च्यांग त्ज़ू-या स्वयं भी जादू-टोने की विद्या में बहुत कुशल था। एक बार ओ-माई पर्वत पर चाओ कुंग-मिंग नामक एक साधू ने च्यांग त्ज़ू-या के साथ संघर्ष करने का निश्चय कर लिया। मगर च्यांग त्ज़ू-या महान आध्यात्मिक शक्ति के स्वामी चाओ कुंग-मिंग का सामना शस्त्रों से करने को तैयार न था। उसने उसकी घास की प्रतिमा बनवायी, जिस पर उसका नाम लिखा था। उसने इस प्रतिमा के सामने धूप जलाई और बीस दिन तक पूजा करता रहा। इक्कीसवें दिन उसने उस प्रतिमा की आंखों और हृदय को तीरों से बेंध डाला। कुंग-मिंग तुरंत बीमार पड़ गया, बेहोश हो गया और उसकी मृत्यु हो गयी। बाद में च्यांग त्ज़ू-या ने अन्य वीरों की आत्माओं के साथ उसकी आत्मा को भी पाताल से मुक्त करा लिया और जब चाओ कुंग-मिंग की आत्मा को उसके सामने लाया गया तो उसने यह स्वीकार किया कि उसकी हत्या अनुचित रीति से की गयी थी। च्यांग त्ज़ू-या ने चाओ कुंग-मिंग को देवताओं की सरकार में संपत्ति और समृद्धि के मंत्रालय का अध्यक्ष नियुक्त किया।

चीन में समृद्धि के इस देवता की उपासना अभी तक होती है। यह बहु-प्रतिष्ठित देवता जिस पर कृपा करता है, उसके घर में धन का वृक्ष उग आता है, जिसकी शाखाएं हिलाने से धन बरसने लगता है। उसके पास सोने और चांदी से भरा हुआ एक विशाल संदूक है, जो कभी खाली नहीं होता।

देवलोक की सरकार में च्यांग त्ज़ू-या को प्रधानमंत्री बनाया गया। उसने अपने अनुयायियों के लिए अंतरिक्ष में अट्ठाइस तारा-मंडलों का निर्माण किया और उन्हें उन पर बसाया। उसने सम्राट चाऊ की महारानी च्यांग की कोख से उत्पन्न यिन चियाओ को भी देवता का पद प्रदान किया। जन्म के समय यिन चियाओ आकार रहित मांस का लोथड़ा जैसा दिखाई पड़ता था। राजा की बदनाम रखैल ता ची ने जब यिन चियाओ को देखा तो उसने रानी से बदला लेने के लिए राजा से उसकी शिकायत की कि उसने दैत्य को जन्म दिया है। यह सुनते ही राजा ने आदेश
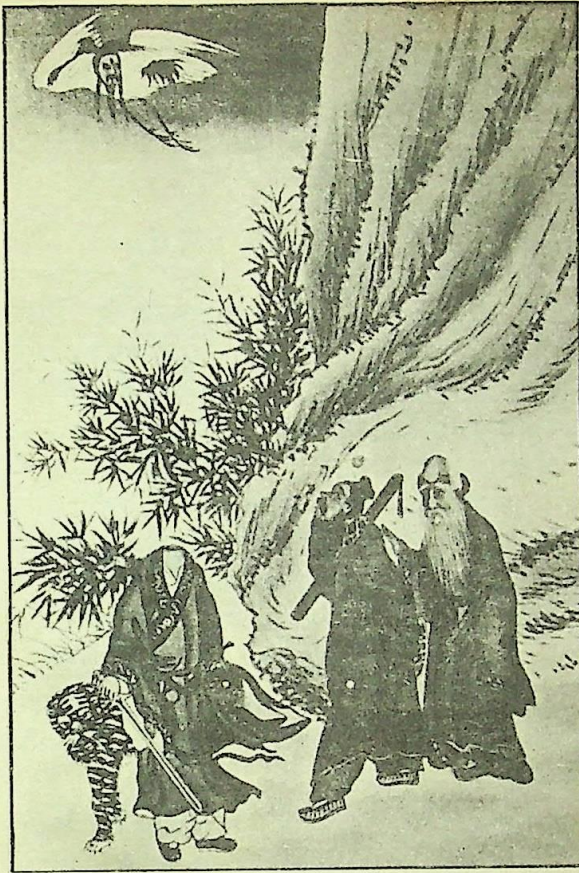
आकाश में उड़ता शेन कुंग-पाओ का सिर और नीचे खड़े हैं—च्यांग त्जू-या और उसके पीछे सियेन वेंग।

दे दिया कि बच्चे को बाहर फेंक दिया जाये और रानी को राजमहल की ऊपरी मंजिल से नीचे गिराकर मार डाला जाये, क्योंकि उसकी कोख से दैत्य का जन्म यह प्रमाणित करता है कि वह राजा के प्रति वफादार नहीं रही तथा उसने किसी दैत्य के साथ प्रेम संबंध स्थापित किये हैं।

च्याग त्जू-या यिन चियाओ से इस कारण प्रसन्न था कि जब शेन चेन-जेन ने उसे सड़क के किनारे से उठाकर पाल-पोसकर बड़ा कर दिया तो यिन चियाओ ने अन्यायी राजा के विरुद्ध संघर्ष तथा ता ची की हत्या के द्वारा अपनी मां की हत्या का बदला लिया। च्यांग त्जू-या उन सब लोगों का बहुत आदर करता रहा है, जो अपने माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हैं।

चीन के देवताओं में च्यांग त्जू-या आज भी एक शक्तिशाली और सम्मानित देवता है। ■■

चीन के मिथक-3: मिआओ शान

प्राचीन काल की बात है। चीन तब अनेक राज्यों में बंटा हुआ था। उसके पश्चिम में भारत से सटे ह्सिंग लिन राज्य में मिआओ चुआंग नामक एक राजा राज करता था। राजा निःसंतान था। राजा की ओर से पचास बौद्ध और ताओ पुरोहितों ने लगातार सात दिन और सात रात पश्चिम के पवित्र पर्वत हुआ शान के परमदेव के सम्मुख प्रार्थना की तथा बहुमूल्य भेंटें चढ़ाईं। आठवें दिन राजा स्वयं अपनी रानी पाओ त.के संग परमदेव के समक्ष उपस्थित हुआ। पुरोहितों ने परमदेव से सिफारिश की कि राजा को पुत्र प्रदान किया जाये। परमदेव ने राजा को संतान देना स्वीकार कर लिया परंतु राजा ने अन्यायपूर्वक दूसरे का राज्य हड़प लिया था तथा असंख्य लोगों की हत्या की थी, अतः वे उसे पुत्र नहीं पुत्रियां देने पर सहमत हो गये। राजा से केवल इतना कहा गया कि वह शीघ्र ही पिता बन जायेगा।

ठीक नौ महीने बाद रानी के गर्भ से एक कन्या ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया—मिआओ छिग। एक साल बाद दूसरी बेटी हुई—मिआओ यिन और तीसरे वर्ष के अंत में तीसरी बेटी—मिआओ शान।

तीसरी बेटी के जन्म का समाचार पाकर राजा के मन में रोष, ग्लानि और हताशा का ज्वार उमड़ आया कि परमदेव ने उसे तीन बेटियां तो दीं, बेटा एक भी नहीं दिया। वह आयु के पचास वर्ष कभी के पूरे कर चुका था, अब उसके मन में पुत्र प्राप्त करने की आशा नहीं रही थी। राजा के विद्वान मंत्री ने उसे ढाढ़स बंधाया कि वह अपने तीन दामादों में से किसी एक को अपना पुत्र मानकर अपना उत्तराधिकारी घोषित कर सकता है।

राजा की तीसरी बेटी मिआओ शान बहुत सदाचारिणी और शील-संपन्न थी तथा बौद्ध धर्म के प्रत्येक व्रत और धर्माचारो का पालन दृढ़ता से करती थी। एक दिन राजमहल के शाश्वत-बसंत उद्यान में खेलते समय मिआओ शान ने अपनी बहनों से कहा, ''धन और सम्मान बसंत की वर्षा अथवा भोर की ओस के तुल्य हैं, बस तनिक-सी देर और फिर छूमंतर! राजा और सम्राट अंत तक वैभव भोगने की कल्पना करते हैं परंतु रोग उन्हें पछाड़कर कब्र में पटक देते हैं और बस सब कुछ समाप्त हो जाता है। कहां हैं आज वे समस्त शक्तिशाली राजवंश, जिनके इशारों पर सारी दुनिया चलती थी? मेरे मन में तो केवल एक कामना है कि किसी पर्वत के शिखर पर आश्रम बनाकर पूर्णत्व-प्राप्ति की साधना करूं। पूर्णता

प्राप्त कर लेने पर मैं स्वर्ग के बादलों पर सवार होकर समूचे ब्रह्मांड की सैर कर सकूंगी और पल भर में पूर्व से पश्चिम में पहुंच जाया करूंगी। मैं अपने माता-पिता को सांसारिक परिताप से बचाकर स्वर्ग ले जाऊंगी। मैं धरती के संत्रस्त और पीड़ित जीवों की रक्षा करूंगी। मैं बुराई करने वाले जीवों का हृदय-परिवर्तन करके उन्हें भलाई में लगाऊंगी। मेरी यही आकांक्षा है।''

मिआओ शान ने जैसे ही अपनी बात पूरी की, राजदरबार की एक महिला ने वहां पहुंचकर यह समाचार दिया, ''राजा ने अपनी दोनों बड़ी बेटियों के लिए वर पसंद कर लिए हैं। विवाह-समारोह कल होगा। जल्दी करो और अपने उपहार तथा वस्त्राभूषण आदि तैयार कर डालो। राजा के आदेश का पालन अनिवार्य है।'' राजा ने मिआओ छिग के लिए राजा के एक मंत्री-पुत्र प्राध्यापक चाओ कुउई को पसंद किया था और मिआओ यिन के लिए सैनिक अधिकारी छाओ यांग को। विवाह-समारोह का आयोजन शानदार ढंग से किया गया था।

मिआओ शान का संकल्प

अब मिआओ शान के विवाह की बारी थी। राजा और रानी उसके लिए एक योग्य वर की तलाश में थे क्योंकि वे मिआओ शान के पति को राजसिंहासन का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। राजा ने उसे बुलाकर उसके सामने अपनी योजना रखकर कहा, ''मेरे जीवन की समस्त आशाएं तुम पर टिकी हैं।''

मिआओ शान ने राजा से नम्रतापूर्वक कहा, ''मैं अपने पिता की अवज्ञा को अपराध मानती हूं। आप मुझे क्षमा करें, संभव है मेरा चिंतन आपके चिंतन से भिन्न हो। मैं विवाह नहीं करना चाहती। मैं पूर्णता और बुद्धपद प्राप्त करना चाहती हूं। मैं वचन देती हूं कि मैं आपके प्रति सदा कृतज्ञ रहूंगी।''

यह सुनकर राजा आग-बबूला हो गया और बोला, ''दुष्ट लड़की, तू यह भूलकर मेरे सामने ज्ञान बघार रही है कि मैं एक महान प्रजा का शासक और एक राज्य का मुखिया हूं? क्या तूने कभी किसी राजकुमारी को साध्वी बनते देखा है? क्या साध्वियों में कोई भली औरत हो सकती है? यह बकवास बंद कर दे और मुझे यह बता कि तू प्राध्यापक और सैनिक अधिकारी में से किससे विवाह करेगी?''

मिआओ शान ने उत्तर दिया, ''शाही प्रतिष्ठा किसे प्रिय नहीं होती? कौन विवाह का सुख नहीं चाहता? फिर भी मैं तो साध्वी ही बनना चाहती हूं। इस जगत की संपदा और प्रतिष्ठा के प्रति मेरे मन में तनिक भी प्रेम नहीं है। मेरी इच्छा है कि मैं अपने मन को अधिकाधिक शुद्ध बनाती जाऊं।''

क्रुद्ध राजा मिआओ शान को अपने सामने से हटाने के लिए तेजी से उसकी ओर लपका। यह देखकर मिआओ शान ने कहा कि ''यदि आप मुझे किसी भी स्थिति में अविवाहित नहीं रहने देंगे तो मैं किसी चिकित्सक के संग विवाह करना पसंद करूंगी।''

यह सुनकर राजा और भी चिढ़ गया और बुदबुदाया, ''कैसा बेहूदा विचार है। क्या मेरे राज्य में कुलीन और प्रतिभाशाली युवकों की कमी है?''

मिआओ शान डरी नहीं, बोली, ''मैं मानव जाति के समस्त दु:खों का निवारण करना चाहती हूं—सर्दी, गर्मी, काम-वासना, बुढ़ापा और सभी प्रकार की असमर्थता इत्यादि से। मैं चाहती हूं कि समाज के सभी वर्गों के बीच समानता स्थापित हो, गरीब और अमीर सबके साथ समान व्यवहार हो तथा किसी प्रकार का भेदभाव न रहे।''

राजा यह सुनकर क्रोध से बोला, ''शैतान मूर्ख लड़की! तेरी ऐसी हिम्मत कि तू मेरे सामने इस प्रकार के घातक सुझाव दे।'' इसके बाद उसने राजमहल के सुरक्षा-अधिकारी को बुलाकर कहा, ''यह शैतान साध्वी मेरा अपमान करने पर तुली है। इसके राजसी वस्त्र उतरवाकर रानी-उद्यान ले जाओ और ठंड से मरने के लिए छोड़ दो, ज़िससे कम से कम मेरी एक चिंता तो कम हो जाये।''

राजा के इस आदेश पर मिआओ शान घुटनों के बल झुकी और उसने राजा को धन्यवाद दिया। रानी-उद्यान में वह निर्वाण-प्राप्ति के लिए साधना में तल्लीन हो गयी। उसे सबने मनाया किन्तु वह अपने पथ से विचलित नहीं हुई। उसे अडिग देखकर राजा ने उसकी इच्छानुसार एक बौद्ध साध्वी-आश्रम में भेज दिया।

आश्रम की साध्वियों ने राजा के आदेश पर मिआओ शान को काफी समझाने-बुझाने की चेष्टा की, जिससे कि वह साध्वी बनने का इरादा छोड़ दे, परंतु वह अडिग रही। अंत में प्रमुख साध्वी ने उसको उसके संकल्प से डिगाने के लिए रसोई की व्यवस्था सौंप दी तथा कहा कि ''यदि तुम्हारी सेवा से आश्रम की कोई भी साध्वी अप्रसन्न हुई तो तुम्हें यहां से निकाल दिया जायेगा।''

मिआओ शान कुछ नहीं बोली और मंदिर में जाकर बुद्ध की प्रतिमा के सम्मुख प्रार्थना करने लगी, ''हे महान् बुद्ध! हे करुणा और सौजन्य की मूर्ति! तुम्हारी यह तुच्छ दासी जगत का परित्याग करना चाहती है। मेरी प्रार्थना स्वीकार करो कि मेरी आस्था डिगाने के लिए दिये जाने वाले प्रलोभन मुझे अपनी ओर आकर्षित न करने पायें।''

मिआओ शान के लिए आश्रम की रसोई भार उठाना बहुत कठिन कार्य था परंतु वह उस कार्य में जुट गयी। यह देखकर देवताओं के राजा ने उसकी मदद के लिए अपनी शक्तियां भेजीं। आश्रम की साध्वी ने देखा कि देवलोक का निवासी छियेह लान रसोई बुहारता है, अजगर ने कुआं खोदकर रसोई के लिए जल निकालना शुरू कर दिया है, सिह जंगल से ईंधन लाता है, अग्नि-देवता स्वयं चूल्हा जलाते और बुझाते हैं, नाना पक्षी खेतों से शाक-सब्जियां लाते हैं तथा शाम के समय आश्रम की घंटी स्वत: बज उठती है, मानो कोई अदृश्य शक्ति उसे बजा रही हो। इन चमत्कारों से प्रभावित होकर प्रमुख साध्वी ने राजा के पास बुलावा भेजा और कहलाया कि उसकी बेटी महान् देवी है, अत: वह उसे आदरपूर्वक राजमहल में ले जाये।

यह संदेश सुनकर राजा और भी आग-बबूला हो गया और उसने अपने सेनापति को पांच हजार सैनिक देकर कहा कि "बौद्ध साध्वियों के आश्रम को चारों ओर से घेरकर भस्म कर दो। उसमें से एक भी साध्वी बाहर न निकल पाये।" सेनापति ने आदेश का पालन किया तथा आश्रम को सब ओर से घेरकर उसमें आग लगा दी।

यह देखकर साध्वियां घबरायीं और उन्होंने मिआओ शान को उलाहना दिया कि "तुम्हारे कारण हमारे ऊपर यह विपत्ति आयी है।" यह सुनकर मिआओ शान घुटनों के बल झुक गयी और प्रार्थना करने लगी, "हे परम बुद्ध! ब्रह्मांड के महान् नियन्ता! तुम्हारी यह दासी राजा मिआओ चुआंग की बेटी है और तुम राजा शुद्धोधन के पुत्र हो। इस नाते तुम मेरे भाई हुए, क्या तुम अपनी छोटी बहन की लाज नहीं बचाओगे? तुम राजमहल छोड़कर निकले थे, मैं भी तुम्हारे चरण-चिह्नों पर चलने के लिए राजमहल छोड़ आयी हूं। तुमने बोधि की खोज में एकांतवास किया था, मैं भी वही कर रही हूं। क्या तुम हमें इस अग्निदाह से नहीं बचाओगे?"

प्रार्थना समाप्त करके मिआओ शान ने अपने बालों में से बांस की एक पिन निकाली और उससे अपने तालू में छेद करके आकाश की ओर रक्त का कुल्ला कर दिया। क्षणभर में स्वच्छ आकाश में हर ओर से काले बादल घिर आये और मूसलाधार वर्षा होने लगी, जिसने आश्रम में लगी आग को तत्काल बुझा दिया। यह देखकर साध्वियां मिआओ शान के सम्मुख घुटनों के बल झुक गयीं और उन्होंने उसके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया।

सेनापति ने लौटकर राजा को सब समाचार सुनाये। इस पर राजा ने उसे आदेश दिया कि मिआओ शान को जंजीरों में जकड़कर वापस लाया जाये और उसका सिर काट दिया जाये।

मिआओ शान को प्राण-दंड

रानी ने जब यह खबर सुनी तो वह राजा के पास जाकर बोली, "आप मुझे उस मार्ग पर एक शानदार क्रीड़ांगन बनवाने की अनुमति प्रदान करें, जिससे होकर जंजीरों में जकड़ी मिआओ शान अपने वध-स्थल की ओर जायेगी। मैं अपनी दोनों बेटियों और अपने दामादों को साथ लेकर उस क्रीडांगन में जाऊंगी और हम लोग वहां उत्सव मनायेंगे, जिसमें गायन, वादन तथा दावत का आयोजन रहेगा। हमें मौज मनाते देखकर वह निश्चय ही अपनी दीनता पर पछताएगी।"

राजा ने रानी के इस प्रस्ताव को सहमति प्रदान कर दी तथा उत्सव की तैयारी हो जाने तक के लिए मिआओ शान का वध रोके जाने का आदेश दे दिया परंतु रानी की योजना विफल हो गयी। मिआओ शान के मन में उत्सव के प्रति पूर्णतया उपेक्षा का भाव रहा और उसने अपनी मां से केवल इतना कहा, "मेरे मन में शान-शौकत के ऐसे प्रदर्शनों के प्रति तनिक भी रुचि नहीं है। मैं सौगंध खाकर कहती हूं कि मैं

जगत के तथाकथित मौज-मजे में भाग लेने की अपेक्षा मर जाना अधिक पसंद करूंगी।''

अब मिआओ शान को वध-स्थल ले जाया गया। राजा अपने पूरे दरबार सहित वहां मौजूद था। मिआओ शान को मरा हुआ मानकर उसके प्रति बलि दी गयी और एक पुरोहित ने उसके अंतिम संस्कार के मंत्रों का उच्चारण किया।

इस सबके बीच रानी वहां पहुंची और उसने अधिकारियों से कहा कि वे अपने स्थान को लौट जायें। अब रानी ने मिआओ शान को समझाना शुरू किया। वह सिर झुकाये मां की सीख सुनती रही। स्वयं राजा अपनी बेटी के वध से बचना चाहता था। उसने उसे बंदी बनाकर राजमहल में भेजने का आदेश दिया, जिससे कि वह स्वयं उसे समझाने का अंतिम प्रयास कर सके। राजा ने उसे खूब समझाया किन्तु वह टस से मस न हुई। अंततः राजा ने अगले दिन उसका वध करने का निश्चय कर लिया।

वध-स्थल पर पहुंचकर मिआओ शान ने कहा, ''आज मैं श्रेष्ठ जीवन प्राप्त करने के लिए इस जगत को छोड़ रही हूं। मेरे प्राण जल्दी से ले लो लेकिन यह ध्यान रखना कि मेरे अंग भंग न होने पायें।'' राजा की ओर से उसके वध का आदेश प्राप्त हो गया। पल भर में आकाश में घटाएं घिर आयीं और चारों ओर अंधकार छा गया। मिआओ शान बहुत प्रसन्न थी और उसका चेहरा दैवी तेज से चमक रहा था। जल्लाद ने जैसे ही मिआओ शान की गर्दन पर तलवार चलायी, तलवार के दो टुकड़े हो गये। अब जल्लाद ने भाला उठाया और उससे मिआओ शान पर वार किया। भाला भी खंड-खंड हो गया। इसके बाद राजा ने आदेश दिया कि सिल्क के धागे से गला घोंटकर उसकी हत्या की जाये। वैसा ही किया गया। मिआओ शान का निर्जीव शरीर जैसे ही लुढ़का वैसे ही एक सिंह कूद कर वध-स्थल में पहुंचा और मिआओ शान के निर्जीव शरीर को अपनी पीठ पर लादकर चीड़ के जंगल की ओर भागा तथा अदृश्य हो गया। राजा को इस बारे में सूचित कर दिया गया।

देवता मिआओ शान की आत्मा को बादलों पर चढ़ाकर किसी एकांत स्थान पर ले गये। वहां पहुंचकर उसे होश आया और वह सोचने लगी कि ''मुझे तो मेरे पिता ने गला घोंटकर मरवा दिया था, फिर मैं इस एकांत और निर्जन स्थान पर कैसे आ पहुंची? मैं यहां कैसे रह पाऊंगी?'' तभी नीले वस्त्रों में दैदीप्यमान एक युवक हाथ में पताका लिए उसके पास पहुंचा और बोला, ''नर्क के राजा येन वांग के आदेश पर मैं तुम्हें अठारह पाताल लोकों में ले जाने के लिए आया हूं।'' मिआओ शान ने उससे पूछा, ''इस समय मैं किस अभिशप्त प्रदेश में हूं।'' युवक ने उत्तर दिया, ''इस समय तुम पहले पाताल में हो, तुम्हारे बलिदान से सभी देवता प्रसन्न हैं। तुम निर्भय होकर मेरे पीछे-पीछे चलो।''

इस प्रकार मिआओ शान दस पाताल लोकों की यात्रा पर निकल पड़ी। मार्ग में पाताल के देवताओं ने उसका अभिनंदन किया और बधाई दी। मिआओ शान ने उनसे कहा, ''मैं तो बहत तुच्छ हूं। आप लोग मेरे प्रति सम्मान व्यक्त करने का

शेर पर बैठकर मंदिर जाती मिआओ शान, जिसने पूर्णता और बुद्धपद प्राप्त करने के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया।
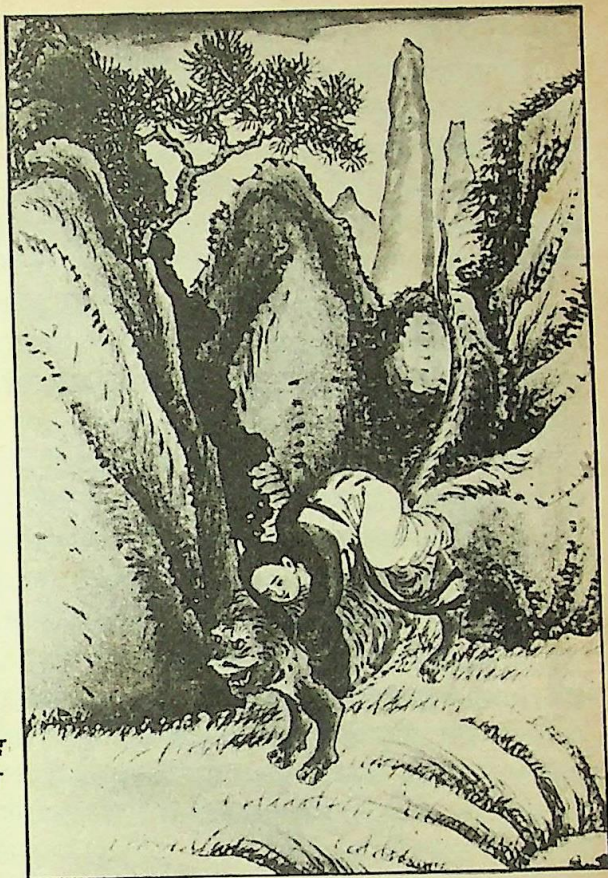
कष्ट वृथा ही उठा रहे हैं।'' इस पर देवताओं ने कहा, ''हमने सुना है कि आप जब प्रार्थना करती हैं तो समस्त बुराइयां तुरंत समाप्त हो जाती हैं, हम आपके मुंह से प्रार्थना सुनना चाहते हैं।'' मिआओ शान तैयार हो गयी, मगर उसने यह शर्त रखी कि दसों पाताल लोकों में बंदी जीवों को प्रार्थना सुनने के लिए खोल दिया जाये। सभी बंदियों को मिआओ शान की उपस्थिति में ले आया गया और मिआओ शान ने प्रार्थना की। प्रार्थना जैसे ही समाप्त हुई, समूचा नर्क आनंद से भर उठा और पापी जीवों को यंत्रणा पहुंचाने वाले सभी शस्त्र कमल का फूल बन गये। यह देखकर यम-देवता पान कुआन ने देवताओं के राजा येन वांग से कहा कि दैवी व्यवस्था के अनुसार स्वर्ग और नर्क दोनों का बना रहना आवश्यक है परंतु मिआओ शान के आने से नर्क समाप्त हो गया है। अतः इस बारे में कुछ किया जाना चाहिए। इस पर येन वांग ने चालीस पताकाधारी दूतों को बुलाकर उनसे कहा कि ''तुम लोग मिआओ शान की आत्मा को नर्क के द्वार से चीड़ वन में ले जाओ, जिससे कि वह पुनः अपनी काया में प्रवेश करके संसार में रह सके।'' दूतों ने इस आज्ञा का पालन किया और मिआओ शान फिर से जीवित हो उठी।

बुद्ध का दर्शन

ठीक उसी समय भगवान बुद्ध प्रकट हो गये और उन्होंने मिआओ शान से पूछा, "तुम यहां क्यों आयी हो?" मिआओ शान ने बुद्ध के सम्मुख अपनी पूरी कहानी कह सुनायी परंतु वह बुद्ध को पहचान न पायी। बुद्ध ने उससे कहा, "मुझे तुम्हारे दुर्भाग्य पर तरस आता है लेकिन यहां तो तुम्हारी सहायता के लिए कोई भी नहीं है। स्वयं मैं भी इस भरे-पूरे जंगल में एकदम अकेला हूं, तुम चाहो तो मेरे संग विवाह कर सकती हो। हम यहीं झौंपड़ी बनाकर शांतिपूर्वक जीवन काट देंगे।"

यह सुनकर मिआओ शान बोली, "आपको ऐसी असंभव सलाह नहीं देनी चाहिए, मैंने जीवन भर अविवाहित रहने के लिए जीवन तक त्याग दिया और आप मेरे सामने इतनी हल्की बात कहने का साहस कर रहे हैं। कृपा करके आप मेरे सामने से हट जाइये।"

बुद्ध प्रसन्न होकर बोले, "मिआओ शान, मैं ही स्वयं बुद्ध हूं। मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। साधना की दृष्टि से यह स्थान तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं रहेगा, अतः मैं तुम्हें ह्स्यांग शान चलने के लिए निमंत्रित करता हूं।"

प्रभु की वाणी सुनकर मिआओ शान गद्गद हो गयी। उसने घुटनों के बल झुककर उन्हें प्रणाम किया और बोली, "स्वामी, मेरी आंखों ने मुझे धोखा दे दिया। मुझे तनिक आशा न थी कि आप मुझे इस निर्जन स्थान पर दर्शन देंगे। मैंने आपके प्रति जो अपवचन कहे हैं, उनके लिए मैं क्षमा-याचना करती हूं।" उसने भगवान बुद्ध से ह्स्यांग शान मंदिर का पता पूछा और यह सुनकर स्तब्ध रह गयी कि वह स्थान बहुत दूर है। भगवान बुद्ध ने उसकी समस्या पहचानकर उसे एक आड़ू दिया और कहा कि "इसे खा लेने पर तुम्हें न भूख सतायेगी, न प्यास, न बुढ़ापा, न मृत्यु—तुम अमर हो जाओगी।"

मिआओ शान ने प्रसाद का वह फल खा लिया और मार्ग पर चल दी। वह चार-छः कदम ही चल पायी थी कि उसके सामने पगडंडी के बीचों-बीच खड़ा होकर एक सिंह दहाड़ने लगा। मिआओ शान उससे बोली, "मैं एक गरीब लड़की हूं, न मुझे मेरे माता-पिता का प्रेम मिला, न मैंने अपने पिता की आज्ञा का पालन ही किया, तू मुझे खा ले और इस काया से मुक्त कर दे।" सिंह ने उत्तर दिया, "मैं तो आपकी सवारी के लिए भेजा गया हूं, आप मेरी पीठ पर चढ़ जाइये, मैं आपको मंदिर तक ले चलूंगा।"

इस प्रकार मिआओ शान ह्स्यांग शान पर्वत पर पहुंच गयी और नौ वर्ष की कठोर साधना के बाद उसे बोधि प्राप्त हो गयी। उस समय से मिआओ शान अविराम रूप से उन लोगों की पीड़ाओं का निवारण करती आ रही है, जो उसका आह्वान करते हैं। चीन में सर्वत्र मिआओ शान की पूजा 'करुणा की देवी' के रूप में होती है तथा वहां यह विश्वास प्रचलित है कि वह निरपवाद रूप से अपने भक्तों को सांसारिक पीड़ाओं तथा जीवन के कष्टों से मुक्ति प्रदान करती है। ■■

मिस्र का मिथक : ओसिरिस

मिस्र की सभ्यता ईसा से 4000 वर्ष पूर्व पूर्ण रूप से विकसित थी। यह आरंभ से ही धर्म प्रधान रही। उसे दैव पर तो विश्वास था ही, मनुष्य की दैवी प्रकृति में भी उसकी आस्था थी। मृत्यु के पश्चात् जीवन की धारणा में उसका गहरा विश्वास था। मिस्र की सभ्यता इस बुनियादी सिद्धांत पर आधारित थी कि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। इस जगत में मरने वाला व्यक्ति एक दूसरे जगत में जीवित हो उठता है, जिसे मिस्र में पाताल लोक कहा गया तथा जिसके बारे में आम धारणा यह रही कि वह पृथ्वी के नीचे है। पाताल लोक में उसके साथ उन कर्मों के अनुसार व्यवहार होता था, जो उसने पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान किये हों। यदि इस लोक में वह श्रेष्ठ कार्य करता है तो परलोक में उसके साथ अच्छा व्यवहार होगा और यदि इस लोक में उसके कर्म खोटे हैं तो मृत्यु के पश्चात् प्राप्त होने वाले परलोक में उसे कष्ट ही उठाना पड़ेगा। यही कारण था कि मिस्र के लोग न तो मृतकों को कब्रों में दफनाते थे, न उनका दाह-संस्कार ही करते थे। वे उनके शवों को रासायनिक प्रक्रिया द्वारा सुरक्षित कर देते थे। इन्हें ममी कहा जाता है और जीवन की समस्त आवश्यक सामग्री के साथ त्रिकोणाकार विशाल भवनों में रख देते थे, जिन्हें पिरामिड कहा जाता है।

मिस्र में सर्वोच्च देवता आतम अथवा 'रे' अर्थात् सूर्य था। रे ने वायु के देवता शू तथा ममी की देवी टैफनट को उत्पन्न किया। शू और टैफनट स्त्री-पुरुष का आदिम जोड़ा थे, जिन्होंने मिलकर पृथ्वी के देवता गेब तथा आकाश की देवी नट को जन्म दिया। यहां आकर मिस्र की मिथकीय धारणाएं एक विचित्र मोड़ लेती हैं।

रे और नट का विवाह

आकाश की देवी नट अत्यंत सुंदर, स्नेहशील और दयालु थी। रे उस पर मोहित हो गया और उसने उससे विवाह कर लिया। विश्व का निर्माण करने के पश्चात् रे ने अपनी दैवी शक्तियों के द्वारा दैवी विवेक के स्वामी थोठ को उत्पन्न किया तथा उसे विश्व के संचालन के लिए नियम बनाने और न्याय तथा व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांत तय करने का काम सौंपा।

यद्यपि नट का विवाह रे के साथ हो गया था तथापि नट के मन में पृथ्वी के देवता और अपने भाई गेब के प्रति स्वाभाविक प्रेम था तथा थोठ के प्रति भी कोमल भावनाएं और प्रेम उत्पन्न हो गया था। जब रे को यह पता चला कि नट उससे

देवता थोठ, जिसने रे के शाप को प्रभावहीन करने के लिए सौर वर्ष के अतिरिक्त पांच दिनों का निर्माण किया।

छिपकर गेब के संग प्रेम करती रही है तो वह उस पर क्रुद्ध हो उठा और उसने शाप दिया कि वह अपनी कोख के बालक को वर्ष के किसी भी महीने में जन्म नहीं दे सकेगी। यह शाप सुनकर नट आतंकित हो उठी। आंखों में आंसू भरकर वह अपने प्रेमी थोठ देवता के पास पहुंची और उसने उसे रे का शाप सुनाकर उससे मदद मांगी। उसने थोठ से कहा, "इस समय मेरी कोख में पांच बच्चे हैं, जिनमें से एक तुम्हारा भी है।"

थोठ ने उसको सांत्वना दी और उसे विश्वास दिलाया कि वह रे के शाप को प्रभावहीन कर देगा तथा अगला वर्ष शुरू होने से पहले ही वह मां बन जायेगी।

अब थोठ के सामने रे द्वारा निर्माण किये गये सौर वर्ष के 360 दिन के अतिरिक्त पांच दिन प्राप्त करने की समस्या थी, जिनमें कि नट अपनी कोख के पांच बच्चों को जन्म दे सके। अतः उसने चन्द्रमा के पास जाने का निश्चय किया। थोठ ने एक बार चन्द्रमा को नष्ट होने से बचाया था तथा वह चन्द्रमा का संरक्षक माना जाता था।

थोठ को यह बात मालूम थी कि चन्द्रमा को चौसर का खेल बहुत पसंद है, अतः उसने चन्द्रमा को चौसर खेलने के लिए आमंत्रित किया तथा यह शर्त रखी कि जिस बार थोठ विजयी रहेगा, उस बार चन्द्रमा उसे अपने प्रकाश का थोड़ा-सा हिस्सा प्रदान करेगा। चन्द्रमा ने इस पर आपत्ति नहीं की। थोठ और चन्द्रमा अगले कुछ महीनों तक चौसर खेलते रहे और इस बीच थोठ अपनी विजय पर प्राप्त होने वाले चन्द्रमा के प्रकाश का संग्रह करता रहा। जब उसके पास पांच दिन के बराबर प्रकाश इकट्ठा हो गया तो उसने चन्द्रमा के साथ चौसर का खेल बंद कर दिया और वह नट के पास लौट कर उससे बोला, ''मैंने रे के सौर वर्ष के 360 में पांच अतिरिक्त दिन और जोड़ दिये हैं। तुम उन दिनों में अपने पांचों बालकों को जन्म दोगी।''

नट ने पहले दिन अपने पति रे के पुत्र ओसिरिस को जन्म दिया। ओसिरिस के जन्म के समय आकाशवाणी हुई: ''समूची पृथ्वी के स्वामी तथा श्रेष्ठ एवं महान् सम्राट ओसिरिस का जन्म हो गया है।'' अगले दिन नट ने रे के दूसरे पुत्र होरस-वरिष्ठ को जन्म दिया।

तीसरे दिन नट की कोख से उसके भाई गेब का बेटा सेथ उत्पन्न हुआ। वास्तव में सेथ ने अपने जन्म का दिन और जन्म की असाधारण प्रक्रिया का चयन स्वयं ही किया था। वह अपनी मां की कोख को चीर कर स्वयं बाहर आया। चौथे दिन नट की कोख से विवेक के देवता तथा विश्व के विधाता थोठ की बेटी महान देवी आइसिस का जन्म हुआ और पांचवें दिन गेब की बेटी नेफथिस का।

रे के पुत्र ओसिरिस और थोठ की बेटी आइसिस के बीच उस समय ही प्रेम उत्पन्न हो गया था, जब वे मां की कोख में थे। बड़े होने पर उन्होंने आपस में विवाह कर लिया। गेब के बेटे सेथ ने अपनी बहन नेफथिस के संग विवाह कर लिया। सेथ के संग विवाह के बावजूद नेफथिस अपनी बहन आइसिस और अपने पति के घोर शत्रु तथा अपने भाई ओसिरिस को प्रेम करती रही और कठिन समय में उनकी मदद भी करती रही। उचित समय आने पर ओसिरिस संपूर्ण मिस्र का, सम्राट बन गया। ओसिरिस का राज प्राचीन मिस्र के इतिहास में स्वर्णकाल माना जाता है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए वह एक लंबे समय तक अनुकरणीय बना रहा। ओसिरिस ने अपनी प्रजा को सभ्यता की कला सिखाई, उसकी स्तुति में रचे गीत में कहा गया है:—

''स्थापित किये न्याय उसने, नील के तीनों तटों पर
रख दिया सूर्य को उसने, पिता के स्थान पर
पराजित करके शत्रु को, बल और पराक्रम से।
श्रेष्ठ है कितना वह, देखा जब प्रजा ने
सौंप दिया राज्य तब हाथों में उसी के
कि ले जा सके तीनों खंडों को समृद्धि की ओर वह।''

ओसिरिस ने अपनी प्रजा को खेती करना सिखाया तथा एक स्थान पर बसना भी। इससे पहले उसकी प्रजा एक घूमन्तू जाति थी। ओसिरिस ने प्रजा के लिए क़ानून बनाये तथा पृथ्वी पर शांति और व्यवस्था स्थापित की।

ओसिरिस, जिसका समय प्राचीन मिस्र का स्वर्णकाल था।

षड्यंत्र

अपनी प्रजा को सभ्य जीवन के पाठ पढ़ाने के बाद ओसिरिस अपने विचारों के प्रचार की दृष्टि से अन्य देशों की यात्रा पर गया। उसके भाई सेथ के मन में उसके प्रति ईर्ष्या बनी रहती थी। अब, सेथ ने ओसिरिस की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर उसको सत्ता से हटाने और उसकी हत्या का षड्यंत्र रच डाला। उसने मिस्र के बहत्तर वरिष्ठ लोगों का इस षड्यंत्र में सहयोग प्राप्त कर लिया।

ओसिरिस के विदेश से लौटने के बाद सेथ ने उसको एक संदूक में बंद करके मार डालने और नदी में फिकवाने का षड्यंत्र रचा। एक रात जिस समय ओसिरिस गहरी नींद में था, सेथ उसके कमरे में गया और उसने ओसिरिस के शरीर का एड़ी से चोटी तक पूरा नाम ले लिया। अगले दिन उसने अपने विश्वसनीय दस्तकारों को बुलाकर उन्हें वह नाप सौंप दिया तथा उनसे कहा कि ठीक उसी नाप के अनुसार लकड़ी का एक ऐसा संदूक बनाकर तैयार करें, जिसमें हवा भी प्रवेश न कर सके। संदूक तैयार हो जाने के बाद सेथ ने देश के श्रेष्ठतम कलाकारों को बुलाया और उन्हें संदूक की सजावट का काम सौंप दिया। कलाकारों ने अपना कार्य बहुत सावधानी और सुरुचिपूर्वक संपन्न किया। संदूक कला का एक उत्तम नमूना बन गया।

अब सेथ ने अपने घर पर एक दावत का आयोजन किया, जिसमें ओसिरिस को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया था। अन्य आमंत्रितों में केवल वे बहत्तर मिस्री नागरिक थे, जो सेथ के षड्यंत्र में शामिल हो चुके थे। ओसिरिस को अपने भाई के प्रयोजन का तनिक ज्ञान न था, अतः वह सहज भाव से दावत में शामिल हुआ। ओसिरिस अपने साथ एक भी अंगरक्षक लिए बिना निपट अकेला ही सेथ के घर पर पहुंचा।

भोजन और आमोद-प्रमोद समाप्त होने पर सेथ ने अपने एक सेवक को संदूक हाल में लाने का संकेत किया। संदूक देखकर अतिथियों ने उसकी भरपूर सराहना की। इसका लाभ उठाकर सेथ ने दांव लगाया। उसने कहा, "इस संदूक के भीतर उतरकर लेटने में आपमें से जिस किसी का शरीर इस संदूक के नाप का निकलेगा, मैं यह संदूक उसी को भेंट कर दूंगा।" सेथ के षड्यंत्र में शामिल.लोगों में से एक-एक करके सभी उस संदूक में उतरकर लेटे, मगर किसी का भी शरीर संदूक के नाप का न था। अब सेथ की कूटनीतिक चाल के सफल होने की घड़ी थी। ओसिरिस के मन में सेथ के प्रयोजनों की ओर से दूर तक भी कोई शंका न थी। वह संदूक के भीतर घुसा और उसमें लेट गया। संदूक तो ओसिरिस के शरीर के नाप के अनुसार ही बनाया गया था, इसलिए ओसिरिस उसके भीतर लेटते ही उसमें पूरी तरह फंस गया। उसे उसमें से निकलने का भी अवसर न मिला कि सेथ और उसके साथी षड्यंत्रकारियों ने उस पर ढक्कन लगाकर उसे कीलों से जड़ दिया और उस पर पिघला हुआ सीसा डालकर उसकी सब दरारें बंद कर दीं, जिससे कि उसमें वायु प्रवेश न कर सके। सेथ ने उस संदूक को नील नदी में फिकवा दिया।

नील नदी मिस्र के दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। वह उस संदूक को अपने साथ अपने मुहाने तक ले गयी और डेल्टे पर पहुंचकर धीमी गति वाले जल ने संदूक को बिब्लोस के सीरियाई तट पर दलदल में उगे हुए पटेरा के झुंड में सुरक्षित रख दिया।

ओसिरिस जब सेथ के घर से नहीं लौटा तो आइसिस के मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि सेथ ने उसे किसी षड्यंत्र में न फंसा दिया हो। इस बीच सेथ के कुछ सहयोगी षड्यंत्रकारियों ने डींग में ओसिरिस की मृत्यु का रहस्य कुछ लोगों के सम्मुख प्रकट कर दिया। फिर तो यह बात जंगल की आग की तरह पूरे मिस्र में फैल गयी और आइसिस के कानों तक जा पहुंची। यह समाचार पाकर आइसिस गहरे दुःख में डूब गयी।

आइसिस राजमहल छोड़कर असहाय व्यक्ति की तरह अपने पति के लिए रुदन करती हुई इधर-उधर भटकते हुए उस संदूक की तलाश करने लगी, जिसमें ओसिरिस को बंद कर दिया गया था। उसके आर्त्तनाद से मिस्र के लोग बेचैन हो उठे, परंतु किसी को कुछ मालूम न था कि आइसिस जिस संदूक की खोज कर रही है, वह कहां है? अंततः आइसिस जब डेल्टे के समीप पहुंची, तब बच्चों के एक ऐसे झुंड ने, जिसने संदूक जैसे किसी विचित्र पदार्थ को बहते देखा था, आइसिस को

ओसिरिस (बायें) तथा होरस को गोद में लिए आइसिस

बताया कि वह पदार्थ बिब्लोस की दिशा में बहकर चला गया था। इस बीच वह संदूक एक पेड़ से सट गया था, जिसके कारण वह पेड़ असाधारण रूप से बढ़ने लगा और उसने उस संदूक को अपने तने में बंद कर लिया। उस क्षेत्र में इतने बड़े वृक्ष नहीं होते थे, अतः जब सीरिया के राजा मेलकार्थस को उस पेड़ के बारे में पता चला तो उसने जड़ से कटवाकर मंगा लिया और अपने महल के भीतर मुख्य खम्भे की भांति स्थापित करा दिया। उस जमाने में यह एक असाधारण घटना थी। अतः इसके बारे में शहर भर में चर्चा होने लगी और वह चर्चा दूर-दूर तक फैल गयी। आइसिस को जब संदूक दलदल में कहीं न मिला, तब उसने अपनी दैवी और परामानसिक शक्तियों द्वारा यह पता लगाया कि जिस संदूक में उसके पति का शरीर बंद था, वह कहां गया। उसने तन्द्रा की अवस्था में देखा कि वह संदूक पेड़ के उस तने के भीतर बंद था, जो सीरिया के राजमहल में मुख्य खम्भे की तरह शोभायमान था।

यह दृश्य देखकर आइसिस लपककर बिब्लोस पहुंची। वहां पहुंचकर उसने सीरिया के राजा और रानी को प्रसन्न कर लिया और उसकी कहानी सुनकर उनके

हृदयों में सहानुभूति और करुणा उत्पन्न हो गयी। उन्होंने आइसिस से प्रसन्न होकर कहा, "तुम पेड़ के इस तने को बीच में से चीरकर संदूक निकाल सकती हो पर यह ध्यान रहे कि इस पर टिकी छत न गिरने पाये।" आइसिस ने एक बार फिर अपनी दैवी शक्तियों का आह्वान किया और छत को बिना गिराये खम्भे को काटकर उसमें से संदूक निकाल लिया।

संदूक को देखते ही वह उस पर गिर पड़ी और इतनी बुरी तरह बिलख-बिलख कर रोने लगी कि देखने वालों का कलेजा भी फटने लगा। उसका विलाप सीरिया के सम्राट मेलकार्थस और महारानी अस्तार्त के लिए असह्य हो उठा। उन्होंने आइसिस को धैर्य बंधाने की कोशिश की लेकिन आइसिस तो गहरी व्यथा में तड़प रही थी। कुछ समय बाद वह आपे में आयी और संदूक साथ लेकर मिस्र लौट गयी।

मिस्र में वह संदूक लेकर रेगिस्तान के एक दूरवर्ती स्थान पर जा पहुंची। वहां उसने उस संदूक को खोला। अपने प्यारे भाई और पति ओसिरिस को संदूक के भीतर निर्जीव लेटा हुआ देखकर, वह दु:ख के अथाह सागर में डूब गयी। उसकी व्यथा का वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। उसने उसे बांहों में भर लिया और एक साधारण स्त्री की भांति विलाप करने लगी।

आइसिस को शीघ्र ही उस विकट परिस्थिति का भान हुआ और उसने ओसिरिस को फिर से जीवित करने का निश्चय कर लिया। आइसिस ने विशाल पंखों वाले पक्षी का रूप धारण कर लिया और:—

"पहले तो ढांप लिया उसने ओसिरिस को अपने पंखों से
दी फिर हवा उसे, फड़फड़ा कर पंखों को
लौटती देख चेतना उसमें, चीख उठी वह हर्षित होकर
निकाल पेटी से धरती पर भाई को अपने
जगाया प्राणों को थके हुए निर्जीव तन में
धारण किया वीर्य उसका कोख में अपनी
दिया जन्म उत्तराधिकारी को उसके
पिलाया दूध अपनी छाती का उस बालक को
रखकर गोपनीय वहां उसे
नहीं जानता था उनको
जहां पर कोई भी।"

ओसिरिस को फिर से जीवित करने के लिए आइसिस ने अपनी उन समस्त दैवी शक्तियों का उपयोग किया, जो उसके पिता थोठ ने उसे प्रदान की थीं। ओसिरिस के पुनर्जीवित हो जाने के बाद आइसिस उससे लिपट गयी और ओसिरिस का उत्तराधिकारी उत्पन्न करने के प्रयोजन से उसने उसका वीर्य अपनी कोख में धारण किया, जिससे कि उसका बेटा अपने पिता की मृत्यु का बदला ले सके तथा अपने पिता के हत्यारे सेथ से मिस्र का सिंहासन छीन सके।
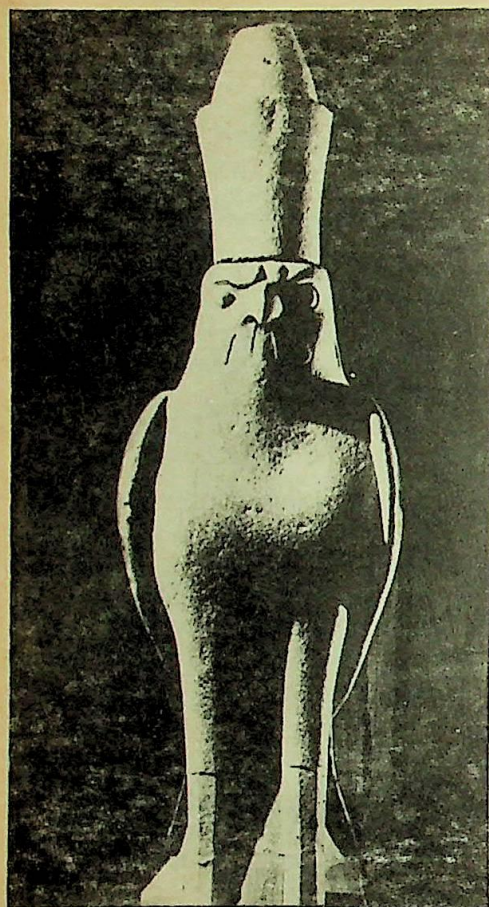
फाख्ता पक्षी के रूप में होरस

आइसिस की कोख में अपना वीर्य स्थापित करने के पश्चात् ओसिरिस फिर से मिर्जीव हो गया। आइसिस ने उसके शव को संदूक में सुरक्षित रख दिया और उसे एक दूरवर्ती तथा एकांत स्थान पर छुपा दिया। समय आने पर आइसिस की कोख से ओसिरिस के बेटे का जन्म हुआ, जिसका नाम आइसिस ने होरस रखा। बेटे का मुख देखकर आइसिस का हृदय आनंद से झूम उठा। इसी समय उसका पिता थोठ उससे मिलने आया और उसने आइसिस को सलाह दी कि वह अपनी और होरस की पहचान तथा अपने छुपने के स्थान को सेथ से छुपाये रखे। थोठ को पता था कि होरस का जीवन संकटों से घिरा रहेगा, अतः उसने उसकी रक्षा के लिए आइसिस को कुछ और दैवी शक्तियां प्रदान कीं।

आइसिस होरस को लेकर नये स्थान की खोज में निकल पड़ी। उसका मार्गदर्शन और संरक्षण सांप और बिच्छू कर रहे थे। वह होरस को लेकर नी-डेल्टा में पटेरों (नरकुल) से आच्छादित दलदली क्षेत्र के एक अज्ञात द्वीप पर जा पहुंची। आइसिस को किसी प्रकार का आर्थिक सहारा प्राप्त न था। अतः वह होरस को पटेर

के जंगल में छुपाकर पास के कस्बे में अपने और अपने बच्चे के लिए भोजन की तलाश में चली जाती और पूरा दिन भीख मांगने में निकाल देती।

एक रोज शाम के समय जब वह अपने बच्चे के पास लौटी तो उसने देखा कि होरस बीमार है। उस समय का वर्णन वह स्वयं इस प्रकार करती है :–''मैं उसे अकेला छोड़कर भिखारिन की तरह दिन भर भटकती रही... जब मैं शाम को लौटी तब सोच रही थी कि होरस को बांहों में भरकर उसका मुख चूम लूंगी, लेकिन मैंने अपने सुंदर, सुनहले होरस को.... अपने अबोध, पिता-विहीन बालक को पृथ्वी पर पड़ा पाया। उसकी आंखों से पानी बह रहा था और उसके होठों से लार टपक रही थी। उसका शरीर निढाल हो गया था और हृदय की गति मंद पड़ गयी थी। उसकी नब्ज तो सुनायी ही नहीं पड़ती थी।''

दलदली क्षेत्र में रहने वाले मछुआरों के सिवाय वहां कोई भी ऐसा न था कि जिसे आइसिस अपनी मदद के लिए बुलाती। मछुआरे तो आ गये लेकिन उन बेचारों को होरस की पीड़ा के निवारण का कोई भी उपाय ज्ञात न था। जब उन्होंने आइसिस को विलाप करते और अपने बेटे के जीवन के लिए रोते-बिलखते देखा तो वे भी दहाड़ मारकर रोने-धोने लगे। उसी समय वहां एक स्त्री आयी, जिसे पास के नगर में विदुषी माना जाता था। आइसिस के पास जाकर उसने होरस को देखा और आइसिस से बोली, ''चेमिस के इस प्रांत में जहां तुम रह रही हो, सेथ पहुंच ही नहीं सकता। अतः तुम्हारी यह आशंका निर्मूल है कि होरस को सेथ की ओर से कोई चोट पहुंचायी गयी है। तुम होरस के कष्ट का कोई अन्य कारण तलाश करो। यह भी हो सकता है कि उसे किसी विषैले बिच्छू अथवा सांप ने डस लिया हो।''

इस पर आइसिस ने होरस के श्वास की परीक्षा की और उसे विश्वास हो गया कि होरस पर विष का प्रभाव है। उसने होरस को अपनी बांहों में भर लिया और उस तरह उछलने लगी, जैसे मछलियां आग में डालने पर तड़पती हैं।

आइसिस ने आकाश की ओर हाथ उठाकर रे और थोठ से प्रार्थना की कि वे होरस की रक्षा करें। इस पर थोठ उसके समीप आ पहुंचा और उससे बोला, ''हे देवी आइसिस, तुम डरो मत.... विलाप भी मत करो। मैं आकाश से अपने साथ जीवनदायी श्वास लेकर आया हूं, जिससे तुम्हारा बच्चा स्वस्थ हो जायेगा।'' इसके पश्चात् थोठ ने विष को आदेश दिया कि वह होरस को छोड़ दे और उसने विष पर रे का जादू छोड़ा। इस प्रकार होरस घातक विष से मुक्त हो गया और फिर से जीवित हो उठा। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा और शीघ्र ही एक स्वस्थ युवक बन गया तथा उसने अपनी मां से औषधि-विज्ञान में कुशलता प्राप्त कर ली।

ओसिरिस के शव के टुकड़े

सेथ शिकार की तलाश में रेगिस्तान की ओर जा निकला। उस रोज पूनम की रात थी, आकाश में पूरा चांद चमक रहा था और धरती पर चांद की रोशनी फैली हुई थी। शिकार के पीछे भटकते-भटकते अचानक उसे वह संदूक दिखाई

पड़ गया, जिसमें उसने अपने भाई और शत्रु ओसिरिस को बंद किया था। वह संदूक वहां आइसिस ने छुपाकर रखा था। सेथ ने उसे देखते ही पहचान लिया। उसने तुरंत संदूक खोला और जैसे ही उसकी निगाह अपने शत्रु के शव पर पड़ी, उसका हृदय घृणा और क्रोध से भर उठा। उसने ओसिरिस के शव को चौदह टुकड़ों में काट डाला और उन्हें समूचे मिस्र में स्थान-स्थान पर फेंक दिया, जिससे कि आइसिस उन्हें खोज न पाये।

आइसिस को जब अपने पति क़ी लाश का संदूक न दिखाई दिया तो वह बहुत दु:खी हुई। शीघ्र ही उसके कानों में यह खबर पड़ने लगी कि सेथ ने ओसिरिस की लाश के टुकड़े-टुकड़े करके इधर-उधर फेंक दिया था। व्यथा की इस घड़ी में उसकी बहन नेफथिस, जिसका विवाह सेथ के साथ हुआ था, उसके पास आ गयी और ओसिरिस की लाश के टुकड़ों की तलाश में उसके साथ चल दी। आइसिस, नेफथिस और होरस ने पटेर की एक नाव ली और उसे नील नदी में डालकर ओसिरिस के शव के टुकड़ों की तलाश में समूचे मिस्र में घूमते फिरे। वे अपने कार्य में सफल रहे। टुकड़ों के मिल जाने के बाद उन्होंने उन्हें फिर से जोड़ दिया और ओसिरिस की लाश को फिर से ममी का रूप दे दिया। अब उन्होंने ओसिरिस की ममी को अपने पास रखना ठीक नहीं समझा और यह सोचकर उसे भूमि में गाड़ दिया कि इस प्रकार ओसिरिस पृथ्वी के भीतर से होकर पाताल लोक में चला जायेगा, जहां पृथ्वी के मृतक निवास करते हैं।

होरस अपनी मां आइसिस और मौसी नेफथिस को लेकर मृतकों के जगत बुसिरिश में जा पहुंचा। वहां पहुंचकर आइसिस और नेफथिस ने अपनी दैवी शक्तियों के बल पर ओसिरिस को पुनर्जीवित कर लिया तथा होरस ने उसे शक्ति प्रदान करके देवताओं के लोक में पहुंचा दिया, जहां रे ने ओसिरिस को देवताओं का राजा तथा पाताल लोक का सम्राट बना दिया। रे ने होरस को भी देवताओं के बीच स्थान प्रदान किया।

महान् संघर्ष

देवसभा में स्थान प्राप्त करने के बाद होरस ने ऊपरी और निचले मिस्र के राजपद के लिए अपना दावा पेश किया। यह वह राजपद था, जो सेथ ने होरस के पिता ओसिरिस की हत्या करके हड़प लिया था। देवता इस मामले पर अस्सी वर्ष तक वाद-विवाद करते रहे और अंत में यह निश्चय हुआ कि सेथ और होरस दरियाई घोड़े का रूप धरकर पानी के भीतर द्वंद्व युद्ध करें। वे दोनों पानी में घुस गये और युद्ध करने लगे। आइसिस ने सोचा कि सेथ निश्चय ही होरस को मार डालेगा। अत: वह एक लंबी-सी रस्सी लायी और उसने उसमें कांटेदार बर्छी बांधकर उसे जल में डाल दिया। वह बर्छी होरस के शरीर में घुस गयी। होरस जोर से चिल्लाया और उसने अपनी मां से कहा कि तुम अपने इस शस्त्र से मुझे मुक्त कर दो। आइसिस के कहने पर वह बर्छी होरस के शरीर से निकल गयी। आइसिस ने उसे दोबारा पानी में डाला। इस बार बर्छी सेथ के शरीर में घुस गयी, जो पीड़ा से

बेचैन होकर कहने लगा, 'हे आइसिस, मेरी बहन तू अपनी बर्छी को आदेश दे कि वह मुझे अपने चंगुल से मुक्त कर दे। मैं तेरा भाई हूं, मैं उसी कोख से पैदा हुआ हूं, जिससे तू पैदा हुई है।''

यह सुनकर आइसिस का हृदय भाई के प्रति प्रेम से विह्वल हो उठा और उसने सेथ को बर्छी से मुक्त कर दिया। यह देखकर होरस क्रोध से पागल हो उठा। वह सेथ के साथ लड़ना छोड़कर पानी से निकल आया और उसने अपनी मां का सिर काट डाला। आइसिस का सिर लेकर होरस पहाड़ी पर चढ़ गया। रे के आदेश पर देवताओं ने उसका पीछा किया परंतु वह उनके हाथ नहीं आया। सेथ उसका पीछा करते-करते उस वृक्ष तक जा पहुंचा, जिसके नीचे होरस थककर आराम कर रहा था। उसने होरस को पकड़कर भूमि पर गिरा दिया तथा उसकी आंखें निकाल लीं। जब हैथोर देवी को यह ज्ञात हुआ तो वह होरस की तलाश में निकल पड़ी और उसने उसे पहाड़ की तलहटी में खोज निकाला। हैथोर ने होरस को उसकी आंखें फिर से प्रदान कर दीं।

अस्सी वर्ष के संघर्ष के पश्चात् रे ने होरस के पक्ष में फैसला सुनाया। होरस, मिस्र का सम्राट बन गया परंतु सेथ को मृत्युदंड नहीं दिया गया क्योंकि आखिरकार वह रे का सौतला बेटा तथा रे की पत्नी नट का सगा पुत्र था। आकाश की देवी नट ने उसे पृथ्वी के देवता गेब के संसर्ग से जन्म दिया था। सेथ को स्वर्ग प्रदान किया गया। उसे वायु, झंझावात और तूफान का देवता बना दिया गया।

ओसिरिस

जहां तक ओसिरिस का प्रश्न है, उसे विश्व का स्वामी और आदि-सम्राट माना जाता है। मिथक के अनुसार ओसिरिस संसार के मध्य में उस टीले पर निवास करता है, जिसका निर्माण सृष्टि के आरंभ में हुआ था। वह सच्चाई का देवता है। उसे पृथ्वी और आकाश के समस्त जीवन का मूल स्रोत माना जाता है।

ओसिरिस पुनर्जीवित हो गया था परंतु अपने मूल रूप में, अर्थात् मिस्र के राजा के रूप में नहीं, वरन् देवता के रूप में। वह मृत्यु की विभीषिका से मनुष्य की आत्मा के मोक्ष तथा मानसिक बाधाओं से उसकी मुक्ति का प्रतीक बन गया।

आइसिस का सिर कट जाने पर उसके पिता थोथ ने उसके धड़ पर गाय का सिर प्रत्यारोपित कर दिया था। मिस्र के राजसिंहासन पर होरस का राज्याभिषेक हो जाने तथा देवताओं द्वारा उसे अपने पिता का वैध पुत्र और अधिकृत उत्तराधिकारी मान लिए जाने के बाद आइसिस अपने प्रिय भाई और पति ओसिरिस के संग रहने के लिए पाताल लोक चली गयी। उसके बाद ओसिरिस, आइसिस और उनका बेटा होरस अपने-अपने राज्यों में प्रसन्नतापूर्वक रहते और राज करते रहे। वे आज भी मनुष्यों को उनकी मृत्यु के पश्चात् दूसरे लोकों में उनके कर्मों के अनुसार श्रेष्ठ जीवन प्राप्त करने में मदद करते हैं। ■■

भारत के मिथक-1: मनुष्यों की उत्पत्ति

भारतीय मिथकों में जिस त्रिमूर्ति—ब्रह्मा, विष्णु और महेश को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है, उनमें विष्णु को आदि-पुरुष माना गया है। निराकार ब्रह्म ने पहले-पहल जो रूप ग्रहण किया, वह विष्णु कहलाया, जिसने अपने संकल्प के बल द्वारा सृष्टि के निर्माण के लिए प्रजापति को जन्म दिया।

सृष्टि का निर्माण होने से पहले समूचे अंतरिक्ष में ब्रह्म फैला हुआ था। तब तक न उसका कोई रूप था न नाम। न जाने कैसे ब्रह्म में हलचल हुई और ब्रह्म को लगा—''मैं एक हूं अनेक हो जाऊं।'' (एकोऽहम् बहुस्याम्) एक से अनेक होने का संकल्प मन में उत्पन्न होते ही ब्रह्म ने सबसे पहले जल का निर्माण किया। जल को संस्कृत भाषा में इस कारण नार कहा जाता है क्योंकि उसकी उत्पत्ति ब्रह्म अर्थात् नर से हुई। ब्रह्म ने रूप धारण करके जल अर्थात् नार को अपना घर अर्थात् अयन बनाया। इसी कारण उनका नाम नारायण हुआ। उस नार अर्थात् जल में नारायण की शक्ति का प्रवेश होने से एक बहुत विराट स्वर्ण-अण्ड प्रकट हुआ। एक वर्ष तक उस अण्ड में निवास करने के बाद हिरण्यगर्भ अर्थात् ब्रह्मा का जन्म हुआ। इसी बात को दूसरे प्रकार से भी कहा गया कि नारायण जल में शेषनाग की शैय्या पर निष्क्रिय सोये हुए थे, ज्योंही उनके भीतर सृष्टि की रचना का भाव आया त्योंही उनके चित्त में रजोगुण उत्पन्न हुआ। यही रजोगुण उनकी नाभि से कमल-नाल के रूप में सहसा ऊपर उठा, जिस पर कमल का एक फूल खिला, जिसमें से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई।

स्वर्ण-अण्ड में से निकलने के पश्चात् हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने उसके दो टुकड़े कर दिये। एक टुकड़े से उन्होंने आकाश बनाया और दूसरे टुकड़े से पृथ्वी। पृथ्वी को जल पर स्थापित किया गया। ब्रह्मा ने अपने संकल्प से सात पुत्र उत्पन्न किये तथा उनसे कहा कि तुम लोग सृष्टि का निर्माण करो परंतु उन्हें इस कार्य में रुचि न थी। यह देखकर ब्रह्मा को क्रोध आ गया और उनकी भौंहों के बीच में से एक नीललोहित अर्थात् नीले और लाल वर्ण के बालक का जन्म हुआ। यह बालक उत्पन्न होते ही रोने लगा। अत: ब्रह्मा ने इसे रुद्र कहा। यह रुद्र ही देवताओं के पूर्वज हुए। रुद्र को ब्रह्मा ने ग्यारह नाम और रूप देने के बाद ग्यारह पत्नियां प्रदान कीं, जिन्हें रुद्राणियां कहा गया।

क्रोध में से उत्पन्न रुद्र ने जो संतान उत्पन्न की, वह भी भयंकर क्रोधी थी

नारायण की नाभि से उत्पन्न ब्रह्मा

त्रिमूर्तिः ब्रह्मा, विष्णु व महेश

और उसने ब्रह्मा की रची हुई सृष्टि को नष्ट करना आरंभ कर दिया। तब ब्रह्मा ने रुद्र से कहा कि अब तुम संतान उत्पन्न करना बंद कर दो और तपस्या करो। इसके बाद ब्रह्मा ने संकल्प द्वारा गोद से नारद, अंगूठे से दक्ष, प्राण से वसिष्ठ, त्वचा से भृगु, हाथ से कृत, नाभि से पुलह, कानों से पुलस्त्य, मुख से अंगिरा, नेत्रों से अत्रि और मन से मरीचि को उत्पन्न किया।

ब्रह्मा की अन्य संतानों में धर्म, अधर्म, काम, क्रोध, लोभ के अतिरिक्त ज्ञान और वाणी की देवी सरस्वती भी थी। सरस्वती बहुत सुंदर तथा निर्मल मन की कन्या थी, फिर भी उसे देखकर ब्रह्मा के मन में काम उत्पन्न हो गया। सरस्वती ने पिता को समझाया, जिससे ब्रह्मा के मन में ग्लानि उत्पन्न हो गयी और उन्होंने वह शरीर छोड़ दिया। उनका वह शरीर ही अंधकार बना। इसके बाद उन्होंने दूसरा शरीर धारण किया किन्तु उनके मन में यह दुःख बना रहा कि सृष्टि का विस्तार नहीं हो रहा है। उन्होंने अनुभव कर लिया कि मैथुन के बिना प्रजा में वृद्धि नहीं होगी। यह विचार मन में आते ही ब्रह्मा स्त्री को उत्पन्न करने के लिए आतुर हो उठे, उनके मन में यह डर पैदा हुआ कि यदि उन्होंने स्त्री का निर्माण कर लिया तो उसे देखकर स्वयं उनके मन में उसे प्राप्त करने की कामना उसी प्रकार जागृत हो सकती है, जिस प्रकार सरस्वती के प्रति उत्पन्न हुई थी और उस स्थिति में उन्हें अपनी काया एक बार फिर विसर्जित करनी पड़ेगी। अतः उन्होंने अपनी काया को दो भागों में खंडित करके स्त्री और पुरुष का निर्माण करना अधिक उपयुक्त समझा। उनके मन में ज्योंही यह संकल्प आया, उनकी काया स्वतः दो खंडों में विभाजित हो गयी।

ब्रह्मा की काया का एक खंड पुरुष बन गया। वह मनु कहलाया। दूसरा खंड स्त्री बन गया जो शतरूपा कहलाया। मनु ने शतरूपा को पत्नी के रूप में ग्रहण कर

नार (जल) को अपना अयन (घर) बनाने के कारण परम शक्ति ब्रह्म 'नारायण' कहलायी।

लिया। साररूप में देखा जाये तो स्थिति में इस बार भी कोई विशेष अंतर नहीं आया था। मनु वास्तव में ब्रह्मा ही थे। इस प्रकार ब्रह्मा ने जिस स्त्री को अपने अंग से उत्पन्न किया, उसे ही मनु का रूप धारण करके अपनी भार्या के रूप में स्वीकार करना पड़ा, दूसरा कोई उपाय ही न था। अंतर केवल इतना ही रहा कि मनु पूर्ण ब्रह्मा न होकर ब्रह्मा का अर्द्धांग थे और शतरूपा दूसरा अर्द्धांग थी, जब कि सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री और एक स्वतंत्र देवी थी। ब्रह्मा की काया के खंडित होने और उसमें से मनु तथा शतरूपा के उदय के समय से ही पत्नी को पति की अर्द्धांगिनी कहा जाता है।

मनु और शतरूपा इस पृथ्वी पर प्रकट होने वाले प्रथम मानव (पुरुष) और प्रथम मानवी (स्त्री) थे। वे दोनों स्वायम्भुव थे अर्थात् उनका जन्म किसी मां की कोख से नहीं हुआ था। मनु और शतरूपा ने मैथुन के द्वारा पांच संतानें उत्पन्न कीं—प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र हुए तथा आकृति, देवहूति और प्रसूति नामक तीन कन्याएं। ये पांच बालक इस पृथ्वी पर पिता के संयोग से माता की कोख में ठहरने वाले गर्भ से जन्म लेने वाले प्रथम मानव थे। मनु ने अपनी तीनों कन्याओं का विवाह क्रमशः ब्रह्मा के तीन पुत्रों—रुचि प्रजापति, महर्षि कर्दम तथा दक्ष प्रजापति के साथ किया। मनु के बेटे प्रियव्रत का विवाह विश्वकर्मा प्रजापति की पुत्री के साथ तथा उत्तानपाद का सुरुचि तथा सुनीति नामक दो देव-कन्याओं के संग हुआ। उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव बहुत तपस्वी और ईश्वरपरायण हुए।

इस प्रकार मनु और शतरूपा समूची मानव-जाति के आदि पूर्वज हैं। प्रत्येक मनुष्य उनका ही वंशज है, भले ही वह गोरा हो, पीला, गेहुंआ या काला, स्त्री या पुरुष, ऊंची जाति या नीची जाति का, अमीर या गरीब अथवा पूर्व का या पश्चिम का रहने वाला हो। इससे यह भी सिद्ध होता है कि मनुष्य स्वयं स्रष्टा के अस्तित्व का ही एक अंग है तथा उससे किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है। तभी तो कहा गया है कि ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण अपनी ही छाया के रूप में किया है। ■■

भारत के मिथक-2:शिव के अवतार चन्द्रशेखर

भारतीय मिथकों में त्रिमूर्ति के देवताओं में ब्रह्मा और विष्णु के साथ शिव भी सम्मिलित हैं। इतना ही नहीं शिव भारतीय मिथकों के प्रमुख पात्र हैं। शायद ही किसी ऐसे मिथक की कल्पना की जा सके, जिसमें शिव की कोई न कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका न रही हो। शिव और ब्रह्मा दोनों अपनी सृजनात्मक शक्तियां वैदिककालीन देवता प्रजापति से प्राप्त करते हैं। ऋग्वेद में शिव को रुद्र कहा गया है और उनको मृत्यु के देवता के रूप में चित्रित किया गया है। प्रत्येक युग के अंत में शिव समूची सृष्टि को अपने क्रोध की अग्नि से भस्म कर देते हैं और उस पर यज्ञवेदी की राख छिड़क कर वे उसे फिर से पवित्रता प्रदान करते हैं। इसके बावजूद शिव का तपस्वी रूप उनके रुद्र रूप के साथ घनिष्ठतापूर्वक जुड़ा हुआ है।

शिव सृष्टि के निर्माता और विध्वंसकर्ता दोनों ही हैं। निर्माता के रूप में वे एक महान् प्रेमी की भूमिका ग्रहण कर लेते हैं और उनका प्रतिनिधित्व शिवलिंग करता है, जो उनका प्रमुख प्रतीक ही बन गया है। शिव-मिथकों में शिव का स्वरूप विरोधाभासपूर्ण है। एक ओर उनको नित्य रतिमग्न माना गया है, दूसरी ओर वह परम ब्रह्मचारी हैं और उन्होंने अपने तप से स्वयं कामदेव को भस्म किया है। वह निर्लिप्त हैं और परम साधू भी। यही उनका विरोधाभास है। एक ओर वह कामदेव को भस्म कर डालते हैं, दूसरी ओर देवी पार्वती के संग विवाह के लिए तैयार हो जाते हैं। ब्राह्मण दर्शन में शिव प्रमुखतः तपस्वी हैं और तांत्रिक मत के अनुसार वह मुख्यतः यौन शक्ति के प्रतीक हैं। उनके चरित्र का दोहरा स्वरूप इस मिथक में बहुत प्रमुखता से उभरकर आता है, जिसमें वह चन्द्रशेखर के रूप में मनुष्य-काया में अवतार ग्रहण करते हैं।

चौसर में पराजय

शिव एक बार अपनी धर्मपत्नी पार्वती के साथ चौसर खेल रहे थे। पार्वती ने उन्हें खेल में बुरी तरह पराजित कर दिया। शिव अकेले ही निपट नग्न अवस्था में जंगलों की ओर चले गये। उनके चले जाने के बाद पार्वती निरंतर उन्हीं के ध्यान में खोई रहीं और उनकी कामना करती रहीं। उनके मन को रह-रह कर यह विचार कचोटता था कि जिन शिव को उन्होंने घोर तपस्या के द्वारा प्राप्त किया था, उन्हीं को चौसर के खेल में धोखे से हराकर गंवा दिया। पार्वती ने एक अत्यंत सुंदर स्त्री का रूप धारण किया और शिव के सम्मुख गयी। शिव ने जैसे ही उस रूपसी को

देखा, उनकी समाधि खुल गयी और उनके मन में काम का वेग उत्पन्न हो गया। उन्होंने उसे पकड़ना चाहा परंतु वह अदृश्य हो गयी। यह देखकर शिव मोहित हो गये और इधर-उधर भटकने लगे। कुछ समय बाद उन्हें उस रूपसी का दर्शन पुनः हुआ, जिसका रूप धारण करके पार्वती ने उनकी समाधि भंग की थी। शिव ने उस स्त्री से पूछा, ''तुम कौन हो?'' उसने कहा, ''मैं एक ऐसे पति की तलाश में हूं जो त्रिकालज्ञ हो, स्वच्छंद हो और उत्तेजना से रहित हो।'' शिव बोले, ''मैं ही वह पति हूं, जिसे तुम खोज रही हो।'' परंतु वह स्त्री मुस्करायी और बोली, ''मैं जिस व्यक्ति की खोज में हूं, तुम उससे एकदम भिन्न हो। तुमने एक ऐसी स्त्री को जंगल में छोड़ दिया है, जिसने तुम्हें घोर तप के द्वारा प्राप्त किया था।''

शिव कुछ भी सुनने को तैयार न थे। वे उस रूपसी से बार-बार यही कहते रहे कि तुम मेरी पत्नी बनना स्वीकार कर लो और वह इनकार करती रही तथा उनका मजाक उड़ाती रही कि ''आप तो परम तपस्वी हैं, महान् योगी हैं, काम रहित हैं। आपने तो कामदेव को ही भस्म कर दिया है।'' इस पर शिव ने एक बार फिर उस स्त्री को बलपूर्वक पकड़ने की चेष्टा की परंतु इस बार भी वह बच निकली।

पार्वती शिव को छोड़कर अपनी देह में स्वर्णकांति उत्पन्न करने के लिए तपस्या करने लगी और शिव उनके प्रति प्रेम और काम से पीड़ित रहने लगे। वह उनकी खोज में रहने लगे परंतु उन्हें पा नहीं सके। काम से पीड़ित शिव ने एक दिन देवलोक की परम सुंदरी देवी सावित्री को देख लिया। उनका रूप-रंग पार्वती से मिलता-जुलता था। वे सावित्री पर मोहित हो गये और उनसे प्रेम की याचना करने लगे। सावित्री के इनकार करने पर शिव ने उनको बलपूर्वक पकड़ना चाहा परंतु सावित्री परम साध्वी थीं, उन्होंने शिव को फटकारा। वे बोलीं, ''दूसरे की पत्नी पर हाथ डालने की चेष्टा करने के बजाय तुम्हें अपनी पत्नी से क्षमा-याचना करनी चाहिए। तुमने मनुष्यों की तरह आचरण करके मुझे अपने मोहजाल में फंसाने की चेष्टा की है। अतः मैं तुम्हें शाप देती हूं कि तुम मनुष्य जाति की स्त्री के प्रेम में फंसकर मृत्युलोक में निवास करो।''

सावित्री के इस शाप ने शिव की आंखें खोल दीं। वे लज्जित होकर मेरु पर्वत पर अपने निवास की ओर लौट गये। सावित्री के शाप के कारण उन्हें चन्द्रशेखर के रूप में मनुष्य योनि में जन्म लेना और एक मानवी तारावती के संग विवाह करना पड़ा।

त्रयम्बक अथवा चन्द्रशेखर

एक बार राजा ने पुत्र-प्राप्ति की कामना से शिव की पूजा करके उन्हें प्रसन्न कर लिया। शिव ने राजा को एक फल देकर कहा इसे तीन समान भागों में बांट लेना और प्रत्येक रानी को उसमें से एक भाग खिला देना। राजा ने ऐसा ही किया उसकी तीनों पत्नियों ने वह फल खा लिया। समय आने पर वे तीनों गर्भवती हुईं और नौ मास पश्चात् उनमें से प्रत्येक ने एक बालक के शरीर के एक तिहाई भाग

को जन्म दिया तथा किसी अदृश्य चमत्कार द्वारा वे तीनों भाग अपने-आप ही आपस में जुड़ गये और उनसे एक बालक का निर्माण हुआ। राजा और रानियां बालक को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। बालक तीन माताओं की कोख से जन्मा था, इसलिए उसके बचपन का नाम त्रयम्बक रखा गया। आगे चलकर ज्योतिषियों ने उसका नाम चन्द्रशेखर रखा, क्योंकि बालक के मस्तक पर शिव की भांति चन्द्रमा का चिह्न था।

चन्द्रशेखर के वयस्क होने पर उनके माता-पिता राज-काज उन्हें सौंपकर तपस्या के लिए वन में चले गये। चन्द्रशेखर का विवाह तारावती से हुआ, जो पार्वती की अवतार थीं।

एक दिन तारावती नदी के जल में स्नान कर रही थी। उसी समय एक ऋषि उधर से गुजरे और उनकी दृष्टि तारावती पर पड़ गयी, जिससे उनके हृदय में तारावती के प्रति कामवासना जागृत हो उठी। ऋषि सोचने लगे—यह स्त्री निश्चय ही या तो कोई देवी है या दैत्य-बाला, जिसने काया के सुख भोगने के लिए मानवी का शरीर धारण किया है। ऋषि ने अपने मन की बात तारावती को बतायी और उससे पूछा, ''बोलो, तुम कौन हो—पार्वती या इन्द्र की पत्नी शची?'' तारावती ने उत्तर दिया, ''न मैं पार्वती हूं, न शची। मैं तो मृत्यु-लोक की नारी हूं। मेरे पति का नाम महाराज चन्द्रशेखर है।'' ऋषि का मन तारावती के प्रति कामवासना से अंधा हो गया था। उन्होंने अपने मन की बात उसके सामने रख दी और उसे वचन दिया कि वे उसे दो शक्तिशाली और सुंदर पुत्र प्रदान करेंगे।

तारावती उलझन में पड़ गयी। एक ओर तो एक ऋषि उससे प्रेम की याचना कर रहा था और दो पुत्र देने को तैयार था, दूसरी ओर वह उस ऋषि के साथ समागम के परिणामों से डरती थी। इसके दो कारण थे—पहला तो यह कि वह विवाहिता थी, अतः उसका पातिव्रत्य खंडित हो जाता और दूसरा यह कि ऋषि के साथ समागम से उसे ऋषि की तपस्या भंग करने का पाप लगता। अतः उसने ऋषि से कहा कि ''आप मेरा मोह अपने मन से निकाल दें, क्योंकि इससे आपकी तपस्या भंग हो जायेगी।'' परंतु ऋषि को उस समय कुछ भी नहीं सूझ रहा था। उनके मन में एक ही इच्छा थी कि वे तारावती के साथ समागम करें। उन्होंने कहा, ''तुम मुझे कामदेव के आक्रमण से बचा लो अन्यथा वह मुझे भस्म कर देगा। उस स्थिति में मैं तुम्हें भी अपने शाप द्वारा भस्म कर दूंगा।''

तारावती एक बार को तो भयभीत हुई, परंतु वह अपने पति के प्रति विश्वासघात नहीं करना चाहती थी। अतः उसने अपनी बहन चित्रांगदा को अपने वस्त्र पहनाकर ऋषि के पास भेज दिया। ऋषि को तो मोह ने अंधा कर रखा था। उन्होंने चित्रांगदा को तारावती समझकर उसके साथ सहवास किया और उसे यह वचन दिया कि अपनी तपस्या के बल पर वे उसे परपुरुष-संसर्ग के अपराध से निवृत्त कर देंगे। चित्रांगदा ने ऋषि के दो पुत्रों को जन्म दिया। उन पुत्रों का लालन-पालन ऋषि ने स्वयं किया।

कुछ समय बाद तारावती फिर से नदी में स्नान करने गयी और ऋषि ने उसे जल के भीतर देख लिया। तारावती को देखते ही ऋषि समझ गये कि ''महारानी ने मेरे साथ चाल चली है।'' ऋषि को बहुत क्रोध आया और उन्होंने तारावती को शाप दिया, ''तुमने मेरा अपमान किया है और स्वयं को बहुत सदाचारी और सती-साध्वी मानकर मुझसे अधिक श्रेष्ठ माना है। अत: मैं तुमको शाप देता हूं कि एक दिन भगवान शिव अपनी भयंकर वेशभूषा में तुम्हारे पास आयेंगे और तुम्हारे साथ जबरदस्ती समागम करेंगे। उनसे तुम्हें दो पुत्र प्राप्त होंगे, जिनकी मुखाकृति बंदरों जैसी होगी।''

तारावती का हृदय निर्मल था और वह सचमुच सती-साध्वी थी। उसने ऋषि से कहा, ''मैंने अपने पति चन्द्रशेखर के प्रति जो सच्ची प्रतिज्ञाएं की हैं, मैं उनकी सौगंध खाकर कहती हूं कि मैं स्वप्न में भी उनके अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को अपने शरीर का स्पर्श नहीं करने दूंगी। मेरे पिता ने मुझे पुत्री के रूप में प्राप्त करने के लिए देवी पार्वती के सामने जो प्रतिज्ञाएं की थीं, मैं उनकी भी सौगंध खाती हूं कि मैं सदा अपने पति के प्रति सच्ची रहूंगी।''

ऋषि ने महारानी तारावती की बातें बहुत ध्यानपूर्वक सुनीं और उन्हें समाधि लग गयी। समाधि में उन्हें इस सत्य का दर्शन हुआ कि तारावती के रूप में स्वयं देवी पार्वती अवतरित हुई हैं और चन्द्रशेखर भगवान शिव के अवतार हैं। ऋषि ने आंखें खोलीं और महारानी से क्षमा मांगकर चित्रांगदा तथा अपने दोनों बेटों को साथ लेकर वहां से चले गये। उन्होंने चित्रांगदा को भरपूर सम्मान दिया और विधिवत् पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया।

शिव का आगमन

तारावती का अंत:करण शुद्ध था। वह अपने पति से कभी कुछ न छिपाती थी। उसने ऋषि के मोह के बारे में अपने पति से सब बात कह सुनायी और ऋषि के शाप का भी जिक्र किया। तारावती के मुंह से सारी बात सुनकर चन्द्रशेखर को तारावती की सुरक्षा के बारे में चिंता हुई और उन्होंने अपने राजमहल की छत पर एक ऐसा सुरक्षित कक्ष बनवाया, जहां कोई भी अजनबी नहीं पहुंच सकता था। चन्द्रशेखर माया के वश में थे, जिसके कारण वह यह नहीं समझ पा रहे थे कि वह स्वयं ही शिव के अवतार हैं। वह यह भी भूल गये कि शिव जैसे शक्तिशाली देवता को राजमहल के किसी भी कक्ष में पहुंचने से कैसे रोका जा सकता है?

एक दिन तारावती अपने कक्ष के खुले आंगन में अपने पति का चिंतन करती हुई भगवान शिव और उनकी अर्द्धांगिनी देवी पार्वती की पूजा कर रही थी। अचानक उसके चित्त में यह ज्ञान उत्पन्न हो गया कि शिव और चन्द्रशेखर एक ही हैं। उसे दोनों में कोई भेद ही दिखाई नहीं पड़ रहा था। ठीक उसी समय भगवान शिव पार्वती सहित स्वयं वहां आ पहुंचे। शिव ने पार्वती से कहा कि ''मानवी के रूप में तारावती तुम्हारा ही अवतार है। मैं तारावती के साथ सहवास द्वारा उसकी

कोख से दो पुत्रों को जन्म देना चाहता हूं, अतः तुम तुरंत सूक्ष्म रूप ग्रहण करके उसकी काया में प्रवेश कर जाओ।''

पार्वती ने शिव की आज्ञा का पालन किया और शिव कापालिक के वेश में—गले में मुंडों की माला, कटि में मृगचर्म और दुर्गन्धयुक्त शरीर—तारावती के पास जा पहुंचे। तारावती में तो पहले ही पार्वती की आत्मा प्रवेश कर चुकी थी। उसने कापालिक को रोकने के बजाय आनंदपूर्वक उनका स्वागत किया और बाद में अपनी कोख से बंदर की मुखाकृति वाले दो पुत्र उत्पन्न किये।

तारावती के संग सहवास और उसकी कोख से दो पुत्र उत्पन्न करन के बाद शिव पार्वती को लेकर मेरु पर्वत पर लौट गये। उनके जाने के बाद तारावती को होश आया और उसके मन में यह देखकर घोर ग्लानि उत्पन्न हुई कि उसने कापालिक के साथ सहवास के द्वारा दो पुत्रों को जन्म दिया है। उसे ऐसी ग्लानि-पूर्ण मानसिक अवस्था में देखकर शिव पुनः उसके सामने प्रकट हुए और उससे बोले कि ''मेरे साथ सहवास के कारण तुम्हें अपने मन में किसी प्रकार की ग्लानि नहीं रखनी चाहिए। मैं शिव हूं। तुमने ऋषि के सामने यह सौगंध खाई थी कि तुम चन्द्रशेखर के अतिरिक्त किसी भी पुरुष को अपने शरीर का स्पर्श नहीं करने दोगी। तुम्हारी वह सौगंध भंग नहीं हुई है क्योंकि मैं ही शिव हूं और मैं ही चन्द्रशेखर। अपने मन से दुःख और ग्लानि को निकाल दो।'' उस समय तो तारावती का समाधान हो गया परंतु शिव के चले जाने के बाद तारावती को फिर से मोह हो गया और वह इस घटना के बारे में सोच-सोचकर कभी दुःख से और कभी क्रोध से रोने लगती थी।

सायंकाल जब चन्द्रशेखर राजमहल में लौटे तो तारावती ने समूची घटना विस्तारपूर्वक उन्हें कह सुनायी। चन्द्रशेखर यह सोचकर चकित थे कि यह सब क्या और कैसे हुआ? उनके मन में पक्का विश्वास था कि शिव अपनी दैवी पत्नी को सच्चे हृदय से प्रेम करते हैं और वे पार्वती के सिवाय किसी भी अन्य स्त्री के साथ प्रेम नहीं कर सकते। उनके मन में यह विचार आया कि ऋषि ने तारावती को जो शाप दिया था, शायद वह बहुत प्रभावशाली था। हो सकता है कि उस शाप को फलीभूत करने के लिए शिव के वेश में किसी दैत्य को भेजा गया हो, जिसने तारावती का शील भंग करके उसकी कोख से दैत्यों सरीखे दो बालकों को जन्म दिया है।

राजा इसी प्रकार के विचारों में खोया हुआ था कि विश्व के सृष्टा ब्रह्मा की दैवी पुत्री सरस्वती वहां आ पहुंची और उन्होंने राजा को यह विश्वास दिलाया कि तारावती के संग समागम के लिए शिव स्वयं पधारे थे और दोनों बच्चे शिव की ही संतान हैं। यह सुनकर चन्द्रशेखर का मानसिक तनाव समाप्त हो गया और उन्होंने उन दोनों बच्चों को अपनी संतान की भांति पाल-पोसकर बड़ा किया। कुछ समय बाद उनके महल में नारद आये और उन्होंने राजा से कहा, ''तुम शिव का अवतार हो तथा सावित्री के शाप के कारण स्वयं पार्वती ने तारावती के रूप में जन्म लिया
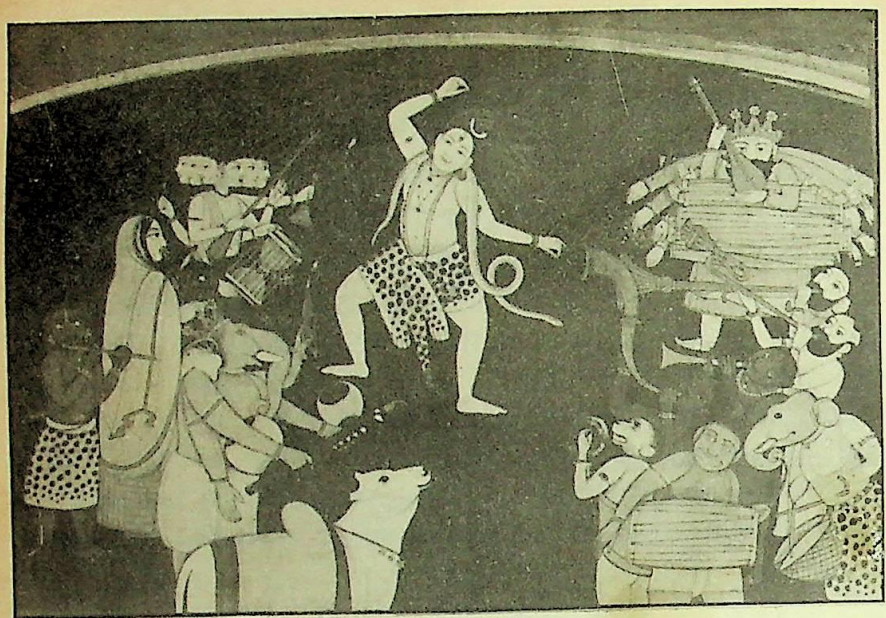
वैताल, भैरव तथा अपने अन्य गणों के साथ नृत्य करते शिव

है।'' नारद ने उन दोनों को उनकी वास्तविकता का बोध कराया, जिसके फलस्वरूप दोनों के मन से ग्लानि निकल गयी।

चन्द्रशेखर और तारावती, दोनों ही मनुष्य योनि में होने के कारण अपने सहज चरित्र को नहीं छोड़ पाये। समय जैसे-जैसे बीतता गया, चन्द्रशेखर के मन में यह भय घर करता गया कि बंदर की मुखाकृति वाले दोनों बालक उसके तीन सगे बेटों को हानि पहुंचा सकते हैं। अतः उन्होंने अपनी संतान के प्रति अधिक स्नेह का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया।

राजा का पक्षपातपूर्ण व्यवहार देखकर शिव के पुत्रों के मन मे ग्लानि उत्पन्न हुई और वे राजमहल छोड़कर तपस्या के लिए वन में चले गये। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें दर्शन दिये तथा अमरत्व प्रदान किया। शिव के उन पुत्रों के नाम वैताल और भैरव हैं तथा ये दोनों शिव के गणों के नायक हैं। ■■

भारत के मिथक-3: वेदवती की प्रतिज्ञा

क्षीर सागर के आदिजल में भगवान विष्णु शेषनाग की शैय्या पर आनंदपूर्वक सोये हुए थे। एक बार उनके मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि "मैं एक हूं, अनेक हो जाऊं।" तभी उनकी नाभि से एक कमल नाल उत्पन्न हुआ, जिसके फूल में से ब्रह्मा का जन्म हुआ, जिन्हें प्रजापति कहा गया। इन प्रजापति ने समूची सृष्टि का निर्माण किया। ब्रह्मा ने देवताओं की सृष्टि करने के बाद जल के जीव उत्पन्न किये परंतु उनके पास खाने के लिए कुछ न था, अतः वे ब्रह्मा के पास गये और उन्होंने उनसे भोजन जुटाने की प्रार्थना की। आवश्यक प्रबंध करने के बाद ब्रह्मा ने अपनी संतान से कहा कि उन्हें जल की रक्षा करनी चाहिए। यह सुनकर जल के जीवों में से कुछ ने कहा कि वे जल की उपासना करेंगे और दूसरों ने प्रजापति को जल की रक्षा का वचन दिया। इस पर प्रजापति ब्रह्मा ने जल के जीवों को दो जातियों में विभाजित कर दिया। जल की उपासना करने वालों को उन्होंने यक्ष कहा और जल की रक्षा करने वालों को राक्षस।

यक्ष भगवान विष्णु को बहुत प्रिय थे। वे भगवान शिव के तपस्वी स्वरूप के भी उपासक थे। इसके विपरीत राक्षस भगवान विष्णु से ईर्ष्या करते थे और भगवान शिव के रुद्र रूप के उपासक थे। ब्रह्मा ने जिन राक्षसों को रक्षा का भार सौंपा था, वे सत्ता के मद में शीघ्र ही अराजक बन गये और उन्होंने सृष्टि के जीवों को सताना शुरू कर दिया, विशेषतः वे भगवान विष्णु के उपासकों तथा अन्य सृजनात्मक कार्यों में लगे हुए यक्षों को यंत्रणा देने लगे।

यक्षों में ब्राह्मण वर्ण के महर्षि पुलस्त्य अपने जमाने के एक महान् और विख्यात ऋषि हुए। पुलस्त्य का बेटा विश्रवा भी ऋषि हुआ। विश्रवा का विवाह महर्षि भारद्वाज की पुत्री से हुआ, जिसकी कोख से उनके पुत्र वैश्रवण का जन्म हुआ, जो बाद में कुबेर के नाम से विख्यात हुए और यक्षों के कोषाध्यक्ष बने। ब्रह्मा ने कुबेर को इन्द्र, वरुण और यम के समान लोकपाल की पदवी प्रदान की।

कुबेर के पिता विश्रवा ने कुबेर को लंका का राज्य सौंपा। लंका का निर्माण ब्रह्मा के पुत्र विश्वकर्मा प्रजापति ने राक्षसों के रहने के लिए किया था परंतु राक्षस विष्णु के भय से लंका छोड़कर भाग गये। द्वीप पर कुबेर का शासन स्थापित हो जाने पर राक्षस कुबेर की अनुमति से लंका में लौट आये और उन्होंने कुबेर को अपने राजा के रूप में स्वीकार कर लिया। किन्तु वास्तव में राक्षस कुबेर के स्थान

पर किसी राक्षस को ही अपना राजा बनाना चाहते थे। राक्षसों का एक सरदार सुमाली लंका पर राक्षसों का आधिपत्य पुनर्स्थापित करने के लिए बहुत उत्सुक रहता था। उसने कुबेर का तख्ता पलटने के लिए परिश्रमपूर्वक एक योजना तैयार की।

सुमाली ने अपनी युवा और सुंदर बेटी कैकसी से कहा कि वह विश्रवा मुनि के पास जाकर उन्हें पति के रूप में ग्रहण करके अपनी कोख से कुबेर के समान शक्तिशाली और धनवान संतान उत्पन्न करे। पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके कैकसी मुनि के आश्रम पर जा पहुंची। उस समय सूर्य अस्ताचल को जा रहा था। मुनि संध्या-वंदन और यज्ञ की तैयारी कर रहे थे। कैकसी मुनि के समीप जाकर खड़ी हो गयी और उसने उन्हें अपना परिचय देकर उनसे कहा, "मैं अपने पिता के आदेश पर आपके पास आयी हूं। आप ज्ञानी पुरुष हैं, मेरे यहां आने का प्रयोजन आप अपने ज्ञान-चक्षुओं द्वारा जान लीजिये और मेरी मनोकामना इसी समय पूरी कीजिये।" मुनि विश्रवा ने कैकसी को समझाया, "मैं तुम्हारे मन की बात समझ गया हूं, परंतु तुम्हें उपयुक्त समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। वह समय आने पर मैं तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लूंगा। यह संध्या काल है। यदि इस समय मैं तुम्हारी कोख में गर्भ स्थापित करूं तो उससे दैत्यों का जन्म होगा, जो कुरूप, स्थूल और उग्र स्वभाव वाले होंगे।" परंतु कैकसी के मन में न संयम था, न धैर्य। मुनि ने जब यह देखा तो उन्होंने समझ लिया कि निश्चय ही यह स्त्री निशाचरों की मां बनना चाहती है। उन्होंने अपने चरणों पर पड़ी हुई कैकसी को उठाया और उसकी कोख में अपना वीर्य स्थापित कर दिया। अब कैकसी को मुनि का वचन याद आया और वह यह सोचकर विकल हो गयी कि उसकी संतान कुरूप तथा अमंगलकारी होगी। उसने फिर से मुनि के चरणों में गिरकर अपनी संतान के लिए उनका आशीर्वाद मांगा। विश्रवा ने कहा, "हे सुमुखि! तुम्हारी अन्य संतान के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन तुम्हारे सबसे छोटे पुत्र के लिए मेरा आशीर्वाद है कि वह अपने पिता की परंपरा का पालन करेगा।"

समय आने पर कैकसी की कोख से चार बालकों ने जन्म लिया। सबसे पहले दस सिर, बीस भुजाओं और मुख से बाहर निकली हुई दो दाढ़ों वाला पुत्र हुआ। उसका नाम दशग्रीव रखा गया, जिसे बाद में भगवान शिव ने रावण नाम दिया। दूसरा बालक भी पुत्र ही था, उसका शरीर बहुत भारी-भरकम था। उसका नाम कुम्भकरण रखा गया। तीसरी संतान बेटी थी, जिसका नाम रखा गया—शूर्पणखा। कैकसी का चौथा बालक फिर से पुत्र था। इस बालक के जन्म के समय देवताओं ने प्रसन्न होकर आकाश से फूल बरसाये और गंधर्वों ने नाना प्रकार के बाजे बजाये। कैकसी के इस बेटे का नाम विभीषण रखा गया।

कुबेर की पराजय

रावण के बड़ा होने पर उसके मन में अपने बड़े भाई कुबेर के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। कुबेर यक्ष था और रावण मुनि का पुत्र होने के बावजूद राक्षस।

एक ओर तो उसकी मां राक्षस कुल की थी, दूसरी ओर वह संध्या के समय अपनी मां की कोख में आया था। उसके स्वभाव में अपने पिता का कोई गुण न था। वह कुबेर से लंका का राज्य प्राप्त करना चाहता था। उसने कुबेर के पास यह संदेश भेजा कि "लंका का राज्य मुझे सौंप दिया जाये।" कुबेर को कोई आपत्ति न थी, उन्होंने तुरंत लंका का राज्य छोड़ दिया और कैलास जाकर दूसरा राज्य स्थापित कर लिया। इस प्रकार रावण लंका का राजा बन गया। रावण को कुबेर से धन और सत्ता दोनों की प्राप्ति हुई। उन्हें पाकर उसमें दंभ उत्पन्न हो गया और उसके मन में कुबेर के दूसरे राज्य पर भी अधिकार जमाने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। उसने शीघ्र ही कुबेर पर चढ़ाई करके उसके साथ घोर युद्ध किया, जिसमें कुबेर पराजित हो गया। रावण कुबेर का पुष्पक विमान तथा बहुत सी संपत्ति लेकर लंका की ओर लौट चला। पुष्पक पर सवार होकर वह कहीं भी आ-जा सकता था।

रावण के मन में दिग्विजय की इच्छा उत्पन्न हुई और एक दिन वह उस शरवन में जा पहुंचा, जिसमें भगवान शिव के पुत्र योगीराज कार्तिकेय का जन्म हुआ था। वहां पहुंचने पर पुष्पक की उड़ान स्वतः थम गयी। यह देखकर रावण क्रोध से तिलमिला उठा। वह विमान से उतरा और पास की छावनी में जा पहुंचा। वास्तव में वह स्थान भगवान शिव और उनके गणों का निवास स्थान था। द्वार पर ही उसकी भेंट नंदीश्वर से हुई। नंदीश्वर ने उसे शिव के आश्रम में प्रवेश करने से रोका, परंतु रावण ने एक न सुनी और वह आगे बढ़ता चला गया। अब वह वहां पहुंच गया जहां मेरु पर्वत पर भगवान शिव विराजमान थे। उसने समझ लिया कि इस पर्वत की चुंबकीय शक्ति के कारण ही पुष्पक विमान आगे नहीं बढ़ पाया। अतः उसने निश्चय किया कि पहाड़ को जड़ से उखाड़कर दूर फेंक दिया जाये। उसने पहाड़ को अपनी भुजाओं से कसकर बांध लिया और इतनी जोर से हिलाया कि भगवती पार्वती और शिव के गण डर गये। किन्तु शिव तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने अपने पांव के अंगूठे से मेरु पर्वत को तनिक सा दबा दिया।

मेरु फिर से स्थिर हो गया और रावण की भुजाएं उसके नीचे दब गयीं। रावण दर्द के मारे बेहाल हो गया तथा चीखने-चिल्लाने लगा। अपने राजा को इस कष्ट में फंसा देखकर रावण के साथ आये उसके वरिष्ठ मंत्रियों ने उससे कहा, "हे राजन! आप भगवान शिव की स्तुति करें। शिव क्षणभर में ही प्रसन्न हो जाते हैं। आपके कष्ट का निवारण वे ही कर सकते हैं।" रावण के सामने भी इसके सिवाय कोई दूसरा मार्ग न था। उसने भगवान रुद्र की स्तुति आरंभ कर दी, जिसे सुनकर वे प्रसन्न हो गये और उन्होंने रावण की भुजाएं मुक्त कर दीं। भगवान शिव ने रावण से वरदान मांगने को भी कहा। रावण ने भगवान शिव से कहा कि "मैं अपनी आयु का जो भाग जी चुका हूं, वह मेरी शेष आयु में फिर से जुड़ जाये तथा आप मुझे अपने शस्त्रों में से एक अपराजेय शस्त्र प्रदान करें।" शिव ने उसे वरदान दिया और उसके साथ ही अपनी शक्तिशाली चन्द्रहास नामक तलवार भी दे दी।

वेदवती से भेंट

शिवजी की प्रसन्नता प्राप्त करके रावण हिमालय के क्षेत्र में घूमने निकल गया। वहां एक दिन उसने एक युवा तपस्विनी को देखा, जिसका चेहरा अत्यंत तेजपूर्ण था। उस युवती को देखते ही रावण के हृदय में कामवासना जाग उठी। वह जोर से हंसा और उसने उस छोटी-सी उम्र में उस युवती की तपस्या पर व्यंग्य करते हुए कहा कि ''यह आयु तो जीवन का आनंद भोगने की है, तपस्या की नहीं।''

युवती ने रावण को अभ्यागत जानकर उसका सत्कार किया और उसके पूछने पर अपना परिचय देते हुए कहा, ''मैं भगवान बृहस्पति के पुत्र कुशध्वज ऋषि की पुत्री हूं। मेरे पिता परम तेजस्वी थे। जन्म के समय मुझे वेद कंठस्थ थे, इसलिए मेरा नाम वेदवती रखा गया। जब मैं बड़ी हुई तो देवता गंधर्व, राक्षस, यक्ष और नाग सभी मेरे पिता के पास आये और उन्होंने उनसे मेरी याचना की, परंतु मेरे पिता ने उन सबको लौटा दिया। उनके मन में यह इच्छा थी कि वे देवताओं के अधिपति और त्रिलोक के स्वामी भगवान विष्णु को अपना दामाद बनायें। यह बात जब दैत्यों के राजा शम्भू के कानों में पड़ी तो उसने चोरी से रात के समय मेरे सोये हुए पिता की हत्या कर दी। मेरे पिता की मृत्यु पर मेरी मां को बहुत गहरा आघात लगा और वे अपने पति के शव को सीने से चिपकाकर उनकी चिता पर जा बैठीं तथा उन्होंने अपने सतीत्व की शक्ति द्वारा स्वयं अग्नि प्रकट करके अपनी इहलीला समाप्त कर ली। मैंने उसी समय यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि भगवान नारायण के प्रति मेरे पिता का जो भाव था, मैं उसकी पूर्ति करूंगी। मैं अपने हृदय में नारायण की पूजा करती हूं। मैं भगवान विष्णु को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए ही तपस्या कर रही हूं। नारायण ही मेरे पति हैं। कोई भी अन्य पुरुष मुझे अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त करने की कल्पना नहीं कर सकता। मैंने आपको पहचान लिया है। आप प्रख्यात महर्षि पुलस्त्य के पौत्र हैं। इस विश्व के तीनों लोकों में जो कुछ भी विद्यमान है, मैं उसे अपने तप के द्वारा जानती हूं।''

यह सुनकर रावण पुष्पक विमान से उतरा। वह कामदेव के बाणों से घायल हो चुका था तथा उसका ज्ञान नष्ट हो गया था। उसने वेदवती से कहा, ''मुझे पति के रूप में स्वीकार कर लो,'' तथा विष्णु की निंदा भी की। यह सुनकर वेदवती वे उसे फटकारा और विष्णु की प्रशंसा की। दम्भी रावण क्रोध से तिलमिला उठा और उसने आगे बढ़कर वेदवती के बालों को अपने हाथ में पकड़ लिया।

वेदवती आग-बबूला हो गयी। उसने अपने हाथ से ही अपने बालों को इस प्रकार काट डाला मानो वह तलवार हो। वह उग्र हो उठी, उसने तुरंत भीषण अग्नि उत्पन्न कर दी तथा वह रावण से बोली, ''हे तुच्छ राक्षस! तूने मेरा अपमान किया है। अब मैं इस शरीर को नहीं रखूंगी। मैं अपने तप द्वारा प्रज्वलित इस अग्नि में तेरी आंखों के सामने ही प्रवेश कर जाऊंगी। तू घोर अधम है। तुझे मरवाने के लिए मैं फिर से जन्म लूंगी। मैं तुझे शाप नहीं दे सकती क्योंकि इससे मेरी तपस्या क्षीण

वेदवती का शाप आज तक रावण का पीछा कर रहा है।

हो जायेगी। यदि मैंने अपने सत्य की रक्षा की है तो मेरा जन्म एक अयोनिजा कन्या के रूप में होगा और मुझे ज्ञानी तथा महात्मा स्वभाव का पिता प्राप्त होगा।''

इतना कहकर वेदवती अपने द्वारा प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश कर गयी। उसकी चिता पर देवताओं ने आकाश से फूल बरसाये।

पुनर्जन्म

वेदवती ने अपनी इच्छा के अनुसार पुनर्जन्म प्राप्त किया। उसने न तो किसी स्त्री के गर्भ में प्रवेश किया, न योनि से ही जन्म लिया। एक कमल-नाल के गर्भ में निवास करके वह कमल के फूल में से उत्पन्न हुई। इस नये जीवन में भी वह पहले ही भांति अत्यंत सुंदर और तेजस्विनी थी।

रावण ने इस जन्म में भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। वह उसे कमल के फूल में से निकालकर अपने घर ले गया और वहां उसनें अपने एक मंत्री को उसके लक्षणों की परीक्षा का काम सौंपा। वह मंत्री इस कार्य में बहुत कुशल था और उसने कन्या के लक्षण देखकर रावण से कहा, ''यदि यह कन्या तुम्हारे राजमहल में रही तो तुम बरबाद हो जाओगे और तुम्हारा जीवन भी समाप्त हो जायेगा।''

यह सुनकर रावण ने उस कन्या को समुद्र में फिकवा दिया। समुद्र की लहरों ने उसे तट पर ले जाकर रख दिया, जहां धरती माता ने उसे संभाल लिया। वह उसे

अपनी गोदी में लेकर मिथिला के राजा जनक के यज्ञ-मंडप के मध्यवर्ती भू-भाग में छिप गयी।

वर्षा ऋतु के आगमन पर राजा जनक जब अपने हल से उस भूमि को जोतने लगे, तब भूमि के भीतर से वह कन्या प्रकट हुई। हल द्वारा भूमि पर खींची गयी रेखा अर्थात् सीमा में से उत्पन्न होने के कारण कन्या का नाम सीता रखा गया। यह सीता और कोई नहीं वेदवती ही थी। अग्नि में प्रवेश करने से पहले वेदवती ने दो प्रतिज्ञाएं की थीं—भगवान विष्णु के साथ विवाह की प्रतिज्ञा और रावण को मरवाने की प्रतिज्ञा। सीता के रूप में पुनर्जन्म लेने पर वेदवती ने अपनी दोनों प्रतिज्ञाएं पूर्ण की।

पृथ्वी में से प्रकट होने के बाद राजा जनक के घर में सीता का लालन-पालन अत्यंत प्रेम-पूर्वक हुआ। राजा जनक सीता को अपनी बेटी मानकर उसे बहुत प्यार करते थे। महाराजा जनक ने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि वे अपनी बेटी सीता का विवाह शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले पुरुष के साथ करेंगे। यदि रावण ने भी सीता के स्वयंवर में भाग लेने का निश्चय कर लिया होता, तब सीता एक बार फिर रावण के चंगुल में फंस सकती थी, क्योंकि यह बहुत संभव था कि भगवान शिव रावण के लिए अपने धनुष को हल्का कर देते और रावण उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने में सफल हो जाता परंतु रावण स्वयंवर में भाग लेने नहीं गया।

सीता के रूप में अवतरित वेदवती को अंततः अपनी दूसरी प्रतिज्ञा अर्थात् रावण के नाश की प्रतिज्ञा पूरी करने का अवसर प्राप्त हो ही गया। रावण ने सीता से बचने के बजाय एक चोर की भांति पंचवटी से उनका अपहरण कर लिया और अपनी प्रजा तथा स्वयं अपने विनाश का मार्ग प्रशस्त किया। वेदवती का प्रतिशोध पूरा हुआ, फिर भी वेदवती का शाप आज तक रावण के सिर पर मंडरा रहा है। रावण आज भी घृणित है। भारत के कोने-कोने में प्रतिवर्ष रावण की हत्या की जाती है और उसे आग में जलाया जाता है। मानव जाति के इतिहास में किसी भी अन्य अपराध की इतनी निंदा नहीं हुई जितनी सीता अर्थात् वेदवती के प्रति रावण की कामवासना की और कोई भी शाप इतना शक्तिशाली तथा कालजयी नहीं रहा जितना कि रावण को दिया गया वेदवती का शाप, जो पिछले पांच हजार वर्षों से रावण के भूत तक का पीछा कर रहा है। ■■

यूनानी मिथक-1: जीयस

यूनानी सभ्यता अत्यंत प्राचीन है और उसकी जड़ें पुरा-ऐतिहासिक काल में खोजी जा सकती हैं। मिथकों की दृष्टि से यह सभ्यता बहुत समृद्ध है। यूनान के मिथक विश्व भर में लोकप्रिय रहे हैं। जीयस, जिसे आर्यों ने द्यौस कहा, प्रथम यूनानी देवता है, जिसने पूर्ववर्ती देवताओं का वर्चस्व समाप्त करके एक नई देव-श्रृंखला स्थापित की। यह देव-श्रृंखला ही सही अर्थ में यूनानी धर्म का आधार बनी।

यूनानियों के मन में यह धारणा थी कि आरंभ में ब्रह्मांड में केवल रिक्तता थी अर्थात् शून्य था। इस शून्य में से तीन अमर देवों का उदय हुआ—जीया अर्थात् भूमि माता, टारटरस अर्थात् पाताल लोक का स्वामी और ईरोस अर्थात् प्रेम का देवता, जिसने समूची दैवी और सांसारिक सृष्टि को उदय की प्रेरणा दी।

पुरुष-संग के बिना ही जीया ने यूरेनस को जन्म दिया। यूरेनस आकाश का देवता बना और जीया ने अपने इस पुत्र को पति के रूप में स्वीकार कर लिया। इससे पहले जीया ने ओरिया अर्थात् पर्वत और कोन्टस अर्थात् समुद्र को भी जन्म दिया।

भूमि माता जीया ने यूरेनस के संयोग से छः संतानें उत्पन्न कीं—तीन दैत्य, जिनमें से प्रत्येक के पचास सिर और सौ भुजाएं थीं तथा तीन साइक्लोप, जिनके माथे के बीचों-बीच एक-एक आंख थी। साइक्लोप बहुत कुशल दस्तकार थे। उन्होंने आगे जाकर ओलिम्पस पर्वत पर देवताओं के लिए महलों का निर्माण किया। यूरेनस और जीया के यह छहों बच्चे अमर थे। यूरेनस को अपने बच्चों से ईर्ष्या हो गयी और उन्हें अपने से अधिक शक्तिशाली देखकर उसके मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि वे उसके हाथ से पृथ्वी का शासन छीन लेंगे। अतः उसने उनमें से प्रत्येक को उसके जन्म के समय ही भूमि माता जीया के भीतर धकेल दिया। प्रत्येक बालक नौ दिन और नौ रात पृथ्वी के भीतर ही भीतर धंसता चला गया और दसवें दिन टारटरस देवता के राज्य पाताल लोक में जा पहुंचा। यूरेनस ने अपने किसी भी बच्चे को सूर्य का प्रकाश नहीं देखने दिया।

भूमि माता जीया अपने पति यूरेनस के इस बर्बर कार्य से बहुत अप्रसन्न और दुःखी हुई। वह अपनी संतान को वापस अपने पास बुलाना चाहती थी। अतः वह यूरेनस से बदला लेने की उपयुक्त घड़ी की प्रतीक्षा करती रही। जीया और यूरेनस की जोड़ी ने तेरह अन्य अमर बालक पैदा किये, जो टाइटन कहलाये। टाइटनों में

सबसे छोटा क्रोनस एक साहसी देवता था और अपने पिता यूरेनस की भांति बर्बर भी। क्रोनस ने जब अपनी मां से अपने पिता यूरेनस की बर्बरता की कहानी सुनी तो उसने पिता के विरुद्ध मां जीया की सहायता करने का वचन दिया। जीया ने क्रोनस को यूरेनस के विरुद्ध संघर्ष में इस्तेमाल करने के लिए पत्थर का हंसिया शस्त्र प्रदान किया। क्रोनस को जीया के उन छः अमर बालकों की चिंता न थी, जिन्हें यूरेनस ने पाताल लोक में नजरबंद कर रखा था। यूरेनस की हत्या के लिए जीया द्वारा किये गये षड्यंत्र को क्रोनस ने एक ऐसे उपयुक्त अवसर के रूप में स्वीकार किया, जिसके द्वारा वह अपने पिता के स्थान पर स्वयं देवताओं का राजा बन सकता था।

एक रोज आधी रात के समय जब यूरेनस समुद्र तट पर सोया पड़ा था, पास की झाड़ियों में छुपा हुआ क्रोनस उनमें से निकल आया और उसने तेजी से लपककर अपने पिता के गुप्त अंग काटकर उनको समुद्र में फेंक दिया। यह कार्य उसने चांद के उजाले में पत्थर के हंसिये की मदद से किया। अब उसने अपने पिता से कहा कि "तुम्हारा राज अब समाप्त हो गया है और विश्व के शासन की बागडोर मैंने अपने हाथों में संभाल ली है।" यूरेनस ने क्रोनस के आगे चुपचाप आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार क्रोनस आकाश का देवता बन गया, लेकिन जब उसकी मां ने उसे दैत्य और साइक्लोप बंधुओं को पाताल से पृथ्वी पर लाने का आदेश दिया, तब उसने वैसा करने से इनकार कर दिया। यहां यह बात बहुत दिलचस्प है कि क्रोनस ने अपने पिता यूरेनस के जिन गुप्त अंगों को समुद्र में फेंक दिया था, उनसे एफ्रोडाइट का जन्म हुआ, जिसे रोम में वीनस अर्थात् कामदेवी कहा गया। वह सौंदर्य, प्रेम और कामवासना की प्रतीक मानी जाती है।

क्रोनस : यूरेनस के पदचिह्नों पर

क्रोनस ने अपनी बहन रिया के संग विवाह कर लिया। वह रिया को प्रेम करता था परंतु उससे संतान उत्पन्न नहीं करना चाहता था क्योंकि उसकी माता जीया ने उससे अप्रसन्न होकर यह भविष्यवाणी कर दी थी कि उसका सिंहासन भी उसके बेटे उससे उसी प्रकार छीन लेंगे, जिस प्रकार उसने अपने पिता का सिंहासन छीना है। जीया उससे इस कारण अप्रसन्न थी कि उसने अपने पिता से राज्य छीन लेने के बाद भी पाताल लोक में बंदी अपने भाइयों को मुक्त कराने से इनकार कर दिया था।

समय आने पर रिया की कोख से बेटी का जन्म हुआ, जिसे बाद में हेस्तिया नाम से पुकारा गया। रिया लड़की को गोद में लेकर क्रोनस के पास गयी। लड़की को देखते ही क्रोनस के मस्तिष्क में जीया की भविष्यवाणी गूंजने लगी और उसने उसे समाप्त करने के लिए अपने मुंह में रखकर भीतर सटक लिया। उसने इतना तक नहीं सोचा कि यह बेटा नहीं बेटी है और इससे उसे कोई डर न था, लेकिन वह तनिक-सा भी खतरा मोल नहीं लेना चाहता था।
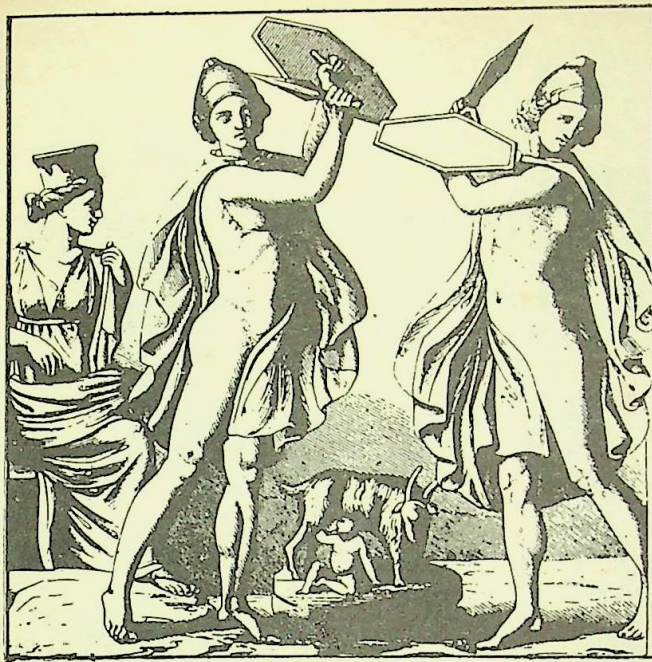
जीया (कुर्सी पर) की अध्यक्षता में परियों द्वारा जीयस की रक्षा। पृष्ठभूमि में जीयस बकरी का दूध पी रहा है।

रिया ने एक-एक करके चार अन्य बालकों को जन्म दिया—दिमित्र, हेरा, हेड्स और पोसीडोन। क्रोनस हेस्तिया की भांति उन चारों को उनके जन्म के समय ही निगल गया। यह देखकर रिया बहुत परेशान हुई और अपने बच्चों के लिए शोक करने लगी। वह अपनी मां जीया के पास गयी और उसने इस मामले में उससे मदद मांगी। जीया ने रिया से कहा कि तेरी कोख में इस समय एक लड़का है और यह लड़का ही क्रोनस के समस्त अत्याचारों से तुझे मुक्ति दिलायेगा। जीया ने उसे सलाह दी कि तू क्रीट में डिक्टे पर्वत के ढलान पर बनी गुफा में छुपकर अपने बेटे को जन्म दे। जीया ने उससे वायदा किया कि बेटे को जन्म देने के बाद जब रिया बेटे को वहीं छोड़कर क्रोनस के पास लौट आयेगी तो जीया उसकी देखभाल के लिए परियों को नियुक्त कर देगी, जो उसे बकरी का दूध पिलाकर पाल लेगीं।

रिया ने अपनी मां के परामर्श के अनुसार कार्य किया और क्रोनस के पास लौटने पर उसने एक पत्थर को बालक के कपड़ों में लपेटा और उसे क्रोनस को देकर कहा, "लो, यह तुम्हारा बेटा है।" रिया के मुंह से यह सुनकर क्रोनस विक्षिप्त-सा हो गया। उसने उस पत्थर को अपने हाथों में लिया, सीने से लगायां और मुंह में रखकर सटक गया। वह यह सोचकर प्रसन्न था कि उसने एक बार फिर भाग्य देवता को पराजित कर दिया है।

क्रोनस को यह मालूम ही न था कि उसका एक बेटा उसके चंगुल से बच निकला है और उसे क्रीट में परियां पाल रही हैं। रिया ने उस बेटे का नाम जीयस रखा। जीयस के बड़ा हो जाने पर रिया ने उसे अपने पास बुला लिया और क्रोनस के

रिया ने एक पत्थर को बालक के कपड़ों में लपेटकर क्रोनस को सौंप दिया। क्रोनस उसे मुंह में रखकर सटक गया।

उदर से अपने अन्य बालकों को वापस निकालने तथा आकाश देवता के रूप में उसकी सत्ता छीनने के लिए जीयस के साथ मिलकर एक षड्यंत्र रच डाला। एक दिन जब क्रोनस ने रिया से पेय पदार्थ मांगा तो रिया ने उसे एक पात्र थमा दिया। क्रोनस द्वारा दोबारा पेय मांगने पर जीयस ने उसे दूसरा पात्र पकड़ाया। जीयस के हाथ का पेय पीने के बाद क्रोनस के पेट में अजीब सी हलचल होने लगी और उसको उलटियां लग गयीं। सबसे पहले उसके पेट से पत्थर निकला और उसके बाद एक-एक करके पांच बालक, जो पूरे वयस्क हो चुके थे।

अब रिया ने क्रोनस को जीयस का परिचय दिया और उससे कहा कि यह तुम्हारा बेटा है। तुम भाग्य देवता को धोखा नहीं दे सके और तुम्हारा एक बेटा तुम्हें देवताओं के राजा के पद से हटाकर स्वयं वह पद ग्रहण करने के लिए उपस्थित हो गया है। इस पर क्रोनस ने जीयस को युद्ध के लिए ललकारा।

क्रोनस की ललकार सुनकर जीयस उलझन में पड़ गया। देवता अर्थात् जीयस और उसके भाई-बहन तथा टाइटन अर्थात् क्रोनस और उसके भाई-बहन शक्ति में एक-दूसरे के बराबर थे। अतः जीयस वर्षों तक लड़ते रहकर भी उससे नहीं जीत सकता था। इस समस्या को सुलझाने के लिए जीया ने अपने पोते जीयस से कहा कि तुम अपने छः चाचाओं को पाताल लोक से वापस ले आओ और उनकी मदद से अपने पिता के विरुद्ध युद्ध जीत लो।

जीयस ने उसकी सलाह मान ली। वह टारटरस के देश में गया और वहां से अपने चाचाओं को वापस ले आया। इसके बाद देवताओं और टाइटनों के बीच वह देव-दानव युद्ध हुआ, जो अपने-आप में एक गाथा बन गया। वह एक भयंकर युद्ध था, जिससे पर्वत हिल गये और पृथ्वी तथा समुद्र में भयंकर तूफान उमड़ने लगे। अंततः जीयस ने टाइटानों को टारटारस के देश अर्थात् पाताल लोक में फेंक कर उन्हें जंजीरों से कसकर बांध दिया, जिससे कि वे हमेशा अंधकार में ही पड़े रहें। जीया के दैत्य पुत्रों में से दो ने पाताल लोक में टाइटनों पर पहरा देने का काम स्वयं स्वीकार कर लिया और तीसरे दैत्य एटलस ने अपने कंधों पर आकाश को उठाने का काम संभाल लिया।

उसके पश्चात् जीयस ने अपने और अपने भाइयों के बीच राज्यों का बंटवारा करने के लिए पर्चियां डालीं। जीयस के नाम आकाश के राज्य की पर्ची खुली, पोसीडोन को समुद्र का राज्य मिला और हेड्स को पाताल लोक का। जीयस की तीन बहनें थीं—हेरा, हेस्तिया और दिमित्र। उसने उनमें से हेरा के संग विवाह कर लिया और अन्न की देवी दिमित्र के साथ प्रेम संबंध स्थापित कर लिये। हेस्तिया जीवन भर कुंवारी रही और उसे परिवारों तथा नैतिकता का संरक्षक बना दिया गया।

जीयस: प्रेमी के रूप में

यूनानी मिथकों में जीयस को परमपिता परमेश्वर तथा प्रमुख पुरुष देवता के रूप में स्वीकार किया गया। जीयस ने अपनी बहन हेरा के संग तो विवाह किया ही, वह अपनी दूसरी बहन दिमित्र तथा अन्य अनेक स्त्रियों के साथ प्रेम करता रहा तथा उसने उनसे अनेक अमर देवता और मरणधर्मा मनुष्य उत्पन्न किये, जिनमें प्रमुखतः अपोलो आर्तेमिस, एथेना, पर्सिफोन, डायोनीसियस और हेराक्लीज, हेलेन तथा पर्सियस।

जीयस की प्रिय प्रेमिकाओं में लेतो देवी सर्वप्रमुख थी। जीयस उसके प्रति बहुत अनुरक्त हो गया और लेतो उससे गर्भवती हो गयी। जब जीयस की पत्नी हेरा को इस प्रेम-प्रसंग का ज्ञान हुआ तो उसने लेतो को दंड देने का निश्चय कर लिया। हेरा कई महीने तक उसके पीछे फिरती रही और उसे एक जगह से दूसरी जगह भटकाती रही। हेरा ने लेतो को आराम नहीं करने दिया लेकिन आखिर में देवताओं को लेतो की व्यथा देखकर उस पर तरस आ गया और उसने उसके लिए एक ऐसा स्थान खोज निकाला, जहां वह शांति से रह सकती थी। यह स्थान देलोस नामक छोटा-सा द्वीप था, जो अनेक वर्षों से एजियन सागर में तैर रहा था। लेतो उस द्वीप पर रहने लगी और वहीं उसने अपने जुड़वां बच्चों—अपोलो और उसकी बहन आर्तेमिस को जन्म दिया। जीयस को यह द्वीप इतना प्रिय था कि उसने उसे अन्य द्वीपों के साथ जंजीरों से बांध दिया और स्थायी बना दिया। तब से अब तक वह द्वीप स्थिर है।

जीयस थेब्स के राजा की बेटी सेमेल से प्यार करने लगा था। जिस समय हेरा को अपने पति की इस नई प्रेमिका के बारे में पता चला तब तक सेमेल जीयस से गर्भ धारण कर चुकी थी। हेरा के मन में सेमेल के प्रति सौतिया डाह उत्पन्न हो गयी और जब उसने यह देखा कि उसके कारण वह अपने पति के स्नेह से वंचित होती जा रही है तो उसने सेमेल को नष्ट करने का निश्चय कर लिया। हेरा एक दिन सेमेल की बूढ़ी धाय के वेश में सेमेल के पास गयी। उसे देखकर सेमेल के मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह अपने मन का आनंददायी रहस्य अपनी धाय को बताये और उसने उससे कहा कि मैं बहुत सौभाग्यशालिनी हूं कि मुझे देवताओं के राजा जीयस का प्रेम प्राप्त हो गया है। सेमेल की धाय का छद्म रूप धारण किये हुए हेरा ने सेमेल को सलाह दी कि वह अपने प्रेमी के प्रेम की परीक्षा करे। हेरा ने उसे कहा, "तुम उससे कहो कि वह किसी दिन अपने राजसी वस्त्रों में दैवी कवच पहनकर और अपना शक्तिशाली वज्र हाथ में लेकर तुम्हारे सम्मुख प्रकट हो।" यह सुनकर सेमेल बहुत प्रसन्न हुई और उसके बाद जीयस अगली बार जब उससे मिलने आया तो उसने उससे कहा, "हे जीयस, यद्यपि तुम यह नहीं जानते कि मैं तुम से क्या मांगने वाली हूं, फिर भी तुम मुझे एक वरदान दो।" जीयस ने हां कर दी और जैसे ही सेमेल ने जीयस के सम्मुख अपनी इच्छा प्रकट करनी शुरू की वैसे ही जीयस समझ गया कि उसने सेमेल को वरदान देकर भारी भूल कर डाली है। उसने सेमेल को इस बात के लिए फुसलाने की चेष्टा की कि वह अपनी इच्छा को शब्दों में व्यक्त न करे लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उसने जीयस को बता दिया था कि वह क्या चाहती है।

जीयस जानता था कि सेमेल को अमरत्व प्राप्त नहीं हुआ है, अतः वह उसके वज्र की भीषण गर्मी सहन नहीं कर पायेगी और उसके सम्मुख आते ही निश्चित रूप से भस्म हो जायेगी लेकिन जीयस देवता था और वह देवता द्वारा दिये गये वचन को नहीं तोड़ सकता था। अतः जीयस अपने पूर्ण तेजस्वी रूप में सेमेल के सम्मुख प्रकट हो गया और उसके वज्र की लपटों ने सेमेल को जलाकर राख कर डाला परंतु जीयस उसकी कोख से अपने अजन्में बालक को जीवित निकालने में सफल हो गया और उसने अपने उस पुत्र का मनोयोग से लालन-पालन किया। उसने उसका नाम डायोनीसस रखा। रोम के लोगों ने उसको बेकस कहा। यूनान और रोम में उसकी उपासना वनस्पति और मादक द्रव्यों के देवता के रूप में होती है।

एक बार एक अनुपम सुंदरी यूरोपा अपनी सहेलियों के साथ खेत में खेल रही थी। संयोगवश उस पर जीयस की दृष्टि पड़ गयी। जीयस युरोपा के दैवी सौंदर्य पर मुग्ध हो गया और उसने उसको वहीं पर भोगने का निश्चय कर लिया। उसने एक सफेद बैल का रूप धारण कर लिया, जिससे कि यूरोपा के मन में उसकी ओर से किसी प्रकार का संदेह न उत्पन्न होने पाये। बैल के रूप में जीयस यूरोपा को अपनी कमर पर चढ़ने के लिए नाना प्रकार से रिझाने लगा। यूरोपा शीघ्र ही उसकी कमर पर चढ़ गयी। यह देखकर जीयस उठ खड़ा हुआ और उसे लेकर पूरे महाद्वीप पर

घूमता रहा, जिसे उसने यूरोपा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए यूरोप महाद्वीप कहा।

एक अन्य प्रेमिका माइया से जीयस ने हर्मेस (मरकरी) को जन्म दिया। जो दूतों और यात्रियों का संरक्षक बना। एक बार जीयस के सिर में तेज दर्द हुआ, जिसका कारण वह कुछ नहीं समझ पाया ,परंतु शीघ्र ही उसके सामने एथेना (मिनर्वा) देवी प्रकट हो गयी। वह परम सुंदरी थी और उसने योद्धाओं जैसा कवच पहन रखा था तथा शस्त्र धारण कर रखे थे। इसी एथेना देवी ने यूनान के एथेन्स नगर की स्थापना की।

एमफिट्रियॉन की पत्नी तथा एक प्रख्यात महिला एलेक्मेन के साथ भी जीयस के घनिष्ठ प्रेम संबंध थे, जिसकी कोख से उसने हेराक्लीज नामक परमवीर पुत्र उत्पन्न किया, जिसे हरकुलिस भी कहा जाता है। जीयस हेराक्लीज को अमरत्व प्रदान करना चाहता था परंतु उसमें इतनी सामर्थ्य न थी कि वह अपनी पत्नी हेरा को अप्रसन्न कर सके। हेरा उसकी अन्य प्रेमिकाओं और उनसे उत्पन्न हुई उसकी संतान से घृणा करती थी। वह हेराक्लीज को मार डालना चाहती थी। हेराक्लीज जब केवल आठ महीने का था, तभी उसने उसके पालने में दो सांप छुड़वा दिये। वे सांप हेराक्लीज का कुछ नहीं बिगाड़ पाये क्योंकि हेराक्लीज ने दोनों को अपने दोनों हाथों से पकड़कर मरोड़ डाला और मार दिया। अनेक प्रकार की परीक्षाओं में से होकर सफलतापूर्वक गुजरने के बाद हेराक्लीज को अमरत्व प्राप्त हो गया और उसे देवताओं के बीच ओलिम्पस पर्वत पर स्थान मिल गया।

मानव जाति का निर्माता

अमर देवताओं का सम्राट और उनका पिता जीयस मनुष्य जाति का निर्माता भी है। कहा जाता है कि जीयस ने मनुष्यों की पांच पीढ़ियों को जन्म दिया, जो पांच युगों अथवा मानवीय सभ्यता की पांच अवस्थाओं की प्रतीक हैं—स्वर्ण पीढ़ी, रजत पीढ़ी, कांस्य पीढ़ी,, वीर पीढ़ी और लौह पीढ़ी। स्वर्ण पीढ़ी मानव सभ्यता के स्वर्ण युग में उत्पन्न हुई। उसमें उच्चतम मानवीय मूल्य और सद्गुण स्वाभाविक रूप से विद्यमान थे। वह पीढ़ी आत्मानुशासित थी और उसको न कानून की आवश्यकता थी, न पुलिस की, न अदालत की। उस काल में पृथ्वी पर सर्वत्र शांति का साम्राज्य था। मानव जीवन को उच्चतम मूल्य माना जाता था और मनुष्य जाति लोभ, घृणा, दासता और किसी भी प्रकार की पीड़ा और व्यथा से सर्वथा मुक्त थी। वह दैवी कृपा और समृद्धि का युग था। इस युग में पृथ्वी पर दूध और अमृत की नदियां बहती थीं तथा वृक्षों से स्वतः मधु झरता था। चरागाह हरे थे और दुधारू पशु तथा भेड़ें पर्याप्त मात्रा में थीं। उस समय मनुष्य में संग्रह की प्रवृत्ति नहीं थी। न वह रक्षा के लिए दुर्ग, सेना अथवा शस्त्र ही बनाता था। समूची मानव जाति रोगों से मुक्त थी और मनुष्य शांतिपूर्वक देह छोड़ देते थे, मानो मृत्यु सुखद और शाश्वत नींद की अवस्था हो।
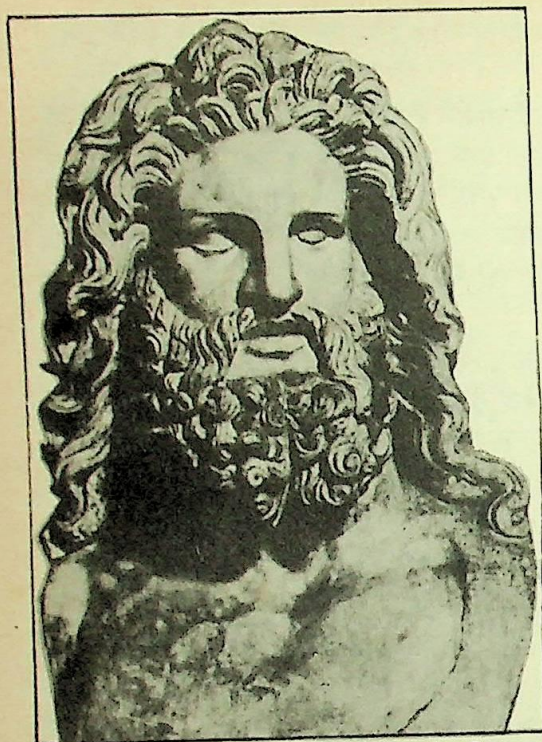
जीयस, जिसने कांस्य पीढ़ी का निर्माण किया।

इस स्वर्णयुग अथवा सतयुग के बीत जाने पर जीयस ने मनुष्यों की रजत पीढ़ी का निर्माण किया। यह दूसरी पीढ़ी थी। इस दूसरे युग में मनुष्य के चित्त की शुद्धता और पवित्रता नष्ट हो गयी थी और वह झगड़ालू बन गया था। इससे जीयस को क्रोध आ गया और उसने रजत पीढ़ी को दंड देने के लिए पृथ्वी पर बारहों महीने बसंत बने रहने की स्थिति समाप्त कर दी। उसके आदेश पर वर्ष को चार ऋतुओं में विभाजित कर दिया गया। इस युग में मनुष्य अपने रहने के लिए घर बनाने लगा और बैलों की मदद से खेत जोतकर अन्न उगाने लगा। जीयस ने मनुष्यों की आयु घटा दी और मृत्यु के पश्चात् उनके जीवों को पाताल लोक में भेजने का आदेश दे दिया। यही वह युग था जिसमें मनुष्य को अभाव, कष्ट, पीड़ा और संघर्ष का पहली बार अनुभव हुआ।

जीयस द्वारा उत्पन्न की गयी तीसरी पीढ़ी कांस्य पीढ़ी थी। इस पीढ़ी के उदय के पश्चात् पृथ्वी पर युद्ध, हिंसा, विनाश और निर्दयता के युग का अवतरण हुआ और मानव सभ्यता अपने पतन की ओर बढ़ चली।

तब जीयस ने उसकी अपेक्षा श्रेष्ठ पीढ़ी का निर्माण किया। यह वीर पीढ़ी थी, जो रजत और कांस्य पीढ़ियों के मनुष्यों की अपेक्षा अधिक सद्गुण-संपन्न और भली थी। यह वीर पीढ़ी जीवनभर उच्चतर प्रयोजनों के लिए संघर्ष करती रही। जीयस ने वीर पीढ़ी को शाश्वत जीवन, शांति और आनंद का वरदान दिया।

अंततः जीयस ने मनुष्यों की पांचवीं पीढ़ी उत्पन्न की। यह लौह पीढ़ी है—वर्तमान पीढ़ी। मिथक के अनुसार लौह-युग अंधकार का युग होगा, जिसमें मनुष्य का जीवन दुःख, शोक, ईर्ष्या, संघर्ष, रोग, मृत्यु, अपराध, हिंसा, लोभ और अन्याय से त्रस्त रहेगा। लौह पीढ़ी लोभी और संग्रहशील होगी। धरती माता जो कुछ उत्पन्न करेगी, वह उतने से संतुष्ट नहीं रहेगी तथा उसका पेट चीर कर उसके गर्भ में छिपी संपदा का दोहन करेगी। वह अंतरिक्ष पर आक्रमण करके दूसरे ग्रहों की संपत्ति प्राप्त करने के लिए उन्हें लूटेगी।

मिथक के अनुसार लौह पीढ़ी जीयस की सृष्टि की अंतिम पीढ़ी है। जिसे हम भारतीय मिथक में कलियुग कहते हैं। इस पीढ़ी की नियति आत्मघाती युद्धों में लगे रहने की है। इस युग के लिए मिथक भविष्यवाणी करता है कि इसमें माता-पिता और संतान के मन में न तो प्रेम रहेगा न आदर और दोनों के बीच हितों का संघर्ष छिड़ जायेगा। संतान अपने माता-पिता और बुजुर्गों के बूढ़े हो जाने पर उनकी तनिक परवाह नहीं करेगी और गुणी लोगों को इस युग में कोई महत्त्व नहीं दिया जायेगा।

पृथ्वी के वर्तमान निवासी इसी लौह पीढ़ी के मनुष्य हैं। जीयस के मिथक के जिस अंश का इस पीढ़ी के साथ संबंध है। वह अंश शत-प्रतिशत सही उतरता है। मिथक कहता है कि एक दिन जीयस को ऐसा लगेगा कि लौह पींढ़ी उसकी संतान की सभी पीढ़ियों में सबसे अधिक अयोग्य और निकम्मी है, अतः उस पीढ़ी को पृथ्वी पर जीने का तनिक अधिकार नहीं है और तब वह उसे नष्ट कर देगा। शायद इस बार मानव जाति को नष्ट करने के लिए जीयस को स्वयं तनिक भी परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। हम स्वयं इतने मूर्ख हैं कि हम अपनी पीढ़ी अर्थात् वर्तमान मानव जाति को समूल नष्ट कर देंगे। अहंकार और पदार्थवाद के प्रेम के काले बादलों ने हमारे भीतर की दैवी ज्योति और मेधा को पूरी तरह ढांप लिया है। हम अपनी सारी शक्ति इस पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों पर बड़े पैमाने पर प्रलय उत्पन्न करने के लिए विनाश के साधनों के निर्माण में झोंक रहे हैं तथा मानव जाति का संपूर्ण विनाश लगभग सुनिश्चित है। शायद इस बार जीयस ने स्वयं हमें ही हमारे विनाश का साधन बना लिया है। ■■

यूनानी मिथक-2: पर्सीफोन

अपदस्थ आकाश देवता क्रोनस की बेटी तथा नये आकाश देवता जीयस की बहन दिमित्र पृथ्वी पर वनस्पति, पौधों, घास, वृक्षों और खेतों में उत्पन्न होने वाले समस्त प्रकार के धान्य की देवी (अन्नपूर्णा) के रूप में प्रतिष्ठित रही है। सही समय पर ऋतुएं उसी के कारण आती हैं। वह पृथ्वी के समस्त प्राणियों पर बहुत प्रेमल हैं तथा उनका भरण-पोषण करती है। इसके बदले में मनुष्य भी उस पर बहुत प्यार करते हैं। प्राचीन काल में यूनान के प्रत्येक किसान की पत्नी शाम के भोजन के समय इस आशा में एक अतिरिक्त थाली परोसती थी कि दिमित्र उसके दरवाजे पर दस्तक देगी और परिवार के साथ भोजन में शामिल होगी। दिमित्र किसानों पर बहुत दयालु थी। वह उनकी फसलों की देखभाल करती और यह ध्यान रखती कि वे खूब संपन्न हों तथा उनके खलिहान अन्न से भरे रहें। दिमित्र ने ही मनुष्यों को खेत जोतना-बोना सिखाया, जिससे कि वे फसलें प्राप्त कर सकें। उसने ही उन्हें पशुपालन की कला सिखायी। किसानों के घर में जब कभी कोई उत्सव होता या भोज दिया जाता, तब दिमित्र की वेदी पर फल, अनाज, और ताजी सेंकी हुई रोटियां प्रचुर मात्रा में चढ़ाई जातीं। देवता हमेशा उसके साथ परिहास किया करते थे कि वह बहुत खाती है तथा ओलिम्पस पर्वत पर देवताओं के महलों की अपेक्षा मनुष्यों के घरों में अधिक बार भोजन करती है।

दिमित्र ने जीयस के संग सहवास द्वारा एक अत्यंत सुंदर और चमत्कारी बेटी पर्सीफोन को जन्म दिया था। वह पर्सीफोन को बहुत प्यार करती थी। पर्सीफोन को सूर्य के प्रकाश और फूलों पर बहुत गहरा प्रेम था तथा वह विनोद-प्रिय थी। जिन लोगों को पर्सीफोन से प्यार होता और जिन्हें वह जानती थी उनके जीवन में भी वह आनंद भर देती थी। वह सिसिली के हरे-भरे खेतों में जंगली फूलों के बीच घूमती रहती और अपने हाथ में लटकी हुई टोकरी को फूलों से भरती जाती। उसकी सौतेली बहनें आर्तेमिस और एथेना प्रायः उसके साथ रहती थीं।

एक बार पर्सीफोन अपनी बहनों के साथ खेत से फूल बीन रही थी। चारों ओर सुहानी धूप छिटकी हुई थी और पर्सीफोन एकदम निश्चिंत होकर खेतों में घूम रही थी। जैसे ही कोई सुंदर फूल उसकी दृष्टि में आता, वह उसे तोड़कर टोकरी में धर लेती। ठीक उसी समय पाताल लोक का स्वामी और जीयस का भाई हेड्स उधर से आ निकला। वह पृथ्वी पर यह देखने आया था कि एटना पर्वत की तलहटी

में पीठ के बल सोये हुए दैत्य टायफून ने पृथ्वी में कोई ऐसी दरार तो नहीं डाल दी, जिससे होकर सूर्य की किरणें पाताल लोक तक पहुंच जातीं और वहां बसे जीवों को आतंकित कर देतीं। टायफून निरंतर आग उगलता रहता था।

हेड्स की दृष्टि अचानक पर्सीफोन पर जा पड़ी और उसके नीरस हृदय में पर्सीफोन के दैवी और उन्मादकारी सौंदर्य के प्रति प्रेम जागृत हो गया। इसका कारण यह था कि अपनी माता एफ्रोडाइट (वीनस) के आदेश पर इरोस ने हेड्स पर काम-बाण चला दिया था। एफ्रोडाइट को देवताओं तथा सांसारिक जीवों के हृदय में प्रेम उत्पन्न करने से बहुत आनंद मिलता था। हेड्स पर्सीफोन के प्रेम में विकल हो गया और जब उसे पर्सीफोन को प्राप्त करने का कोई मार्ग न सूझा तो वह अपने भाई जीयस के पास गया और उसने उससे उसकी बेटी पर्सीफोन के साथ विवाह की अनुमति मांगी।

जीयस को मालूम था कि पर्सीफोन की मां दिमित्र इस विवाह के लिए कदापि तैयार नहीं होगी, क्योंकि उसे पृथ्वी और पृथ्वी के प्राणियों तथा उनके जीवन पर बहुत प्रेम था। पर्सीफोन की अनुपस्थिति में पृथ्वी पर जीवन एकदम असंभव था, क्योंकि बीजों का उगना, पौधों का बढ़ना और फूलना-फलना सब कुछ पर्सीफोन की हंसी पर निर्भर करता था। दिमित्र जानती थी कि पर्सीफोन को सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश के प्रति बहुत प्रेम है और वह उस अंधकारपूर्ण पाताल लोक में प्रसन्नतापूर्वक नहीं रह सकती थी, जहां सूर्य पहुंच ही नहीं सकता। यह सोचकर जीयस ने हेड्स के सामने यह प्रस्ताव रखा कि यदि उसमें पर्सीफोन को जबरदस्ती उठाकर ले जाने का साहस हो तो वह इस कार्य में उसकी सहायता गुप्त रीति से कर सकता है। हेड्स ने जीयस का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वह अपने साम्राज्य में लौटकर पर्सीफोन के अपहरण के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन पर्सीफोन हरे-भरे मैदान से फूल चुन रही थी, अचानक उसकी दृष्टि नार्सिसस नामक एक अत्यंत आकर्षक फूल पर जा पड़ी। पर्सीफोन को वह सुंदर फूल बहुत प्रिय था। फूल कुछ दूरी पर था, अतः वह अपनी बहनों को पीछे छोड़कर फूल की ओर दौड़ने लगी। उस समय पर्सीफोन को कुछ पता न था कि वह फूल उसके पिता जीयस ने अपनी दैवी और चमत्कारी शक्तियों द्वारा उस षड्यंत्र के अंतर्गत उत्पन्न किया है, जो उसने अपने भाई, पाताल लोक के स्वामी, हेड्स के साथ मिलकर रचा था। वास्तव में जीयस चाहता था कि हेड्स उससे प्रसन्न रहे और मानव-जाति को संपत्ति का वरदान देता रहे। हेड्स को संपत्ति का देवता भी माना जाता है। उसका दूसरा नाम प्लूटो है। यह नाम लातीनी भाषा के प्लूतोन शब्द से लिया गया है, जिसे यूनानी भाषा में प्लोतोन कहा जाता है और जिसका अर्थ है संपत्ति।

पर्सीफोन ने जैसे ही नार्सिसस फूल के पास पहुंचकर फूल को तोड़ा, वैसे ही वह यह देखकर चकित तथा भयभीत हो गयी कि उसके सामने पृथ्वी फट रही है। वह मदद के लिए बहनों को पुकार भी नहीं पायी कि पृथ्वी में पड़ी दरार एकदम
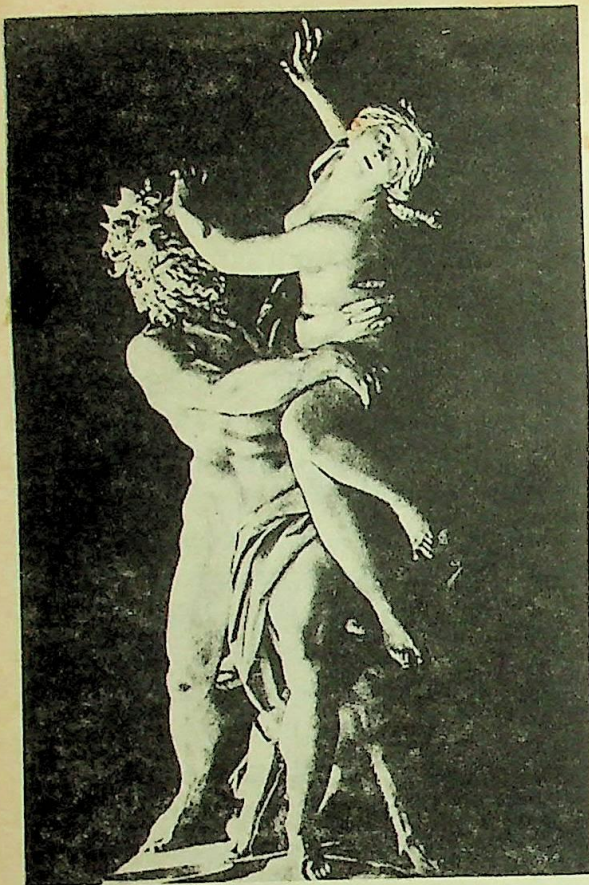
हेड्स द्वारा पर्सीफोन का अपहरण

बहुत चौड़ी हो गयी और पलभर में ही विशाल आकार के कोयले जैसे काले घोड़े उछलकर उसके सामने आ पहुंचे, जिनके पीछे उसे एक रथ दिखाई दिया। रथ में उसका चाचा तथा पाताल लोक का स्वामी हेड्स खड़ा था तथा उसकी ओर देखकर मुस्करा रहा था। अगले ही क्षण हेड्स ने पर्सीफोन को अपनी सशक्त बांहों के शिकंजे में जकड़ लिया और पृथ्वी से उठाकर रथ में अपने पास बैठाने के पश्चात् घोड़ों को बहुत तेज दौड़ाया। बेचारी एथेना और आर्तेमिस यह जान ही नहीं पायी कि हेड्स पर्सीफोन को भगाकर ले गया है।

पर्सीफोन हताशापूर्वक चीखती-चिल्लाती रही। वह अपने माता-पिता को पुकारती रही लेकिन वे तो इतनी दूर थे कि उसकी चीख उनके कानों तक पहुंच ही नहीं पायी। इसके बावजूद पर्सीफोन अपनी मां को पुकारती रही। ऊपर आकाश में अपने रथ पर सवार सूर्य अपनी यात्रा पर था। पर्सीफोन के अपहरण का वही एकमात्र साक्षी था। एथेना और आर्तेमिस जब उस स्थान पर पहुंची, जहां से पर्सीफोन फूल चुनने गयी थी, तब तक पृथ्वी की दरार भर चुकी थी और वहां पर्सीफोन का नामोनिशान भी न था। सुंदर फूलों से भरी उसकी टोकरी अवश्य वहां पड़ी थी।

पर्सीफोन की चीख ऊंचे पहाड़ों से टकराकर गूंजती रही और सागर अपनी गहराइयों से उसे उभारते रहे। अंततः वे चीखें पर्सीफोन की मां दिमित्र के कानों तक पहुंचने में सफल हो गयीं। दिमित्र अपनी बेटी की चीखें सुनकर बौरा उठी और उसकी तलाश में हताशापूर्वक इधर-उधर भटकती रही। वह नौ दिन और नौ रात बिना पलक झपकाये पर्सीफोन को तलाश करती रही, लेकिन उसे खोज नहीं पायी।

दिमित्र इसके बाद सिसिली गयी, जहां से पर्सीफोन गायब हुई थी और जब सिसिलीवासी उसकी बेटी के बारे में उसे कुछ नहीं बता पाये तो उसने उन्हें दंड देने का निश्चय कर लिया। उसने उनके हल तोड़ डाले, उनके बैलों की हत्या कर दी और पृथ्वी को आदेश दिया कि वह बोये गये बीजों को अपने उदर में ही रोके रखे तथा उन्हें उगने न दे। सिसिली के हरे-भरे मैदान दिमित्र के कोप के कारण उजड़ गये। बेटी के खो जाने के कारण दिमित्र बहुत नाराज थी और उसने अपना गुस्सा समूची पृथ्वी पर उतारना शुरू किया। वह पृथ्वी के जीवन को नष्ट करने लगी। समूची पृथ्वी पर भीषण सूखा पड़ गया, न एक भी बीज उग पाया, न पृथ्वी पर घास का एक तिनका भी जीवित बचा।

अंत में दिमित्र हीलिअस (सूर्य) देवता के पास गयी और उसने उससे अपनी बेटी के बारे में पूछा। दिमित्र ने सूर्य को बताया कि पर्सीफोन की हताशापूर्ण चीखों को सुनकर वह इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि उसे कोई जबरदस्ती उठाकर ले गया है। उसने सूर्य देवता से प्रार्थना की कि वह उसे सच्चाई से अवगत कराये। हीलिअस ने उसके सामने सारी घटना ज्यों की त्यों कह सुनायी और उसे यह भी बता दिया कि स्वयं जीयस ने पाताल लोक के स्वामी, अपने भाई हेड्स को अपनी बेटी का हाथ सौंपा है जिससे कि वह उसकी पत्नी तथा मृतात्माओं की रानी और संपत्ति की देवी बन सके। सूर्य ने दिमित्र को यह भी बताया कि हेड्स ने पर्सीफोन का अपहरण किया और पर्सीफोन तब तक चीखती-चिल्लाती रही, जब तक कि धरती में पड़ी दरार पूरी तरह बंद नहीं हो गयी। सूर्य ने दिमित्र को धैर्य रखने की सलाह दी और उससे कहा कि इसमें शोक का कोई कारण नहीं है, आखिरकार हेड्स उसका अपना भाई और एक शक्तिशाली साम्राज्य का स्वामी है। उसने उसे क्रोध और आवेश का परित्याग करके अपनी व्यथा और वेदना से उभरने का परामर्श दिया।

दिमित्र का रोष

दिमित्र ने जब हीलिअस देवता से यह सुना कि जीयस ने पर्सीफोन के अपहरण में हेड्स की मदद की है और उसे उस जघन्य कार्य की अनुमति प्रदान की है तो दिमित्र का पारा गर्म हो गया। उसका हृदय अपनी बेटी के बिछोह और उसे पाताल लोक ले जाये जाने के दुःख से अभिभूत था और आक्रोश तथा क्रोध से पागल हो रहा था। अंत में दिमित्र ने निश्चय किया कि वह काम करना बंद कर देगी तथा पृथ्वी पर सभी प्राणियों को भूख से मर जाने देगी, जिससे कि देवताओं को

बलि और भोग चढ़ाने वाला कोई न बचे। वास्तव में दिमित्र देवताओं के राजा जीयस से बदला लेने पर उतारू हो गयी थी।

जीयस को जैसे ही दिमित्र की मनोभावनाओं के बारे में ज्ञात हुआ, वैसे ही उसने दिमित्र को बुलाने के लिए संदेशवाहक भेजा, परंतु दिमित्र ने जीयस के आदेश का पालन करने से मना कर दिया। इसके बाद जीयस ने एक-एक करके सभी देवताओं को दिमित्र के पास भेजा और उनसे कहा कि वे दिमित्र को समझायें तथा मनाकर ओलिम्पस पर्वत पर ले आयें। दिमित्र ने किसी की एक भी न सुनी। अंतिम संदेशवाहक के हाथों दिमित्र ने जीयस के पास यह संदेश भेजा कि वह जीयस से मिलने तो चली आयेगी लेकिन जब तक वह अपनी बेटी का मुख नहीं देख लेती, तब तक पृथ्वी पर घास का एक तिनका भी नहीं उगने देगी। इस प्रकार दिमित्र जीयस के सम्मुख उपस्थित हुई और उसने बहुत नम्रतापूर्वक उससे प्रार्थना की कि वह पर्सीफोन को उसके पास लौटा दे, जिससे कि वह सूर्य का प्रकाश देख सके, घास के मैदानों से जंगली फूल चुन सके और जीवन से परिपूर्ण जगत में अपनी हंसी बिखेर सके। दिमित्र ने जीयस से कहा कि पर्सीफोन को हमेशा जीवन के प्रति प्रेम रहा है, अतः उसे मृतकों के जगत में भेजना अन्यायपूर्ण रहा है। हेड्स ने पर्सीफोन के साथ विवाह करने के लिए उसका जिस प्रकार अपहरण किया था, दिमित्र को उस पर भी आपत्ति थी। दिमित्र ने जीयस से पूछा कि हेड्स तो पर्सीफोन को उसकी इच्छा के विरुद्ध भगाकर ले गया है। ऐसी स्थिति में उसे उसके साथ विवाह करने की अनुमति किस प्रकार दी जा सकती है? उसने जीयस से बार-बार अनुरोध किया कि वह अपनी बेटी पर्सीफोन को पृथ्वी पर वापस मंगा ले।

जीयस ने दिमित्र को बहुत प्रकार से समझाया कि वह अपनी बेटी के साथ हेड्स के विवाह की अनुमति दे दे और यह सोचकर हेड्स को क्षमा कर दे कि हेड्स पर्सीफोन से प्यार करता है, वह दिमित्र का भाई है और एक शक्तिशाली साम्राज्य का स्वामी भी। जीयस ने उससे कहा कि यदि वह इस प्रस्ताव के साथ किसी भी प्रकार सहमत होने को तैयार न हो तो वह इस शर्त पर पर्सीफोन को पृथ्वी पर वापस बुला लेगा कि उसने हेड्स के पाताल लोक में कुछ भी न खाया हो लेकिन यदि उसने मृतकों का दिया हुआ भोजन स्वीकार कर लिया होगा तो उसे उस अंधकारपूर्ण लोक में ही रहना होगा।

यह सुनकर दिमित्र ने कठोर स्वर में जीयस से कहा कि वह अपनी बेटी की प्रतीक्षा उसी मैदान में करेगी, जहां से उसका अपहरण किया था और जब तक पर्सीफोन लौट नहीं आती, तब तक पृथ्वी को पूरी तरह बांझ तथा कुओं को जल रहित रहना होगा।

दिमित्र की हठ के कारण जीयस बहुत परेशान था। उसने तुरंत अपने बेटे हर्मीज़ को यह संदेश देकर हेड्स के पास भेजा कि वह पर्सीफोन को तुरंत दिमित्र के पास लौट जाने दे। हर्मीज़ तुरंत पाताल लोक के लिए निकल पड़ा और वहां पहुंचने पर उसने अपने चाचा हेड्स से आदरपूर्वक कहा कि दिमित्र देवी के रोष के कारण

समूची पृथ्वी उजड़ गयी है, वह जीयस समेत किसी भी देवता की बात मानने को तैयार नहीं है। हर्मीज़ ने हेड्स से यह भी कहा कि दिमित्र अपनी बेटी के अपहरण के दुःख से पागल हो गयी है, उसे किसी भी प्रकार धीरज नहीं बंधाया जा सकता और उसकी व्यथा शब्दातीत है।

हेड्स ने हर्मीज की बात ध्यान से सुनी और उसने पर्सीफोन को उसके भाई के साथ उसकी मां के पास लौट जाने की अनुमति दे दी। उसने पर्सीफोन को केवल इतना ही याद दिलाया कि वह भी उसे उसकी मां के समान ही प्यार करता है। उसने उसे वचन दिया कि वह उसके साथ एक अच्छे पति की तरह व्यवहार करेगा और मृत्यु लोक में उसके आदर और पूजा की समुचित व्यवस्था करेगा।

हेड्स के शब्दों से पर्सीफोन को यह सोचकर बहुत चैन मिला कि वह पृथ्वी पर अपनी मां, सूर्य के प्रकाश और सिसिली के फूलों से लदे मैदानों में लौट सकेगी। हेड्स द्वारा अपने प्रति प्रदर्शित प्रेम से भी पर्सीफोन को सुख मिला। उस समय तक उसने पाताल लोक में कुछ भी नहीं खाया लेकिन जब वह वहां से विदा होने लगी तो उसके पति ने जानबूझकर उसे अनार का एक दाना खाने के लिए दिया, जिससे कि वह हमेशा के लिए पृथ्वी पर न रह सके। पर्सीफोन के मन में किसी प्रकार की शंका ही न थी, अतः उसने मुस्कराहट के साथ वह दाना खा लिया।

पर्सीफोन उस मैदान पर लौट आयी, जो किसी जमाने में खुशबूदार फूलों के रंगों से दमकता था। उसे यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि वह मैदान एकदम उजड़ गया है। अपने भाई हर्मीज़ के रथ से उतरते ही उसने अपनी मां को अपनी बांहों में भर लिया और प्रसन्नतापूर्वक उससे लिपट गयी।

दिमित्र अपनी बेटी को देखकर बहुत प्रसन्न हुई, परंतु उसका मन उसके भविष्य की ओर से आशंकित था, इसलिए उसने उससे मिलते ही यह पूछा कि उसने हेड्स के साम्राज्य में कुछ खाया तो नहीं। पर्सीफोन ने बताया कि उसने पहले तो कुछ नहीं खाया था परंतु विदा करते समय उसके पति ने उसे अनार का एक दाना दे दिया था, जिसे उसने खा लिया था क्योंकि वह बहुत भूखी थी और उसे उस दाने को खाने के परिणाम का तनिक भी बोध न था। जब दिमित्र ने उसे यह बताया कि उसके पिता जीयस का यह आदेश है कि यदि उसने पाताल लोक में कुछ भी खा लिया होगा तो उसे वहीं रहना होगा, तब पर्सीफोन बिलख-बिलखकर रोने लगी।

ठीक उसी समय दिमित्र तथा अन्य देवी-देवताओं की मां रिया वहां पहुंच गयी। रिया ने अपनी बेटी दिमित्र और नातिन पर्सीफोन को गले से लगा लिया और उनसे कहा कि रोने-धोने से कोई बात नहीं बनेगी। अपनी नियति का सामना साहस और प्रसन्नतापूर्वक करना चाहिए। इसके पश्चात् रिया ने उन्हें जीयस का एक संदेश दिया, जिसमें कहा गया था कि ओलिम्पस पर्वत पर उनका स्वागत है तथा पर्सीफोन को वर्ष में केवल चार महीने के लिए पाताल लोक में रहना होगा। शेष समय वह अपनी मां के साथ पृथ्वी पर सूर्य के प्रकाश और फूलों से भरे मैदानों और घाटियों में बिता सकेगी। जीयस का आदेश था कि पर्सीफोन बसंत के प्रारंभ में
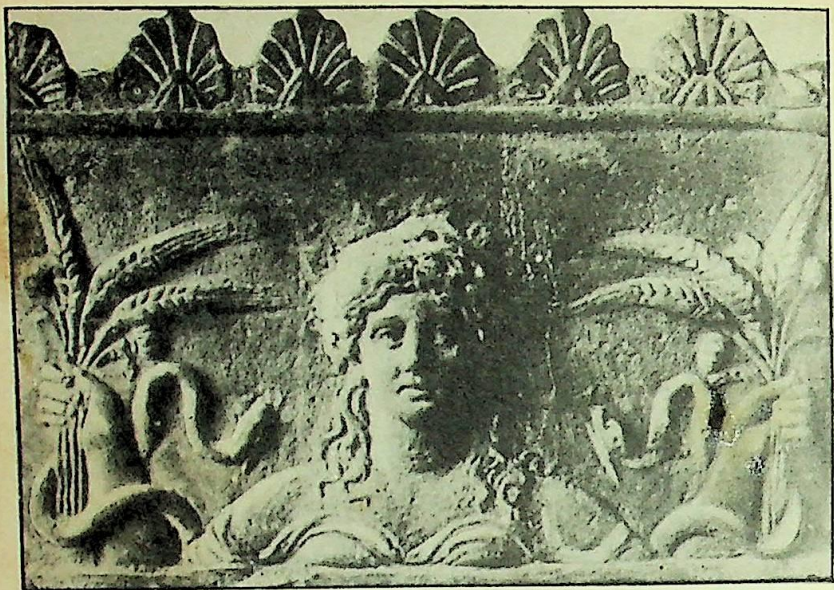
धन-धान्य की देवी दिमित्र

पाताल लोक से पृथ्वी पर चली आयेगी और जाड़े के शुरू होते ही पाताल लोक जायेगी।

रिया ने दिमित्र से कहा कि तुम जीयस के प्रति अपना रोष त्याग दो और यह सोचकर खुश हो जाओ कि वर्ष में आठ महीने तुम अपनी बेटी के साथ प्रसन्नतापूर्वक बिता सकोगी। अब तुम पृथ्वी को एक बार फिर हरा-भरा कर दो, बीजों को उगने दो और धरती पर जीवन लौटने दो। मां के ये शब्द सुनकर दिमित्र प्रसन्न हो गयी। वह वर्ष में चार महीने अपनी बेटी से अलग होने के लिए तैयार हो गयी। उसने पृथ्वी पर जीवन खुशी-खुशी लौटा दिया तथा उपजाऊ भूमि को फिर से एक बार धान्य से भर दिया। पर्सीफोन के प्रश्न को इस प्रकार हल करके दिमित्र ओलिम्पस पर्वत पर लौट गयी और वहां अपने भाई तथा प्रेमी जीयस के प्रति अपना क्रोध त्यागकर उसके साथ फिर से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी। ■■

रोम के मिथक-1: देवता

यूनान और रोम के देवता एक ही थे और उनके मिथक भी लगभग समान थे। यूनान और रोम दोनों के देवता ओलिम्पस पर्वत पर ही रहते थे। मिथकों और महागाथाओं, दोनों में यह उल्लेख मिलता है कि सौंदर्य और प्रेम की देवी वीनस ने अपने प्रेमी ट्रॉय-निवासी एनकाईसीज़ से जिस बेटे एनीयास को जन्म दिया था, वह ही ट्रॉय पर यूनानी सेनाओं के आक्रमण के बाद वहां से खदेड़े गये ट्रॉयवासियों को लेकर इटली गया तथा उसने वहां सुशासन, संस्कृति और धर्म की स्थापना की। एनीयास ने लेटिन राजा लातीनस को पराजित करके उसकी बेटी लावेनिया के संग विवाह कर लिया-था। इसके लिए उसे अपने प्रतिद्वंद्वी टरनस को भी कुश्ती में पछाड़ना पड़ा था क्योंकि वह बहुत समय से लावेनिया के संग विवाह करना चाहता था।

कुछ समय बाद एनीयास के बेटे आईयूलस ने एल्बा लौग्गा राज्य की नींव रखी और आगे जाकर उसके वशजों ने रोम नगर बसाया। इस प्रकार यह बहुत स्वाभाविक था कि ट्रॉय के लोग जिन देवताओं को अपने साथ रोम ले गये थे, वे ही रोम के देवता बन गये। ट्रॉय से भागते समय वीनस का प्रेमी और एनीयास का पिता एनकाईसीज़ स्वयं अपने साथ यूनानी देवताओं को इटली ले गया था।

रोम के देवताओं के नाम यूनानी देवताओं से भिन्न थे। वहां जीयस, जुपीटर हो गया और उसकी पत्नी हेरा जूनो हो गयी, हेड्स प्लूटो, अफ्रोडाइट वीनस और आर्तेमिस डायना बन गयी, परंतु अपोलो रोम में भी अपोलो ही रहा। स्वयं यूनान में सूर्य का देवता हीलिअस कालांतर में अपोलो कहलाने लगा था। रोम में अपोलो को प्रमुख देवता माना गया। अपोलो प्रकाश और जीवन का देवता है। वह रोगियों को आरोग्य प्रदान करता है, खिलाड़ियों को संरक्षण देता है, काव्य और संगीत का स्वामी तथा भविष्यवक्ताओं का प्रेरक है।

अपोलो: हताश प्रेमी

रोम के मिथकों में अपोलो को एक हताश प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। एक बार वह ट्रॉय के राजा प्रियम की बेटी कासैन्ड्रा के प्रेम में फंस गया। कासैन्ड्रा अपूर्व सुंदरी थी। अपोलो उस पर इतनी बुरी तरह रीझ गया कि वह उसके प्रेम के बदले में उसे कोई भी वरदान देने को तैयार था। उसने कासैन्ड्रा के बिना मांगे ही उसे भविष्यवाणी करने की शक्ति प्रदान कर दी। यह एक अनुपम

रोम और यूनान के देवता एक ही थे—केवल रोम के देवताओं के नाम भिन्न थे।

वरदान था परंतु कासैन्ड्रा ने इसके बावजूद अपोलो को स्वीकार नहीं किया। इस पर अपोलो बहुत निराश हो गया। वह अपना वरदान वापस नहीं ले सकता था लेकिन उसने कासैन्ड्रा को शाप दे दिया कि यद्यपि उसकी भविष्यवाणियां सत्य होंगी तथापि लोग उस पर विश्वास नहीं करेंगे। कासैन्ड्रा को दिये गये इस शाप के कारण ही अंत में उसके पिता के राज्य का विनाश हो गया और ट्रॉय का पतन। कासैन्ड्रा ने ट्रॉय पर यूनानी आक्रमण की भविष्यवाणी कर दी थी लेकिन ट्रॉयवासियों ने उस पर विश्वास नहीं किया और यूनानियों के आक्रमण का सामना करने की कोई तैयारी नहीं की, जिसके कारण वे अंततः नष्ट हो गये।

सिबिल नामक एक अन्य सुंदरी ने भी अपोलो के प्रेम को अस्वीकार कर दिया। वह इटली के पश्चिमी तट पर क्यूमी नामक नगर में रहती थी, जहां अपोलो का एक विशाल मंदिर था। अपोलो ने सिबिल से कहा कि "यदि तुम मेरे संग विवाह कर लोगी तो मैं तुम्हें मुंह-मांगा वरदान दूंगा।" सिबिल अपोलो से प्रेम नहीं करती थी और वह उसका प्रेम स्वीकार करने के लिए तनिक तैयार न थी लेकिन उसको एक मजाक सूझा। अपोलो और सिबिल समुद्र तट पर बैठे हुए थे, जहां पास ही रेत का एक बड़ा ढेर था। सिबिल ने खेल-खेल में अपोलो से कह दिया कि मुझे उतने वर्ष जीने का वरदान दो, जितने कि इस ढेर में रेत के कण हैं। अपोलो तुरंत तैयार हो गया और उसने उसे वह वर दे दिया। उसके बाद अपोलो ने सिबिल से कहा कि यदि तुम मेरे साथ विवाह करने को तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हें जीवन भर यौवन का वरदान भी दे सकता हूं, जिससे कि तुम्हें बुढ़ापे का कष्ट न भोगना पड़े। सिबिल ने अपोलो के संग विवाह करने से इनकार कर दिया। वह ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह करने के बजाय, जिस पर उसे प्रेम न था, बुढ़ापा भोगने को तैयार थी।

कासैन्ड्रा और सिबिल से निराश होने के बाद अपोलो एक अत्यंत शालीन और सुंदर परी की ओर मुड़ा। इस परी का नाम डैफने था। डैफने काफी समय तक अपोलो को टालने की चेष्टा करती रही क्योंकि उसके हृदय में अपोलो के लिए प्रेम न था। डैफने बहुत तेज दौड़ सकती थी और अपोलो जब कभी उसको पकड़ने की कोशिश करता तो वह तेजी से भाग जाती। अपोलो उसका पीछा नहीं करता था, जिसके कारण वह उससे बच निकलती थी। लेकिन एक दिन अपोलो ने उसका आलिंगन करने का निश्चय कर लिया और डैफने जैसे ही भागी, अपोलो ने उसका पीछा किया। डैफने बहुत आर्त्त स्वर में किसी को पुकारती जा रही थी, इसी बीच अपोलो उसके इतना करीब पहुंच गया कि वह अपनी बांह फैलाकर उसे अपने आलिगन में ले सकता था। जैसे ही उसने डैफने की ओर बांह बढ़ाई, वैसे ही एक चमत्कार हुआ। अपोलो ठगा-सा खड़ा देखता रहा और डैफने लॉरेल वृक्ष में रूपांतरित हो गई। उसे चारों ओर से लॉरेल वृक्ष की छाल ने लपेट लिया, उसकी भुजाएं वृक्ष की शाखाएं बन गयीं और उसके सुंदर बाल टहनियों तथा पत्तियों में बदल गये। यह सब पल भर में हो गया।

डैफने के पीछे भागते समय अपोलो के कानों में डैफने की आर्त्त पुकार पड़

अपोलो और डैफने

रही थी परतु उस समय वह कुछ नहीं समझ पाया था कि वह किसे पुकार रही है। डैफने जब वृक्ष में रूपांतरित हो गयी, तब उसकी समझ में यह बात आयी कि डैफने वनस्पति की देवी को पुकार रही थी तथा डैफने की पुकार और प्रार्थना पर उस देवी ने डैफने को वृक्ष में रूपांतरित कर दिया था। अपोलो अपनी प्रिय प्रेमिका को लकड़ी के रूप में देखकर विह्वल हो उठा और उसने उस वृक्ष को अपनी बांहों में भरकर हृदय से लगा लिया। अपोलो ने उसी समय आदेश दिया कि लॉरेल के वृक्ष को हमेशा तक पवित्र माना जायेगा तथा उसके नाम के साथ जोड़ा जायेगा।

अपोलो की एक प्रेमिका मारपेसा थी। अपोलो ने उसे विभिन्न प्रकार के दैवी उपहार देने का प्रलोभन दिया परंतु मारपेसा का हृदय एक मानव युवा आईडास में लगा हुआ था। आईडास ने मारपेसा से स्पष्ट कह दिया था कि वह एक साधारण मनुष्य है और उपहारों के मामले में अपोलो जैसे देवता के साथ होड़ नहीं कर सकता, तथापि वह उसे अपने समूचे हृदय से प्यार करता है और इस मामले में वह अपोलो से आगे ही रहेगा। मारपेसा को सूर्य के देवता अपोलो की पत्नी बनकर स्वर्ग में रहने के बजाय आईडास के साथ पृथ्वी पर रहना अधिक पसंद था।

इसलिए उसने अपोलो का प्रेम अस्वीकार करके आईडास के संग विवाह कर लिया। अपोलो एक बार फिर से हताश हो गया। ओलिम्पस पर्वत की देव-परंपरा के अनुसार उसने अपनी बहन डायना के साथ विवाह करना चाहा था परंतु डायना ने उसे अस्वीकार कर दिया था। वह जीवन भर अविवाहित रही।

आखेटप्रिय डायना

अपोलो की जुड़वां बहन और जुपीटर तथा उसकी प्रेमिका लेतो की बेटी डायना को जंगलों में घूमना और हिरणों का शिकार करना बहुत प्रिय था। डायना की उपासना अविवाहित लड़कियों की संरक्षिका के रूप में की जाती थी और ऐसा माना जाता था कि समस्त कठिनाइयों में वह उनकी मदद करती है। लड़कियां अपने विवाह के समय अपने समस्त खिलौने और गुड़िएं डायना के मंदिर में भेंट करके डायना के प्रति अपना आभार व्यक्त करती थीं।

ज़ो लड़कियां डायना की सहायता मागतीं, डायना उनके प्रति बहुत दयालु हो उठती थी किन्तु जो लोग उसे अप्रसन्न कर देते, उनके प्रति वह उतनी ही क्रूर भी थी। एक बार डायना जंगल के एक तालाब में स्नान कर रही थी। उसी समय एक युवा शिकारी एक्टियॉन उधर से गुजरा और अनजाने में ही उसकी दृष्टि डायना पर पड़ गयी। डायना ने यह देख लिया और उसके प्रति क्रोध से भर उठी। देवी होने के नाते उसे अवश्य ही यह ज्ञान था कि एक्टियॉन निर्दोष है, तथापि उसने उसे उसी समय हिरण में बदल दिया। एक्टियॉन के शिकारी कुत्तों ने जैसे ही उस हिरण को देखा, वे उसका पीछा करने लगे। वे यह नहीं पहचान पाये कि वह हिरण वास्तव में उनका स्वामी एक्टियॉन है। हिरण एक्टियॉन घबराकर भागने लगा और उसने अपने कुत्तों को अपनी बोली से यह समझाने की चेष्टा की कि वह उनका स्वामी है। उसे आशा थी कि वे उसे पहचान लेंगे, परंतु ऐसा हो नहीं पाया। वह थककर गिर गया और उसके ही कुत्तों ने उसे चीर डाला। यह एक प्रकार से डायना की बर्बरता ही थी।

डायना अविवाहित तो अवश्य थी लेंकिन उसके मन में पुरुषों के प्रति आकर्षण और प्यार बना रहता था। वह अपने शिकारी मित्र ओरियन के प्रति बहुत आकर्षित हो गयी थी। डायना और ओरियन की रुचियां बहुत कुछ समान थीं, अतः उनमें घनिष्ठता स्थापित हो गयी थी। यह देखकर अपोलो को बहुत ईर्ष्या हुई और उसने समय पाकर ओरियन की हत्या कराने का निश्चय कर लिया। अपोलो एक दिन डायना और ओरियन के साथ समुद्र तट पर गया। अपोलो और डायना आपस में बातें कर रहे थे। डायना बातों में इतनी व्यस्त थी कि उसने यह देखा ही नहीं कि ओरियन कब समुद्र-स्नान के लिए निकल गया परंतु अपोलो की निगाह ओरियन पर ही थी। उसने देखा कि ओरियन का पूरा शरीर जल के भीतर था और केवल सिर बाहर दिखाई पड़ रहा था, परंतु बहुत दूर होने के कारण उसे पहचाना नहीं जा सकता था। अपोलो ने अवसर का लाभ उठाकर ओरियन को डायना के हाथों से मरवाने का निश्चय करके डायना को ओरियन का सिर दिखाया

और पूछा, ''तुम दूर पानी में वह काला पदार्थ देख रही हो?'' डायना ने जब हां कह दिया और अपोलो को यह विश्वास हो गया कि डायना ने ओरियन के सिर को नहीं पहचाना है, तब उसने डायना से कहा, ''यदि तुम उस काली वस्तु को बाण से बेध दोगी तो मैं तुम्हें एक कुशल निशानेबाज मान लूंगा।'' डायना को सपने में भी यह अनुमान न था कि वह काली वस्तु ओरियन का सिर हो सकती है। उसने अपोलो की चुनौती को स्वीकार कर लिया और हाथ में धनुष उठाकर निशाना साधा। तीर ओरियन के सिर में प्रवेश कर गया और थोड़ी ही देर में ओरियन की लाश पानी पर तैरने लगी। समुद्र की लहरों ने उस लाश को ठीक उस जगह ला पटका, जहां डायना बैठी थी। डायना को जब यह ज्ञात हुआ कि अपोलो ने उसके हाथों से उसके परम मित्र ओरियन की हत्या करा दी है, तब वह बहुत दुःखी हुई और उसने ओरियन को सम्मानित करने की दृष्टि से उसे अंतरिक्ष में तारामंडल के मध्य में स्थापित कर दिया।

डायना की उपासना चन्द्रमा की देवी के रूप में की जाती रही। उस रूप में उसे सिंथिया कहा जाता था। एक बार वह एक सुंदर युवा चरवाहे एन्डीमियोन के प्रेम में फंस गयी। डायना का पिता जुपीटर यह देखकर बहुत नाराज हुआ। उसे यह पसंद न था कि उसकी बेटी देवी होकर किसी मनुष्य से प्रेम करे, इसलिए उसने एन्डीमियोन को बुलाकर उसे मृत्यु अथवा चिरनिद्रा में से एक चुनने का आदेश दिया और यह भी कह दिया कि यदि उसने चिरनिद्रा को चुना तो वह सदा युवा रहेगा। एन्डीमियोन ने मृत्यु के बजाय चिरनिद्रा को चुना।

अगली बार डायना ने एन्डीमियोन को रात के समय एक शिला पर सोते देखा। वह बहुत सुंदर लग रहा था, उसका चेहरा पूर्णिमा के उजाले में बहुत निखर गया था। डायना पृथ्वी पर उतरी। उसने उसे जी भरकर चूमा तथा जगाने की कोशिश की। उसे यह मालूम न था कि उसके पिता ने एन्डीमियोन को सदा के लिए सुला दिया है। जब उसे इस बात का ज्ञान हुआ तो उसे अपने पिता पर बहुत खीझ आयी तथा उसका हृदय एन्डीमियोन के प्रति यह जानकर बहुत ऋणी हो गया कि उसने डायना की खातिर चिरयौवनपूर्ण चिरनिद्रा स्वीकार की। भले ही एन्डीमियोन डायना को न देख सकता हो, लेकिन डायना उसे देख सकती थी और उसके शरीर को अपनी बांहों में भरकर उसका आलिगन कर सकती थी। आज भी डायना हर पूर्णिमा की रात को आकाश से उतरकर एन्डीमियोन को बांहों में भरकर आलिंगन करती और चूमती है। डायना ने तो अपने मन में आजीवन संयम से रहने का निश्चय किया था परंतु प्रेम की देवी वीनस भला यह कैसे सहन करती! वह तो यह देख ही नहीं सकती कि किसी भी देवता या मनुष्य के हृदय में प्रेम और काम का भाव उत्पन्न न हो।

प्रेम की देवी वीनस

यूनानियों की देवी अफ्रोडाईट रोम में वीनस कहलायी। यूनानी ऐसा मानते थे कि उसका जन्म समुद्र के झाग से हुआ है, परंतु रोम में यह धारणा प्रचलित रही कि वीनस जुपीटर और उसकी प्रेमिका डायोन की बेटी है। डायोन स्वर्ग लोक की

डायना (आर्तेमिस) द्वारा एन्डीमियोन का चुंबन

अप्सरा थी। वीनस समूची प्रकृति और उसके प्राणियों में नर और नारी के बीच प्रेम की प्रतीक तथा वह प्रजनन की देवी है। वीनस सौंदर्य की साक्षात् प्रतिमा है तथा उसके भीतर संपूर्ण स्त्रियोचित आकर्षण और गरिमा है। वीनस के साथ सबसे बड़ी दुर्घटना यह हुई कि उसका विवाह ओलिम्पस पर्वत पर रहने वाले देवताओं में सबसे अधिक कुरूप देवता वल्कन के साथ हुआ। वल्कन का शरीर भारी-भरकम तो था ही, वह लंगड़ा भी था। वल्कन स्वयं लुहारी का धंधा करता था।

वीनस के एक पुत्र का नाम क्यूपिड था, जो हमेशा उसके साथ रहता और अपने कंधे पर धनुष-बाण लिए रहता था। उसके तरकश में दो प्रकार के बाण थे—सोने की नोक वाले और सीसे की नोक वाले। जब किसी के मन में प्रेम उत्पन्न करना होता तो वीनस उसे सोने की नोक वाला तीर चलाने की आज्ञा देती और जब घृणा उत्पन्न करनी होती तो सीसे की नोक वाला।

वीनस के दूसरे बेटे का नाम एनीयास था, जिसने इटली पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया और जिसके वंशजों ने रोम बसाया। वीनस का हृदय बहुत कोमल था और वह प्रेमियों के मिलन में हमेशा सहायता करती थी। अन्य देवताओं की भांति वह स्वयं भी अनेक प्रेम-प्रसंगों में लिप्त थी।

यूनान के एक राजा की बेटी अटलान्टा दौड़ने में बहुत तेज थी। उसके पिता ने निश्चय किया कि वह अटलान्टा का विवाह ऐसे युवक के साथ करेगा, जो दौड़ में उसे पछाड़ दे। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले युवक को अटलान्टा से हार जाने के बाद प्राणों से हाथ धोना पड़ता था। अटलान्टा के अनेक प्रेमी इस प्रकार अपने प्राण गंवा चुके थे। एक बार अटलान्टा की निगाह एक नवयुवक हिप्पोमैनीज पर जा पड़ी,

जो उसे इस तरह देख रहा था मानो वह सोच रहा हो कि इस स्त्री के लिए प्राण गंवाना तो निरी मूर्खता है, परंतु वास्तव में उसके मन में अटलान्टा के प्रति गहरा प्रेम था। अटलान्टा को इसकी चेतना न थी। हिप्पोमैनीज ने वीनस के सामने बहुत अनुनय-विनय की कि वह उसका विवाह अटलान्टा के संग करा दे। वीनस का हृदय हिप्पोमैनीज की दशा देखकर पिघल गया और उसने उसे सोने के तीन सेब देकर उनका प्रयोग करने की विधि भी बता दी।

अटलान्टा को यह आशा न थी कि हिप्पोमैनीज उसके संग विवाह करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालेगा परंतु एक दिन जब उसने हिप्पोमैनीज को दौड़ में अपने प्रतिस्पर्धी के रूप मे खड़ा देखा तो वह चकित हो गयी। उसे इस बात का होश न था कि उसके मन में हिप्पोमैनीज के प्रति प्रेम अंकुरित हो चुका है। दौड़ शुरू हुई और अटलान्टा हिप्पोमैनीज से आगे चलती रही। कुछ समय बाद हिप्पोमैनीज ने वीनस के निर्देशों के अनुसार दौड़ के मार्ग पर अटलान्टा के सामने सोने का एक सेब लुढ़का दिया। उस सेब को उठाने के लिए अटलान्टा को अपनी गति थोड़ी धीमी करनी पड़ी लेकिन उससे कोई अंतर नहीं पड़ा। वह हिप्पोमैनीज से निरंतर आगे थी और उसके मन में यह विश्वास था कि वह दौड़ जीत लेगी। थोड़ी दूर और दौड़ने पर हिप्पोमैनीज ने दूसरा सेब मार्ग पर लुढ़काया। अटलान्टा ने उसे भी उठा लिया और वह अपने प्रतिस्पर्धी से आगे बनी रही। अब हिप्पोमैनीज ने अपने हाथ का तीसरा सेब भी लुढ़काया। मगर इस बार उसने सेब को दौड़ के मार्ग पर नहीं वरन् उससे थोड़ा हटकर लुढ़काया। यह देखकर अटलान्टा एक बार तो झिझकी कि तीसरा सेब उठाये या न उठाये, लेकिन अंत में उसने निश्चय किया कि वह सेब को उठायेगी। उसके मन में पूरा विश्वास था कि दौड़ में उसे कोई भी नहीं पछाड़ सकता लेकिन इस बार हिप्पोमैनीज उससे आगे निकल गया और दौड़ के अंतिम चरण में उसने विजय प्राप्त कर ली। कहा जाता है कि अटलान्टा ने जानबूझकर अपने कदम धीमे कर दिये थे, वह हिप्पोमैनीज से प्यार करने लगी थी और सोने के सेब उठाने के बहाने वह स्वयं हिप्पोमैनीज से हार गयी। अटलान्टा और हिप्पोमैनीज का विवाह हो गया। वे जीवन भर वीनस के मंदिर में अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाते रहे, क्योंकि उनका मिलन वीनस के कारण ही संभव हो सका था। यदि वीनस ने हिप्पोमैनीज को सोने के सेब न दिये होते तो अटलान्टा को अपने कदम धीमे करने का बहाना ही न मिलता।

मूर्ति में प्राण

एक बार वीनस ने देखा कि एक युवा मूर्तिकार पिगमेलियन ने एक नारी प्रतिमा बनायी और उसका नाम गेलेतिया रखा। पिगमेलियन गेलेतिया की मूर्ति के सामने बैठा-बैठा घंटों प्रेम भाव से उसे निहारता रहता। कुछ दिनों बाद एक त्योहार के अवसर पर पिगमेलियन अन्य किसी देवता के मंदिर में जाने के बजाय वीनस के मंदिर में गया और उसने वीनस की प्रतिमा पर बहुत मूल्यवान भेंटें तथा खाद्य पदार्थ चढ़ाये। वीनस उससे बहुत प्रसन्न हुई और उसने गेलेतिया की मूर्ति में
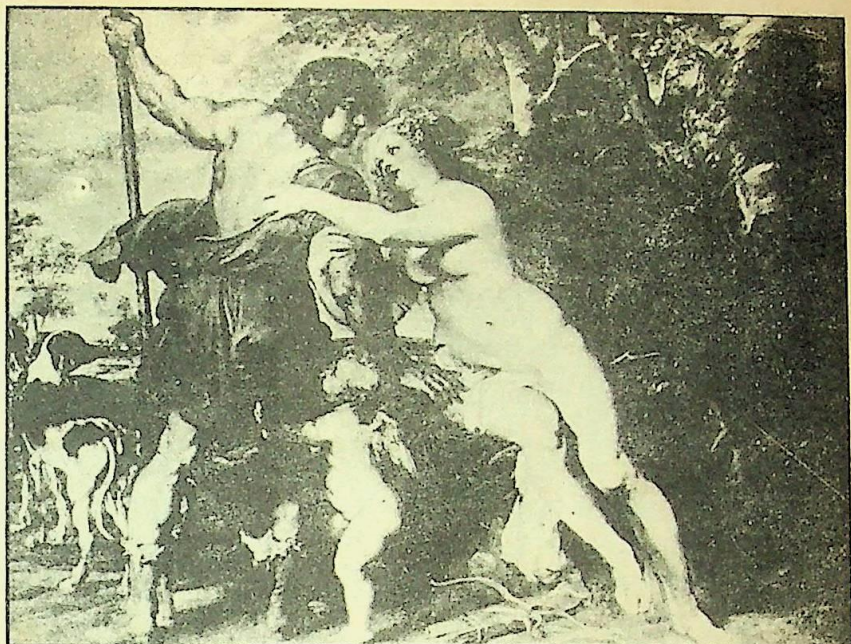
वीनस और एडोनिस

जान डालकर उसे साक्षात् स्त्री में बदल दिया। अब गेलेतिया एक जीती-जागती स्त्री बन गयी। वह उस मूर्ति से कहीं अधिक सुंदर थी, जिसका निर्माण पिगमेलियन ने किया था तथा जिसे वह प्रेम से निहारा करता था। मूर्ति को साक्षात् स्त्री में बदला हुआ देखकर पिगमेलियन का हृदय प्रेम की देवी वीनस के प्रति कृतज्ञता से भर उठा और उसने गेलेतिया की बांह थामने से पहले वीनस के प्रति आभार प्रकट किया।

एडोनिस :—वीनस का विवाह भारी-भरकम, कुरूप और लंगड़े देवता वल्कन के संग हुआ था जबकि स्वयं वीनस अप्रतिम सौंदर्य की प्रतिमा थी। उसके लिए यह बहुत स्वाभाविक था कि वह प्रेम के लिए दूसरे पुरुषों की ओर दृष्टि डालती। उसके अनेक प्रेमी थे। मगर वह एक युवा चरवाहे एडोनिस को सबसे अधिक चाहती थी। एक दिन एडोनिस जंगली सुअर के साथ एक मुठभेड़ में मारा गया। प्रेमी की मृत्यु पर वीनस बहुत विह्वल हो उठी। उसने एडोनिस की लाश को अपनी बांहों में भर लिया और उसे तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि देवताओं ने उसे यह वचन नहीं दिया कि वह बसंत और ग्रीष्म में तो उसके साथ रह ही सकती है। वर्ष का शेष समय भी उसके साथ बिता सकती है परंतु इसके लिए उसे पाताल लोक में जाना होगा।

रोम के लोगों के मन में वीनस के प्रति अनूठा सम्मान और प्रेम था क्योंकि उसका बेटा एनीयास ट्रॉय के लोगों को लेकर उसकी प्रेरणा से ही इटली आया और वहां बसा। रोमनों नें वीनस के सम्मान में ऊंचे और सुंदर मंदिर बनाये। ■■

रोम के मिथक-2: रोम्यूलस और हर्क्यूलीज़

रोम के लोग स्वभावत: युद्धप्रिय लोग थे। उन्होंने मार्स (मंगल ग्रह का देवता) को अपना संरक्षक देवता माना था। वे उसको अपना दैवी पूर्वज भी मानते थे, क्योंकि रोम के संस्थापक रोम्यूलस और रीमस के बारे में यह विश्वास प्रचलित था कि वे दोनों मार्स के पुत्र थे।

ट्रॉय को जब यूनान के निवासियों ने नष्ट कर दिया तो बचे-खुचे ट्रॉयवासी वीनस के पुत्र एनीयास के नेतृत्व में इटली चले गये थे और वहीं बस गये थे। कुछ समय पश्चात् एनीयास के पुत्र आइयूलस ने एल्बा-लौंग्गा नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया। आइयूलस का एक वंशज न्यूमिटोर था, जो एल्बा-लौंग्गा का राजा बना। न्यूमिटोर का भाई आमूलियस उससे बहुत द्वेष करता था और स्वयं एल्बा-लौंग्गा का राजा बनना चाहता था। कुछ समय बाद वह अपने उद्देश्य में सफल हो गया और उसने अपने भाई न्यूमिटोर के हाथों से सत्ता छीन ली। अपनी सत्ता को सुरक्षित करने के लिए उसने न्यूमिटोर के बच्चों को नष्ट करने का प्रयास किया, जिससे कि वे एल्बा-लौंग्गा के राजसिंहासन पर दावा न कर सकें। आमूलियस ने न्यूमिटोर के पुत्र की हत्या कर दी और उसकी बेटी रीया सिल्विया को वेस्ता देवी के मंदिर में पुजारिन के रूप में नियुक्त करके इस बात पर विवश कर दिया कि वह आजीवन कुंवारी रहे और संतान उत्पन्न न कर सके।

आमूलियस ने तो अपनी ओर से अपनी सुरक्षा का पूरा प्रबंध कर लिया था परंतु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। मार्स देवता रीया सिल्विया से प्रेम करने लगा और रीया सिल्विया उससे गर्भवती हो गयी। उसने दो पुत्रों रोम्यूलस और रीमस को जन्म दिया। अपनी भतीजी की कोख से दो जुड़वां बच्चों के जन्म का समाचार मिलने पर आमूलियस ने उसे अपने सामने बुलाया और उस पर अनैतिक आचरण का आरोप लगाया। रीया सिल्विया बार-बार कहती रही कि वह मार्स देवता से गर्भवती हुई थी परंतु आमूलियस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उसने रीया सिल्विया को जेल में पटक दिया। आमूलियस ने उसके बच्चों को उससे छीन लिया और उन्हें लकड़ी की पेटी में बंद करके पेटी को टाइबर नदी के जल में छोड़ने का आदेश दे दिया। भारी वर्षा के कारण नदी में बाढ़ आयी हुई थी और उसका पानी नगर से सटे हुए खेतों तक फैल गया था। आमूलियस ने अपने जिन कर्मचारियों को रोम्यूलस और रीमस से युक्त पेटी टाइबर के जल में छोड़ने का

काम सौंपा था, उन्होंने पेटी को खेतों में फैले जल पर छोड़ना उचित समझकर वैसा ही किया।

मार्स देवता ने अपनी दृष्टि अपने पुत्रों पर गड़ाये रखी और उसने यह देख लिया कि राजा के कर्मचारी उसके बच्चों की पेटी बाढ़ के पानी पर छोड़ गये हैं। अब उसने टाइबर नदी को उसकी मुख्य धारा में लौटने का आदेश दिया। वह बच्चों वाली पेटी को भूमि पर छोड़कर अपनी मुख्य धारा में सिमट गयी।

संयोगवश एक भूखी मादा भेड़िया उधर से गुजर रही थी, जैसे ही उसने उस पेटी को देखा, वैसे ही वह उसके पास पहुंची और अपने तेज दांतों तथा पंजों की मदद से उसने पेटी को उधेड़ डाला। मादा भेड़िया की निगाह जैसे ही बच्चों पर पड़ी, पहले तो उसे लगा कि ईश्वर ने उसके लिए पेट भर भोजन का प्रबंध कर दिया है, लेकिन अगले ही क्षण उसके हृदय में उन बच्चों के प्रति मातृभाव जागृत हो गया और उसके स्तनों में स्वतः दूध उतर आया। उसने उन बच्चों को अपने जबड़े में उठाया और उन्हें एकांत तथा सुरक्षित स्थान पर ले जाकर वह अपना दूध पिलाने लगी। बच्चे जब थोड़ा बड़े हुए, तब एक चिड़िया उनसे प्रेम करने लगी। वह कहीं दूर से अपनी चोंच में रोटी के टुकड़े लाकर उन्हें खिलाती, जिससे कि बच्चे हृष्ट-पुष्ट और शक्तिशाली बनते चले गये।

अब मार्स के मन में यह विचार आया कि इन बच्चों को किसी मनुष्य के घर में भेजा जाये। उसके मन में यह डर था कि यदि बच्चों को मादा भेड़िया ही पालती रही तो वे भेड़ियों जैसे बन जायेंगे। मार्स की प्रेरणा से एक दिन फोस्तूलस नाम का चरवाहा उधर से गुजरा, जहां मादा भेड़िया रोम्यूलस और रीमस के नंगे शरीरों को चाट रही थी और बच्चे उसका दूध पी रहे थे। फोस्तूलस को यह देखकर आश्चर्य हुआ और उसके मन में यह विचार आया कि वह उन बच्चों को अपने घर ले जाकर स्वयं उनका पालन-पोषण करे। मगर उसे डर था कि यदि उसने बच्चों को हाथ लगाया तो मादा भेड़िया उस पर आक्रमण करेगी। उसने देखा कि वह रोटी के टुकड़े लाने वाली चिड़ियां के अतिरिक्त अन्य किसी को बच्चों के पास नहीं जाने देती परंतु फोस्तूलस का यह भय निर्मूल था। मार्स देवता ने मादा भेड़िया को पहले ही फोस्तूलस का परिचय दे दिया था और जब फोस्तूलस ने बच्चों के पास जाकर उन्हें गोद में उठाया तो वह न तो उस पर गुर्राई न ही उस पर झटपी। ऐसा लगता था मानो उन बच्चों के लालन-पालन के सिलसिले में उसे अपनी भूमिका समाप्त हो जाने का बोध हो गया था। वह आंखों में उदासी लिए बच्चों को ले जाते हुए फोस्तूलस को देखती रही।

फोस्तूलस रोम्यूलस और रीमस को घर ले गया तथा उसने उन्हें अपनी पत्नी को सौंप दिया। उसकी पत्नी बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्न हुई और उसने उन्हें ईश्वर का वरदान मानकर उनका पालन-पोषण किया क्योंकि वह स्वयं बांझ थी। चरवाहे और उसकी भली पत्नी ने बच्चों को पालकर बड़ा कर दिया। रोम्यूलस और रीमस शीघ्र ही दो बलशाली, साहसी और सुसंस्कृत युवकों के रूप में उभर

आये। उन्होंने अपना अधिकांश समय पशु-पालन, खेती और शिकार में लगाना शुरू कर दिया। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उनके क्षेत्र के लोगों को डाकुओं ने आतंकित कर रखा है, तब उन्होंने चरवाहों के लड़कों को इकट्ठा करके डाकुओं पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। वे डाकुओं को मार डालने और उनसे लूट का माल छीनकर उस माल के असली स्वामियों को लौटा देते। अपने इस कार्य के कारण वे अपने क्षेत्र के लोकप्रिय नायक बन गये।

एक दिन डाकुओं ने रोम्यूलस और रीमस को पकड़ने के लिए जाल बिछाया। रोम्यूलस ने डटकर उनका सामना किया और वह उनके जाल से बच निकला, परंतु रीमस नहीं बच सका। डाकुओं ने रीमस को पकड़ लिया और वह उसे राजा आमूलियस के पास ले गये। उन्होंने उस पर तथा उसके भाई पर भूतपूर्व राजा न्यूमिटोर के पशु चुराने का आरोप लगाया। आमूलियस ने आरोप सुनने के बाद रीमस को अपने भाई न्यूमिटोर के पास दंड के लिए भेज दिया।

इसी बीच चारों ओर फैली हुई यह अफवाह फोस्तूलस के कानों तक जा पहुंची कि आमूलियस ने एक पेटी टाइबर नदी में फिंकवा दी थी, जिसके भीतर दो नवजात शिशु थे। फोस्तूलस को रोम्यूलस और रीमस के अनोखे साहस तथा उनकी न्यायप्रियता के कारण पहले से ही यह संदेह था कि उन दोनों बालकों की धमनियों में अवश्य ही राजसी रक्त होना चाहिए। इस अफवाह के आधार पर उसके मन में पक्का विश्वास हो गया कि उसने अपनी झोपड़ी में जिन दो बालकों—रोम्यूलस और रीमस का लालन-पालन किया है, वे वही बालक हैं, जिन्हें नदी में छोड़ा गया था।

अब फोस्तूलस ने यह उचित समझा कि रोम्यूलस को इस बारे में सब कुछ बता दिया जाये और उसने यही किया। दूसरी ओर न्यूमिटोर को यह ज्ञात था कि आमूलियस ने उसकी बेटी के जुड़वां बालकों को उससे छीनकर उन्हें डुबोने के लिए टाइबर नदी के जल में छुड़वा दिया था। डाकू जब रीमस को लेकर उसके पास पहुंचे और उन्होंने उसे बताया कि वह जुड़वां भाइयों की जोड़ी में से एक है तो उसके मस्तिष्क में तुरंत यह विचार कौंध गया कि हो न हो रीमस उसका धेवता है। न्यूमिटोर ने जब रीमस से उसके माता-पिता के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह और उसका भाई रोम्यूलस स्वयं को चरवाहे फोस्तूलस की संतान मानते हैं, हालांकि उन्होंने अपने बचपन के बारे में अफवाहें सुनी हैं कि उनके जीवन को टाइबर नदी की बाढ़ के जल से संकट उत्पन्न हो गया था और एक मादा भेड़िया तथा चिड़िया ने उनकी रक्षा की थी।

यह सुनकर न्यूमिटोर को पक्का विश्वास हो गया कि रीमस और कोई नहीं उसकी बेटी रीया सिल्विया का पुत्र तथा स्वयं उसका धेवता है। उसने रीमस को रोम्यूलस के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए भेज दिया और उन दोनों को चरवाहों की दो पृथक सेनाएं संगठित करने के लिए सहायता प्रदान की। योजना के अनुसार रोम्यूलस और रीमस के नेतृत्व में दो सैनिक दस्तों ने दो प्रतिकूल दिशाओं

से आमूलियस के राजमहल पर चढ़ाई कर दी और उस पर अचानक आक्रमण करके उसे मार डाला। एल्बा-लौंग्गा की जनता दमनकारी राजा से मुक्ति मिलने पर प्रसन्न थी। उसने न्यूमिटोर को उसकी राजगद्दी लौटा दी तथा उसे अपने राजा के रूप में स्वीकार कर लिया।

इसके पश्चात् दोनों भाई—रोम्यूलस और रीमस, उस स्थान पर एक नया नगर बसाने में जुट गये, जहां आमूलियस के कर्मचारियों ने उन्हें पेटी में बंद करके डूबने के लिए बाढ़ के प्रवाह में छोड़ दिया था। उन्होंने एक सुंदर-सा नगर बसाया। नगर बस जाने के बाद उनके सामने यह समस्या उत्पन्न हो गयी कि उस नगर का राजा कौन बने? जुड़वां भाई होने के कारण उनमें कोई बड़ा अथवा छोटा नहीं था। उन्होंने यह समस्या हल करने के लिए स्थानीय देवताओं की मदद ली लेकिन वह उनके कुछ काम न आयी क्योंकि उन दोनों में से प्रत्येक भाई राजा बनने के लिए बेचैन था। अंततः वे आपस में भिड़ गये और एक-दूसरे पर घूंसे बरसाने लगे। रोम्यूलस का एक घूंसा रीमस की कनपटी पर इतने जोर से पड़ा कि वह वहीं ढेर हो गया और उसके प्राण तत्काल निकल गये।

रीमस की मृत्यु के बाद रोम्यूलस नगर का राजा बना और उसने नगर का नाम अपने नाम पर रखा। तब से वह नगर रोम ही कहलाता है। रोम्यूलस ने दूसरे राज्यों के निर्धन लोगों और दासों को रोम में बसने का निमंत्रण दिया, जिससे कि रोम की जनसंख्या में भारी वृद्धि हो गयी।

रोम्यूलस के सामने एक बड़ी समस्या यह थी कि रोम में स्त्रियों की भारी कमी थी। उसने पड़ोसी राज्यों के लोगों से विनती की कि वे अपनी कुछ लड़कियों का विवाह रोम के निवासियों के साथ कर दें परंतु वे इसके लिए तैयार नहीं हुए क्योंकि वे एक ओर तो रोम के लोगों को अपनी अपेक्षा नीचा मानते थे, दूसरी ओर वे यह नहीं चाहते थे कि रोम की जनसंख्या में वृद्धि हो और वह शक्तिशाली बन जाये।

रोम्यूलस की बुद्धि बहुत तेज थी। उसने नेप्च्यून (वरुण) देवता के सम्मान में एक बहुत बड़ा समारोह आयोजित किया तथा अपने पड़ोसी राज्यों के लोगों को उसमें सपरिवार भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। चारों ओर से लोगों की भीड़ रोम में उमड़ पड़ी। वे उस रोम को देखना चाहते थे, जिसकी शान-शौकत की कहानियां नित्य उनके कानों में पड़ रही थीं।

उत्सव आरंभ हो गया और जब वह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा, तब रोम्यूलस ने अपने नगर के लोगों को एक पूर्व निश्चित संकेत दिया, जिसके मिलते ही उन्होंने क्षणभर में ही पड़ोसी राज्यों से आयी समस्त स्त्रियों को पकड़कर अपने अधिकार में कर लिया। उन स्त्रियों के साथ आये उनके संरक्षकों को रोमवासियों से इस प्रकार के व्यवहार की आशा न थी। इस पर वे चकित तो हुए ही, उन्हें क्रोध भी बहुत आया. परंतु वे उस समय असहाय थे और उनके पास अपनी रक्षा का कोई

उपाय न था। उन्हें अपनी स्त्रियों को खोकर खाली हाथ लौटना पड़ा। रोम के द्वारा पकड़ी गयी स्त्रियों को रोम्यूलस ने स्वयं यह आश्वासन दिया कि रोम के लोग उनके साथ अच्छे पतियों जैसा व्यवहार करेंगे और उन स्त्रियों को वे सब स्वतंत्रताएं तथा विशेषाधिकार प्राप्त होंगे, जो रोम के निवासियों को प्राप्त थे। रोम्यूलस ने रोमवासियों को भी चेतावनी दी कि यदि उनमें से किसी ने भी अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार किया तो उससे उसकी पत्नी छीन ली जायेगी और उसे उसके नये पति के घर में दास बनकर रहना पड़ेगा। उन स्त्रियों के मन में रोम्यूलस के प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया और वे अपने पतियों की सेवा वफादारी के साथ करने लगीं, परंतु पड़ोसी राज्यों के उनके संबंधी उस स्थिति से संतुष्ट न थे, जो रोम्यूलस ने उन पर लाद दी थी। वे समय-समय पर रोम पर चढ़ाई करते रहते थे, जिसके कारण रोम्यूलस को रोम की रक्षा के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता था। अंततः उन स्त्रियों ने ही पड़ोसी राज्यों के अपने संबंधियों का सामना स्वयं करने का निश्चय किया और उन्होंने उन्हें अपने नये घर रोम के प्रति शत्रुता त्यागने के लिए विवश कर दिया।

रोम्यूलस की मृत्यु बहुत ही रहस्यमय ढंग से हुई। एक दिन वह अपनी सीनेट के सदस्यों से घिरा हुआ एक सैनिक परेड का निरीक्षण कर रहा था कि अचानक आकाश में तेज तूफान उठा और एक काले बादल ने रोम्यूलस को चारों ओर से लपेट लिया। सब लोग शरण लेने के लिए इधर-उधर भागे परंतु रोम्यूलस पूरी तरह बादल की गिरफ्त में था। तूफान उतर जाने और आकाश के स्वच्छ हो जाने पर रोम्यूलस का कहीं पता न लगा। रोम के लोगों के मन में यह धारणा उत्पन्न हो गयी कि रोम्यूलस को सशरीर स्वर्ग ले जाया गया है और उसे देवता की प्रदवी प्रदान कर दी गयी है। उन्होंने उसके सम्मान में एक मंदिर बनवाया। वे उसे देवता मानते रहे तथा उसकी पूजा करते रहे।

हर्क्यूलीज़

रोमवासी हर्क्यूलीज़ को अपना पौराणिक नायक मानते हैं। यूनान में उसका नाम हेराक्लीज था। वह जुपीटर की प्रेमिका एल्कीमीनी की कोख से उत्पन्न हुआ था। जुपीटर का पुत्र होने के बावजूद वह एल्कीमीनी के पति एम्फिट्रियौन का पुत्र माना जाता रहा।

जुपीटर की पत्नी जेनो हर्क्यूलीज से घृणा करती थी और उसे मरवाना चाहती थी। जब उसने देखा कि उसका पति जुपीटर हर्क्यूलीज़ को अमरत्व प्रदान करके देवता के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है तो उसने बाधा डालने के लिए हर्क्यूलीज़ को एक दर्जन कठिन और दुस्साहसपूर्ण कार्य सौंप दिये, जिनमें से एक भी पूरा न होने पर उसे देवता नहीं बनाया जा सकता था।

उनमें से एक दुस्साहसपूर्ण कार्य हाइड्रा नामक विषैले सर्प को मारना था। नौ फनों वाला यह दैत्य-सर्प आर्गोस के समीपवर्ती लार्नियन के दलदल वाले क्षेत्र में

हाइड्रा का मर्दन करते हर्क्यूलिस

रहता था। वह आसपास के देहातों में घूमता-फिरता और पालतू पशुओं को खा डालता था, जिसके कारण किसानों को खेती में वहुत कठिनाई आती थी।

हाइड्रा का बीच वाला फन अमर था। देवताओं और मनुष्यों में से कोई भी हाइड्रा को नहीं मार सकता था। हर्क्यूलीज़ ने उस पर अग्नि-बाण छोड़े और उसे दलदल से निकलने पर मजबूर कर दिया। अब उसने उसका बीच वाला फन पकड़ा अपनी गदा से उसके दूसरे सिरों पर चोट करने लगा। यह एक भीषण लड़ाई थी, जो वृंदावन के निकट पवित्र नदी, यमुना की दलदल में बसे कालियानाग के विरुद्ध भगवान कृष्ण के युद्ध की याद ताजा करती है।

हर्क्यूलीज़ जैसे ही उसके सिर तोड़ता, उनकी जगह नये सिर उग आते। तब उसने अपने साथी से कहा कि वह हाइड्रा के सिर कटते ही उसकी गर्दन पर जलती लकड़ी से दाग लगाता चला जाये। इस प्रकार नये सिर उगने बंद हो गये। अब हर्क्यूलीज़ ने उसके अमर सिर के टुकड़े करके एक भारी शिला के नीचे दबा दिया। इसके बाद उसने हाइड्रा के धड़ के टुकड़े किये और अपने तीरों की नोक उसके रक्त में डुबो-डुबोकर उन्हें घातक और विषैला बना लिया। ■■

जापान के मिथक-1: देवता

जापान एक प्राचीन देश है। मिथकों की दृष्टि से वह बहुत समृद्ध है। सृष्टि, देवताओं तथा मनुष्य जाति के निर्माण के बारे में उसके अपने मिथक हैं। जापान के मिथकों के अनुसार प्रारंभ में यह विश्व एक अनगढ़ तैलीय महासागर था। सृष्टि का उदय होने से पूर्व उसमें से एक नरकुल (सरकंडे) जैसा पदार्थ उदय हुआ। यह प्रथम देवता था। उस समय न आकाश का निर्माण हुआ था, न पृथ्वी का। धीरे-धीरे तैलीय महानगर का हल्का तत्त्व आकाश बनता चला गया और अधिक सघन तथा भारी अंग पृथ्वी बन गया। आरंभ में पृथ्वी कीचड़ का एक ढेर मात्र थी और उसमें गुरुत्वाकर्षण शक्ति न थी, अत: पृथ्वी आकाश और तैलीय समुद्र के बीच शून्य में तैरती रहती थी।

प्रथम देवता नरकुल भी भारहीनता की स्थिति में तैरता रहा। नरकुल देवता के साथ ही दो अन्य देवताओं का भी उदय हुआ, जिनके बारे में जापान के मिथकों में केवल यह उल्लेख मिलता है कि उनके संयोग से देवी-देवताओं की अनेक पीढ़ियों ने जन्म लिया। जापानी मिथकों में पहले-पहल दो देवताओं के नामों का उल्लेख मिलता है—आईज़ानागी और आईज़ानामी। इनमें आईज़ानागी पुरुष तत्त्व है और आईज़ानामी प्रकृति अथवा नारी तत्त्व। वे स्वर्ग अर्थात् देवलोक में उत्पन्न हुए थे और इन्द्रधनुष के पुल पर से होकर तैलीय महासागर के तल के समीप पहुंच गये थे। वे दोनों आपस में भाई-बहन थे। भाई ने बहन से पूछा, ''क्या तुम्हें नीचे ठोस पृथ्वी दिखायी देती है।'' इस पर आईज़ानामी ने उत्तर दिया कि उसे चारों ओर तरल पदार्थ के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस पर आईज़ानागी को यह सूझा कि नीचे उतरने से पहले अपने हाथ में स्वर्ग का रत्न-मंडित भाला ले लेना चाहिए और उसे महासागर में गड़ाकर यह पता लगा लेना चाहिए कि वहां कोई सघन अथवा ठोस पदार्थ है या नहीं। यदि वह होगा तो भाला गड़ाने पर स्वत: पता चल जायेगा। आईज़ानागी और आईजानामी दोनों ने मिलकर भाला अपने हाथों में पकड़ा और तैलीय महासागर में डुबोया। भाले से भूमि का पता नहीं चल सका परंतु जब उन्होंने भाला समुद्र से निकाला तो भाले से चिपका हुआ जो तैलीय पदार्थ महासागर के तल पर गिरा, वह जमकर ठोस हो गया और उससे कीचड़ जैसे पदार्थ का निर्माण हुआ, जिसे इकट्ठा करके आईज़ानागी और आईजानामी ने प्रथम भूखंड ओनो कोरो द्वीप की रचना की।

भूमि का निर्माण हो जाने के बाद आईज़ानागी और आईज़ानामी ने पवन, पर्वत, घाटी, वन, जलधारा, हरे मैदानों और वृक्षों के देवताओं को जन्म दिया।

समुद्र तल पर द्वीप की रचना के बाद आईज़ानागी और आईज़ानामी इन्द्रधनुष पर से इस द्वीप पर उतर आये। उन्होंने द्वीप पर एक सुंदर महल बनाया और स्वर्ग के भाले को उस महल के बीचों-बीच मुख्य स्तंभ के रूप में खड़ा कर दिया। अब उन दोनों ने आपस में विवाह कर लिया। वे पति-पत्नी बन जाने के बावजूद स्त्री-पुरुष सहवास की प्रक्रिया की ओर से अनजान थे। एक दिन वे दोनों सागर तट पर खड़ें थे कि अचानक उनकी दृष्टि संभोग में तल्लीन पक्षियों के जोड़े पर चली गयी। उस दृश्य ने उनके हृदय में सहवास की भावना उत्पन्न कर दी और उन्हें रति कर्म की कला सिखा दी। उसके पश्चात् उन्होंने आठ सुंदर बच्चों को जन्म दिया, जिनमें से प्रत्येक बालक ने एक द्वीप का रूप ले लिया। जापान देश इन आठ द्वीपों से मिलकर बना है।

भूमि का निर्माण हो जाने के बाद आईज़ानागी और आईज़ानामी ने पवन, पर्वत, घाटी, वन, जलधारा, हरे मैदानों और वृक्षों के देवताओं को जन्म दिया। इसके बाद आईजानागी के आग्रह पर आईज़ानामी ने विश्व की शासिका तथा सूर्य की देवी अमातेरासू को उत्पन्न किया। अमातेरासू आईजानागी और आईजानामी

के बच्चों में सबसे अधिक सुंदर और उज्ज्वल थी। अतः उन्होंने उसे आकाश में भेज दिया, जिससे कि वह अपने माता-पिता द्वारा निर्मित विश्व पर अपना प्रकाश बिखेर सके। अब आईज़ानामी ने एक अन्य अत्यंत सुंदर और उज्ज्वल बालक चन्द्र देवता को जन्म दिया और इन्द्रधनुष के पुल पर चढ़ाकर उसे भी आकाश में भेज दिया, जहां उसने अमातेरासू के संग विवाह कर लिया।

आईज़ानागी और आईज़ानामी ने अगले बच्चे का नाम सूसानो रखा। वे उससे बहुत प्रेम करते थे, शायद उनके अतिशय प्रेम ने ही सूसानो को बिगाड़ दिया था। बचपन से ही उसमें विध्वंसकारी प्रवृत्तियां उत्पन्न हो गयी थीं, फिर भी उसके माता-पिता ने उसको पृथ्वी का शासन सौंप दिया परंतु जब उन्होंने देखा कि वह अयोग्य व निर्दयी राजा है तो उन्होंने उसे आईजूमो अर्थात् पाताल लोक में पटक दिया और वहां का राजा बना दिया। उसे जापान में तूफान का देवता भी माना गया। अंत में आईज़ानामी की कोख से अग्नि देवता का जन्म हुआ। उसके जन्म की प्रक्रिया में आईज़ानामी के शरीर में अत्यधिक गर्मी उत्पन्न हो गयी। वह ज्वर से जलने लगी और अंततः उसकी मृत्यु हो गयी। एक अन्य धारणा यह भी प्रचलित है कि आठ द्वीपों को जन्म देने के पश्चात् ही आईज़ानामी ने अग्नि देवता को जन्म दिया था और उसकी मृत्यु उसी समय हो गयी थी। अन्य देवताओं अमातेरासू, चन्द्र देवता और तूफान देवता—सूसानो का जन्म आईजानामी की मृत्यु के पश्चात् आईज़ानागी की आंखों से हुआ था।

एक अन्य विवरण के अनुसार मृत्यु के समय आईज़ानामी ने पृथ्वी तथा जल की अलग-अलग देवियों को जन्म दिया था। इनमें से पृथ्वी देवी को अग्निदेव ने पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया और उसने एक बेटी को जन्म दिया, जिसने अपने सिर के बालों में से शहतूत के पेड़ तथा सिल्क के कीड़े और अपनी नाभि में से पांच प्रकार के अन्न पैदा किये।

आईज़ानामी की मृत्यु

शरीर छोड़ देने के बाद आईज़ानामी यमी अर्थात् पाताल लोक में रहने चली गयी। मृतकों के लिए अपने जीवित परिजनों को छोड़कर यमी (यमलोक) चले जाना सरल होता है परंतु उनके परजनों के लिए उनको भुला पाना उतना सरल नहीं होता। आईज़ानागी के लिए तो यह और भी कठिन था क्योंकि उसकी दुनिया आईज़ानामी तक ही सीमित थी, जो जन्म के समय से ही उसके साथ थी। उसने आईज़ानामी के साथ मिलकर ही सृष्टि का निर्माण किया था। वह यह समझ ही नहीं पा रहा था कि मृत्यु और चिरवियोग का क्या अर्थ है? उसका जन्म देवलोक में हुआ था और उसने कभी किसी को मरते नहीं देखा था। अतः आईज़ानामी की मृत्यु उसके लिए असह्य हो गयी और वह उसके पीछे-पीछे यमी तक जा पहुंचा। आईज़ानामी को देखते ही वह उससे बोला कि वह उसे संग लिये बिना पृथ्वी पर नहीं लौटेगा, क्योंकि वह उसके बिना जीवित नहीं रह सकता।

आईज़ानामी ने उसका विरोध किया और उससे कहा कि वह अब यमी छोड़कर नहीं जा सकती, क्योंकि उसने वहां का भोजन ग्रहण कर लिया है। उसने आईज़ानागी को पृथ्वी पर लौट जाने को कहा तथा यह भी बताया कि उसकी मृत्यु ने उन दोनों का विवाह भंग कर दिया है। आईज़ानागी टस से मस नहीं हुआ तथा आईज़ानामी के निर्देशों के विपरीत उसने उसे देखने के लिए पाताल के उस घोर अंधकार में एक मोमबत्ती जलायी तथा आईज़ानामी की सड़ी हुई लाश को देखकर उसका मन वितृष्णा से भर उठा।

यह देखकर आईज़ानामी आईज़ानागी पर उबल पड़ी। उसने यमी की आठ कुरूप चुड़ैलों को बुलाकर उन्हें आईज़ानागी को यमी से खदेड़ने का आदेश दिया। पृथ्वी और यमी के बीच की सुरंग के अंतिम छोर पर पहुंचकर आईज़ानामी ने आईज़ानागी को धमकी दी कि यदि वह उसके एकांत को भंग करेगा तो वह प्रतिदिन उसकी एक हजार प्रजा की गला घोंट कर हत्या कर देगी। आईज़ानागी ने इस धमकी के जवाब में उसे कहा कि उसे इस बारे में तनिक भी चिंता नहीं है, वह प्रतिदिन पंद्रह सौ लोगों को जन्म देने लगेगा।

अब आईज़ानामी ने क्रोध छोड़कर आईज़ानागी से विनती की कि पृथ्वी पर उसका समय पूरा हो चुका है। अतः वह उसे भूल जाये। उसने उसे सलाह दी कि वह मृत्यु, वियोग और विवाह की समाप्ति की वास्तविकता के साथ समझौता करके अपने लोगों के बीच लौट जाये और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करे। उसने उससे यह भी कहा कि यदि वह पृथ्वी पर अपना समय पूरा होने तक शांतिपूर्वक प्रतीक्षा करेगा तो अपनी मृत्यु के बाद वह पुनः उसके पास रह सकेगा। अपनी प्रिय पत्नी की सलाह मानकर आईज़ानागी पृथ्वी पर लौट आया। वह अपने जीवन के अंत तक आईज़ानामी के प्रति वफादार बना रहा और क्षणभर के लिए भी अपनी पत्नी के रूप में किसी दूसरी स्त्री की कल्पना नहीं की। अपनी मृत्यु के पश्चात् आईज़ानागी पुनः आईज़ानामी के साथ रहने के लिए यमी चला गया।

अमातेरासू

सूर्य की देवी अमातेरासू अपने छोटे भाई एवं पति चन्द्र देवता के साथ आकाश में सुखपूर्वक विचरण करती रही तथा उसने पृथ्वी पर मरणधर्मा जीवों की सृष्टि की। उसने पृथ्वी पर मनुष्यों का भरण-पोषण करने और उनकी सार-संभाल के लिए अन्नपूर्णा देवी की नियुक्ति की, जिसका नाम यूके-मोशी था। कुछ समय पश्चात् उसने चन्द्र देवता को यह पता लगाने के लिए पृथ्वी पर भेजा कि यूके-मोशी अपना कार्य कितनी कुशलता से कर रही है।

चन्द्र देवता का सत्कार करने के लिए यूके-मोशी मुंह खोलकर जब भूमि की ओर मुड़ी तो उसमें से उगला हुआ चावल खेतों में फैल गया। इसके बाद वह सूर्य की ओर मुड़ी और उसके मुंह से मछलियां तथा समुद्री वनस्पति निकल समुद्र पर फैल गयी। अंत में वह वनों से आच्छादित पहाड़ों की ओर मुड़ी और उसके मुंह से निकलकर अनेक पशु-पक्षी जंगलों में चले गये।
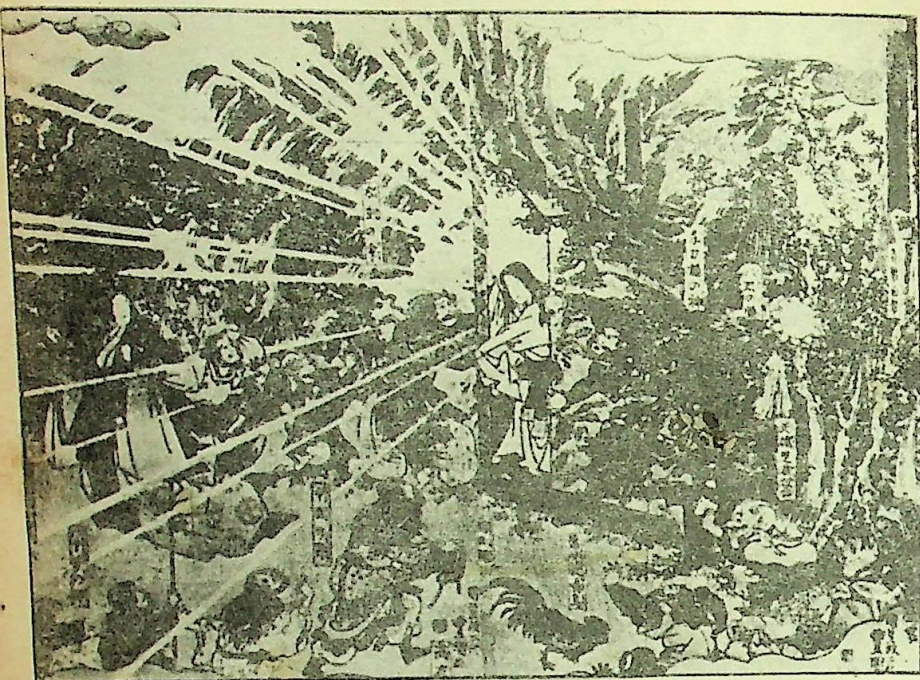
अमातेरासू: दिन और रात के होने के लिए जिम्मेदार

इसके पश्चात् यूके-मोशी ने उनमें से कुछ को इकट्ठा करके अनेक प्रकार के सुस्वादु व्यंजन तैयार किये और सौ चौकियों पर चन्द्र देवता के सामने परोस दिये। चन्द्र देवता यह देख रहा था कि उस अन्नपूर्णा ने किस प्रकार खाद्य पदार्थों को अपने मुंह से उगला था। वह उसके झूठे पदार्थों से बने व्यंजन देखकर घृणा से भर उठा। उसे यूके-मोशी पर बहुत क्रोध आया तथा ऐसा लगा कि निम्न-स्तर की उस देवी ने उसका अपमान किया है। उसे बहुत क्रोध आया और वह अपनी तलवार से यूके-मोशी की हत्या करके आकाश को लौट गया। वह सीधा अपनी पत्नी अमातेरासू के पास पहुंचा और उसने उसे सारा समाचार विस्तार से सुनाया।

अपने पति की बात सुनकर अमातेरासू उस पर बहुत नाराज हुई। उसने उसे बहुत धिक्कारा और वह यहां तक कह गयी कि वह जीवन भर उसका मुंह नहीं देखेगी। उस दिन के बाद से सूर्य और चन्द्रमा एक-दूसरे की ओर पीठ किये बैठे हैं। तब से ही दिन-रात होने लगे हैं।

अपने पति से संबंध तोड़ लेने के बाद अमातेरासू ने बादलों की आत्मा को यह देखने के लिए पृथ्वी पर भेजा कि यूके-मोशी की हत्या के बाद वहां कैसी स्थिति है। बादलों की आत्मा ने पृथ्वी से लौटकर अमातेरासू को बताया कि यूके-मोशी मरकर भी पृथ्वी के निवासियों की सेवा कर रही है। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके सिर में से गाय और घोड़े, बांहों में से रेशम के कीड़े, मस्तक में से बाजरा और पेट में

से धान के पौधे निकले हैं। बादलों की आत्मा उन सब बीजों को इकट्ठा करके अपने साथ ले गयी थी और उसने वे सब अमातेरासू को भेंट कर दिये। अमातेरासू यह जानकार बहुत प्रसन्न हुई कि यूके-मोशी अंतिम समय तक अपने कर्तव्य का पालन करती रही और उसने घोषणा की कि भोजन और वस्त्र के वे सब पदार्थों तथा पशु मानव-जाति के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। गायें उन्हें दूध प्रदान करेंगी तथा उनके बछड़े बड़े होकर खेत जोतने के काम आयेंगे। घोड़ों से वह बोझा खींचने का काम ले सकेंगे।

अमातेरासू ने अपनी ओर से पृथ्वी पर एक दैवी ग्राम-प्रमुख नियुक्त किया और उसे मौसम के अनुसार बीज बोने तथा उगाने का काम सौंपा। रेशम के कीड़े उसने अपने मुख में रख लिए और उनसे रेशम का धागा इकट्ठा करती रही। बाद में उसने रेशम के कीड़ों को शहतूत के उन पेड़ों पर छुड़वा दिया, जो अग्निदेव और पृथ्वी देवी की बेटी ने उत्पन्न किये थे। अमातेरासू ने रेशम का धागा तैयार करने तथा उससे कपड़ा बनाने की कला मनुष्यों को सिखाई।

एक बार अमातेरासू ने देखा कि उसका भाई तूफान देवता सूसानो उसके देव-लोक की ओर चला आ रहा है। वह यह जानती थी कि सूसानो बहुत उत्पाती है और वह उससे स्वर्ग तथा पृथ्वी का राज्य छीनने की कोशिश कर सकता है। अतः उसने सूसानो के आक्रमण की संभावना को ध्यान में रखकर अपने बचाव की तैयारियां कर लीं, परंतु सूसानो ने उसे आश्वासन दिया कि वह उससे झगड़ा करने नहीं वरन् पिता आईज़ानागी द्वारा सौंपे गये पाताल लोक की अंधकारपूर्ण दुनिया के लिए रवाना होने से पहले कुछ समय अमातेरासू के साथ बिताने की दृष्टि से उसके पास आया है। अमातेरासू ने प्रसन्नतापूर्वक उसे अपने पास ठहरने की अनुमति दे दी लेकिन उसे शीघ्र ही यह पता चल गया कि सूसानो ने उसके धान के खेतों तथा उनमें खड़ी फसल को नष्ट कर दिया है तथा धान की कटाई के अवसर पर उसके महल में मनाये जाने वाले उत्सव की पवित्रता नष्ट कर दी है। इतना ही नहीं, जब वह देवताओं के लिए रेशमी वस्त्र बुनने बैठी तब सूसानो ने छत की खपरैल हटा दी तथा उसमें से घोड़ी के एक बछेड़े को हॉल में फेंक दिया, जिसके कारण अमातेरासू चौंक गयी और उसकी अंगुली में उसके करघे की फिरनी चुभ जाने से उसे बहुत कष्ट हुआ।

अमातेरासू ने निश्चय कर लिया कि वह सूसानो का उत्पात अब और नहीं सहेगी। वह चुपचाप स्वर्ग की एक गुफा में घुस गयी और उसका द्वार बंद कर लिया, जिसके कारण पृथ्वी पर अंधकार छा गया तथा मनुष्य और देवता दोनों ही त्राहि-त्राहि करने लगे। पहले तो किसी को कुछ न सूझा कि अमातेरासू को किस प्रकार मनाया जाये लेकिन अंततः उन्होंने गुफा के द्वार पर अमातेरासू की प्रतिमा स्थापित करके उसकी पूजा की योजना बनायी। पूजा शुरू हो गयी तथा देवी-देवता इकट्ठे होकर दिन-रात उसकी स्तुतियां गाते व नाचते रहे। गाने और नाचने की आवाज जब अमातेरासू के कानों में पड़ी तो उसके मन में यह जानने का

अमातेरासू के माता-पिता आईज़ानागी और आईज़ानामी

कौतूहल जाग उठा कि उसकी गुफा के बाहर कैसा समारोह मनाया जा रहा है। उसने द्वार को हल्का-सा खोलकर उसमें से बाहर झांका। देवताओं ने जैसे ही उसे देखा, वे उसकी बांह पकड़कर उत्सव में ले गये और उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उस भेंट को स्वीकार कर लें, जो वे उसकी पूजा के लिए लाये थे। देवताओं ने सूसाऩो को दंड दिया और उसे उसके राज्य पाताल-लोक की ओर खदेड़ दिया। अमातेरासू देवताओं और मनुष्यों से प्रसन्न हो गयी तथा उसने उनकी भेंट स्वीकार करने के बाद समूचे विश्व का शासन फिर से अपने हाथों में संभाल लिया।

अमातेरासू ने निश्चय किया कि उसके माता-पिता आईज़ानागी और आईज़ानामी ने जिस जापान द्वीपसमूह का निर्माण किया था, उसका शासन वह अपने दौहित्र निनीजी को सौंपेगी। उसने उसे राज सत्ता के तीनों प्रतीक—तलवार, दर्पण और रत्न सौंप दिये। निनीजी एक दैवी शासक था, मानवीय नहीं। वह महान् पर्वत ओहोयामा की बेटी को-नो-हाना से प्रेम करना लगा तथा उन दोनों का विवाह हो गया। को-नो-हाना ने अपनी कोख से दो पुत्रों को जन्म दिया। उनके छोटे बेटे ने समुद्र के राजा की बेटी के साथ विवाह किया, जो एक बेटे को जन्म देकर समुद्र में लौट गयी लेकिन उसने अपने बच्चे की देखभाल के लिए अपनी बहन को भेज दिया। इस बच्चे ने बड़ा होने पर अपना पालन-पोषण करने वाली अपनी मौसी के संग विवाह कर लिया और उन दोनों ने एक बेटे को जन्म दिया, जिसका नाम जिम्मू तेन्नो रखा गया। यह जिम्मू तेन्नो ही जापान का प्रथम सम्राट बना।

जापान के मिथक-2: बेनटेन और तितली

जापान के मिथकों में सौभाग्य प्रदान करने वाले देवी-देवताओं में समुद्र की देवी बेनटेन का एक विशिष्ट स्थान है। बेनटेन साहित्य और संगीत तथा धन और प्रेम की देवी है। उसके बारे में यह धारणा प्रचलित है कि वह समुद्र के दैत्य सम्राट की पुत्री थी तथा उसने एक ऐसे दैत्य के संग विवाह किया था, जो अपने आसपास के गांवों के बच्चों को पकड़कर खा जाया करता था। बेनटेन के साथ विवाह के पश्चात् उसने मनुष्यों का मांस खाना छोड़ दिया था।

बेनटेन को करुणा की देवी के रूप में भी चित्रित किया गया है। वह पद्मासन की मुद्रा में कमल के फूल पर विराजमान है। यह उसकी अष्टभुजा मूर्ति है। वह अपने दूत के रूप में एक श्वेत सर्प का प्रयोग करती है। एक बार एक युवक, जिसका नाम बैशू था, अमादेरा देवालय के अहाते में बने हुए बेनटेन देवी के मंदिर में उसकी पूजा करने और उससे यह प्रार्थना करने के लिए गया कि वह किसी सुंदर और सुशील युवती के संग उसका विवाह करा दे। वहां उसने देखा कि देवालय के अहाते में एक नया जलाशय और नया मंदिर बेनटेन देवी को समर्पित किया गया है। उसने नये मंदिर में जाकर प्रार्थना की और जैसे ही वह देवी के सम्मुख जाकर खड़ा हुआ, कहीं से एक कागज उड़ता हुआ आया और उसके पांवों पर गिरा। बैशू ने वह कागज उठा लिया। उस पर किसी लड़की ने बहुत सुंदर अक्षरों में एक प्रेम कविता लिखी थी।

बैशू उस कागज को अपने साथ ले गया और बारीकी से उसका अध्ययन करता रहा। अंत में उसने निश्चय कर लिया कि वह उसी लड़की के संग विवाह करेगा, जिसने वह कविता अपने हाथ से लिखी थी। यह निश्चय करके वह वापस अमादेरा देवालय के अहाते में बने बेनटेन देवी के मंदिर में प्रार्थना करने के लिए गया। उसने देवी से प्रार्थना की कि "हे माता, तुम मुझे उस लड़की का परिचय प्रदान करो, जिसके हाथ की लिखी हुई प्रेम कविता मुझे तुम्हारे दर्शनों के समय प्राप्त हुई थी और उसके संग मेरा विवाह कराने में मेरी मदद करो।" उसने प्रतिज्ञा की कि वह सात दिन तक देवी के मंदिर में प्रार्थना करेगा तथा अंतिम दिन रात्रि-जागरण भी।

आठवें दिन सवेरा होने से कुछ समय पहले जब बैशू का जागरण समाप्त हो रहा था, तभी एक वृद्ध मंदिर में आया और उसके पीछे-पीछे एक युवक भी। युवक

पद्मासन की मुद्रा में कमल के फूल पर विराजमान आठ भुजाओं वाली करूणा की देवी बेनटेन

ने वृद्ध से कहा, ''वह विवाह संपन्न कराने का समय आ गया है, जिसके लिए सात दिन से प्रार्थना की जा रही है।'' वृद्ध एकदम खामोश था। उसने अपनी कमीज की बांह में से एक लाल डोरी निकाली और उसका एक सिरा बैशू के चारों ओर लपेट दिया। बैशू विस्मयपूर्वक यह सब देखता रहा। वृद्ध ने डोरी का दूसरा सिरा मंदिर के एक दीपक की लौ से जलाया और वह उसे हाथ में लेकर हवा में हिलाता रहा। डोरी धीरे-धीरे जलती जा रही थी। डोरी की आग बैशू के निकट पहुंचने ही वाली थी कि एक युवती मंदिर में घुसी और चुपचाप आगे आकर बैशू के पास बैठ गयी और वृद्ध ने जलती हुई डोरी बैशू की कमर से खोल दी।

जिस युवक ने वृद्ध से विवाह संपन्न कराने के लिए कहा था, अब वह बैशू की ओर मुड़ा और उससे बोला, ''बेनटेन देवी ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। देवी के आदेश पर ही इन वृद्ध महाशय ने उस लड़की का आह्वान किया, जिसने कागज पर वह प्रेम कविता लिखी थी, जो तुम्हारे पांवों पर जा गिरी थी। यह वही लड़की है।''

थोड़ी देर में बैशू ने देखा कि वह मंदिर में एकदम अकेला है और कविता लिखने वाली लड़की सहित सभी लोग गायब हो चुके हैं। वास्तव में वे तीनों प्रेत थे। बैशू मंदिर से उठकर घर की ओर चल दिया और जैसे ही वह अपने घर के समीप पहुंचा, उसे लड़की का प्रेत फिर से मिला। उसने बैशू को नये सिरे से परिचय नहीं दिया। वह कुछ बोली भी नहीं, परंतु जैसे ही वह बैशू के दरवाजे पर पहुंची, उसने कहा कि "बेनटन देवी ने तुम्हारे संग मेरा विवाह कर दिया है।" वह कई महीने तक बैशू के घर में उसके साथ पत्नी बनकर रही परंतु वह बैशू के अतिरिक्त और किसी को दिखाई नहीं देती थी। वह प्रेत थी।

जाड़े शुरू हो गये थे, तभी एक दिन बैशू टहलता-टहलता एक ऐसे स्थान पर जा निकला, जहां वह उससे पहले कभी नहीं गया था। वहां उसके पास एक व्यक्ति आया और उससे बोला, "मेरे स्वामी आपसे मिलना चाहते हैं।" बैशू के लिए वह व्यक्ति और उसका स्वामी दोनों ही अपरिचित थे, फिर भी वह उस व्यक्ति के साथ उसके स्वामी मिलने के लिए उसके घर में चला गया। गृहपति ने बैशू से कहा कि "तुम मेरे दामाद हो। मैंने ही अपनी बेटी के लिए उपयुक्त वर की तलाश में उसकी प्रेम-कविताएं बिखेरी थीं। बेनटेन के सम्मुख प्रार्थना की थी और बेनटेन ने मुझे स्वप्न में बताया था कि मेरी बेटी के लिए उपयुक्त पति प्राप्त हो गया है और वह शीघ्र ही मुझसे मिलेगा। पिछली रात बेनटेन ने फिर से दर्शन देकर मुझसे कहा था कि मेरी बेटी का भावी पति अगले दिन मेरे घर के सामने से गुजरेगा। बेनटेन ने मुझे तुम्हारा हुलिया भी समझा दिया था, जिसके आधार पर तुम्हें पहचानने में मुझे देरी नहीं लगी।"

यह सब सुनकर बैशू के मन में आया कि वह उससे कह दे कि उसका विवाह तो पहले ही हो चुका है। परंतु ठीक उसी समय गृहपति ने बराबर के कमरे का दरवाजा सरका दिया और बैशू की निगाह उस कमरे में खड़ी लड़की पर गयी। यह वही लड़की थी जिसे उसने बेनटेन के मंदिर में पत्नी के रूप में स्वीकार किया था और जो पिछले कुछ महीनों से उसके साथ उसके घर में रह रही थी।

अब उस युवती के पिता ने बैशू का विवाह उसके साथ कर दिया। इस सारे मामले में आश्चर्यजनक बात यह थी कि बैशू की पत्नी ने उसके साथ मंदिर में हुई भेंट, विवाह और पत्नी के रूप में उसके घर रहने का जिक्र उससे कभी नहीं किया। इसका कारण यह था कि भौतिक शरीर में विवाह से पहले वह उसके साथ प्रेत के रूप में मिली और रही थी। यह सब देवी बेनटेन की इच्छा से हुआ। वह उस लड़की के प्रति बैशू के प्रेम की परीक्षा लेना चाहती थी और जब उसे यह विश्वास हो गया कि बैशू सचमुच उसे प्रेम करता है, तब उसने उस लडकी के पिता को भौतिक रूप में विवाह संपन्न कराने का आदेश दे दिया।

तितली

बैशू के प्रकरण में उसकी प्रेमिका का प्रेत प्रेमिका के जीवन काल में ही उसके पास रहता रहा। एक अन्य जापानी मिथक में एक ऐसी युवती के प्रेत का उल्लेख
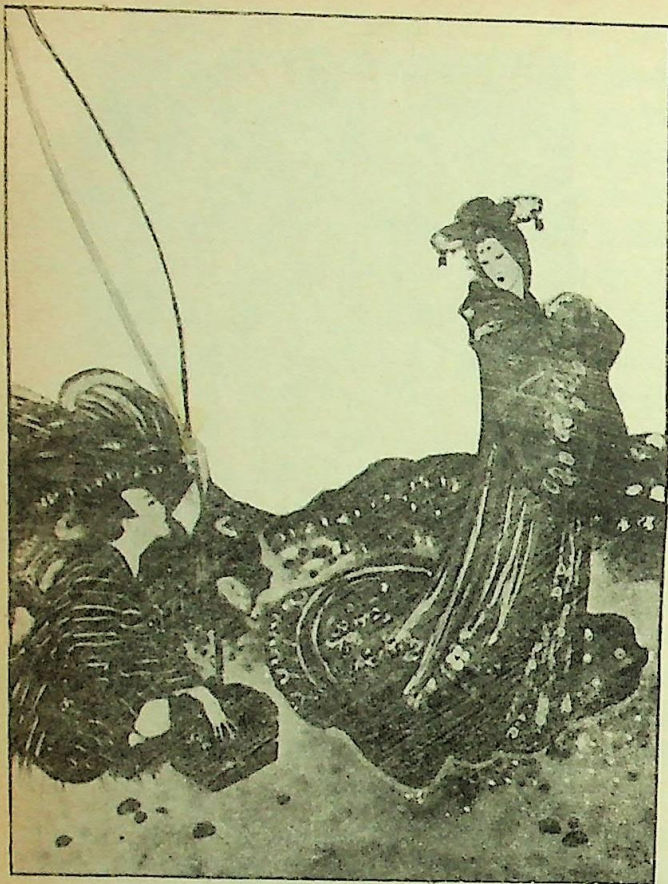
अपने प्रेमी के साथ अकीको

मिलता है, जिसका अपने प्रेमी पुरुष के संग विवाह होने से पहले ही देहांत हो गया था और जो अपनी मृत्यु के पश्चात् अपने प्रेमी के जीवन की अंतिम घड़ी तक उससे मिलती रही।

जापान में एक ऐसा पुरुष था, जिसकी आयु लगभग सत्तर वर्ष की थी। पिछले पचास वर्षों से किसी भी स्त्री के साथ उसके संबंध न थे। जापान के लिए वह पुरुष प्रायः बिरला ही माना जायेगा। एक दिन अचानक व बहुत बीमार हो गया। उसकी देखभाल करने वाला कोई भी न था। ऐसे में उसे अपनी विधवा भाभी का ध्यान आया, जो एक अन्य नगर में अपने युवा बेटे के साथ रहती थी और उसने अपनी बीमारी की सूचना उसके पास भिजवायी। इस महिला के मन में अपने देवर के प्रति बहुत आदर था। अतः वह उसकी देखभाल के लिए बेटे को साथ लेकर उसके घर जा पहुंची।

एक दिन वह बूढ़ा बिस्तर में लेटा हुआ था और उसका जवान भतीजा उसके पास बैठा था। अचानक उस लड़के को एक खिड़की से होकर कमरे में आती हुई बड़ी-सी सफेद तितली दिखाई दी, जो उसके चाचा के बिस्तर पर मंडराने लगी।

तितली बीच-बीच में बूढ़े के तकिये पर बैठ जाती और फिर से उसके चारों ओर मंडराने लगती। थोड़ी देर में वह तितली स्वयं ही खिड़की से होकर बाहर चली गयी।

तितली के असामान्य व्यवहार से लड़के के मन में उत्सुकता जाग उठी। वह उठा और घर से निकलकर तितली के पीछे-पीछे चलता गया। उसने देखा कि तितली उसके चाचा के घर के सामने सड़क के ठीक उस पार स्थानीय कब्रिस्तान की ओर गयी है। वह लड़का झपटकर कब्रिस्तान में जा पहुंचा और उसने देखा कि तितली एक साफ-सुथरी कब्र के पास जाकर अदृश्य हो गयी। उस कब्र पर एक पत्थर लगा हुआ था, जिस पर लिखा था—'अकीको'।

लड़का घर लौटा और जैसे ही वह अपने चाचा के बिस्तर के पहुंचा, उसको लगा कि चाचा का देहांत हो चुका है। चाचा की मृत्यु से उसे गहरा सदमा हुआ और वह अगले कुछ दिनों तक उसके अंतिम संस्कार, चर्च में प्रार्थना और पारिवारिक शोक आदि में व्यस्त रहा। इन सब से निपटकर जब उसे थोड़ा अवकाश मिला तो उसने अपनी मां को तितली का किस्सा सुनाया। बेटे की बात सुनकर मां ने उससे कहा कि "तुम्हारे चाचा जब जवान थे, तब उनका एक लड़की से बहुत गहरा प्यार हो गया था। इस लड़की का नाम अकीको था। तुम्हारे चाचा के साथ अकीको का रिश्ता तय हो गया, विवाह का दिन भी तय हो गया। मगर विवाह से एक दिन पहले ही अकीको की मृत्यु हो गयी। अकीको को सामने वाले कब्रिस्तान में दफनाया गया और तुम्हारे चाचा ने कब्रिस्तान के पास यह घर खरीदकर इसमें रहना शुरू कर दिया। पिछले पचास वर्षों से वे प्रतिदिन अकीको की कब्र की सफाई करके उस पर फूल चढ़ाते रहे और उन्होंने कभी इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहा। वह जीवन भर अपनी प्रेमिका का शोक मनाते रहे। वह तितली और कोई नहीं अकीको का प्रेत ही थी, जो अपने प्रेमी की अंतिम घड़ी में उसकी आत्मा को अपने साथ ले जाने के लिए आयी थी।"

■■

उत्तरी युरोप के मिथक-1: थोर का हथौड़ा

उत्तरी युरोप के मिथकों को पहली बार तेहरवीं शताब्दी में लिखित रूप प्रदान किया गया। इन मिथकों के अनुसार देवताओ का व्यक्तित्व मनुष्यों के समान ही है और उनमें मनुष्यों जैसी भावनाएं तथा कामनाएं होती हैं। वे मनुष्यों की भांति अपरिवर्तनशील भाग्य और मृत्यु के अधीन होते हैं। उन्हें भी वीरों की भांति रणक्षेत्र में मरना श्रेयस्कर लगता है। भारतीय मिथकों की भांति उत्तरी युरोप के मिथकों में भी देवताओं और दैत्यों के बीच युद्ध की स्थिति निरंतर बनी रहती है, परंतु भारतीय मिथकों के विपरीत उत्तरी युरोप के मिथकों में देवता प्रायः ही दैत्यों से हार जाते हैं। देवताओं का सम्राट ओडिन देवताओं की नियति को पहचानता है लेकिन उस पर उसका कोई वश नहीं चलता और दैत्य उसके नियंत्रण में नहीं रहते।

ओडिन उत्तरी युरोप का सर्वोच्च देवता है। उसकी पत्नी का नाम फ्रिग है। उनका एक बेटा बिजली और तूफान का देवता थोर है। देवताओं के लोक को असगार्ड कहा जाता है, मनुष्य लोक को मिडगार्ड और दैत्य लोक को जोटुन्हाइम।

थोर के अतिरिक्त सर्वोच्च देवता ओडिन और उसकी पत्नी फ्रिग के चार अन्य पुत्र हैं—बाल्डुर, होडुर, हर्मोड और ब्रागी। ब्रागी की पत्नी का नाम इडुन है। इडुन की टोकरी सदा सुनहरे सेबों से भरी रहती है। ये सेब वह देवताओं को परोसती है, जिन्हें खाकर वे सदा युवा बने रहते हैं। इन मिथकों में प्रजनन वायु और समुद्र का देवता एनजोर्ड है। एनजोर्ड एक पुत्र फ्रे और एक पुत्री फ्रेया का पिता है। फ्रे सूर्य का शासक और वर्षा का देवता है। फ्रेया मातृदेवी है। उसे प्रेम की देवी भी माना गया है। उत्तरी युरोप के देवताओं में एक चौकीदार बुद्धि का देवता हाइमडाल है तथा लोकी नाम का एक शरारती देवता भी है, जो अपनी कूट बुद्धि से समस्याओं का समाधान किया करता है। लोकी दैत्य माता-पिता कीं संतान है। उसकी राक्षसी पुत्री का नाम हेल है, जो पाताल लोक में मृतकों के प्रेतों पर शासन करती है। पाताल को वहां निफलहाइम कहा गया है।

उत्तरी युरोप के समुद्र बर्फ से ढके हैं, जिसके कारण वहां कुहरे की भारी समस्या रहती है, अतः वहां कुहरे के दैत्यों की कल्पना की गयी। इनमें प्रमुख कुहरा-दैत्य थजाजी और थ्रिम हैं। थ्रिम को मातृदेवी फ्रेया से प्रेम हो जाता है और वह उसके संग विवाह करने के लिए व्यग्र होकर थोर देवता के प्रमुख शस्त्र दैवी
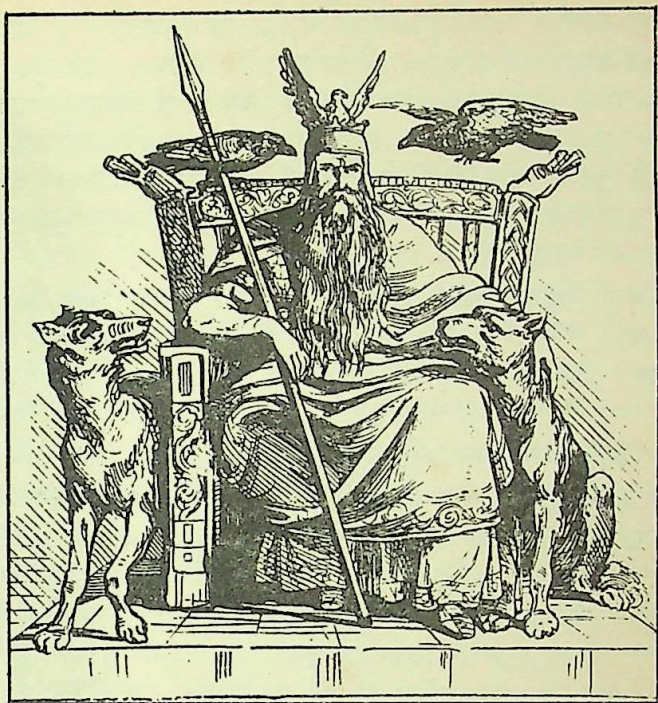
उत्तरी युरोप का सर्वोच्च देवता ओडिन

हथौड़े की चोरी कर लेता है, जिसके कारण स्वयं उसका और उसकी प्रजा का विनाश होता है। थोर के हथौड़े का नाम है—एमजौलनिर।

एमजौलनिर

उत्तरी युरोप के मिथकों का अतिपुरुष अथवा नायक थोर है। एक दिन सवेरे सोकर उठने पर थोर को उसका हथौड़ा दिखाई नहीं पड़ा। उसने सारा देवलोक छान मारा मगर हथौड़ा उसे नहीं मिल पाया। इस कारण वह क्रुद्ध और हताश हो गया। उसने शरारती और समस्या सुलझाने वाले देवता लोकी को बुलाकर उससे अपना हथौड़ा खो जाने की बात कही। लोकी जानता था कि थोर का हथौड़ा किसने चुराया होगा और चोर उसे कहां ले गया होगा। उसने थोर से वादा किया कि वह उसके हथौड़े को जल्दी से जल्दी खोज निकालने का भरसक प्रयास करेगा। थोर को संग लेकर लोकी फ्रेया के महल में जा पहुंचा और उसने फ्रेया से कहा, "मुझे थोर के शक्तिशाली शस्त्र की तलाश में जोटुन्हाइम जाना है। अतः तुम मुझे फाख्ता पक्षी के पंखों वाला अपना लबादा दे दो, जिससे कि मैं उड़कर वहां जल्दी से पहुंच सकूं।" लोकी ने फ्रेया को बताया, "मुझे पक्का विश्वास है कि थोर का हथौड़ा अवश्य ही किसी दैत्य ने चुराया है; कोई साधारण व्यक्ति तो उसे छूने की भी हिम्मत नहीं कर सकता।"

फ्रेया लोकी को अपना लबादा देने के लिए तैयार हो गयी और लोकी उस लबादे को ओढ़कर दैत्य-लोक जोटुन्हाइम जा पहुंचा। जहां कुहरा-दैत्य थ्रिम दैत्य-सभाभवन में बैठा हुआ था। थ्रिम को देखते ही लोकी उसके पास जा पहुचा। लोकी को देखकर थ्रिम ने पूछा, "बोलो भाई लोकी, क्या हालचाल हैं देवलोक के? ठीक तो हैं तुम्हारे देवता लोग? कैसी है देव-लोक की शरारती परियां?" लोकी ने थ्रिम को बताया कि थोर का हथौड़ा एमजौलनिर गुम हो जाने के कारण देवता और परियां सभी परेशान हैं।

थ्रिम ने बेहिचक लोकी के सामने स्वीकार किया, "थोर का हथौड़ा और किसी ने नहीं, मैंने चुराया है और मैंने उसे असगार्ड से लाकर भूमि में बहुत गहरे गाड़ दिया है। मैं उस हथौड़े को लौटा सकता हूं, मगर शर्त यह है कि असगार्ड के देवता ओडिन और फ्रिम की पोती मातृदेवी फ्रेया का विवाह मेरे संग करने को तैयार हो जायें। देवता अन्य किसी भी प्रकार मुझसे वह हथौड़ा वापस नहीं ले सकते।"

यह सारी बात सुनकर लोकी ने फ्रेया का दिया हुआ फाख्ता के पंखों वाला लबादा फिर से ओढ़ लिया और वह पवन वेग से उड़कर कुछ ही क्षणों में असगार्ड पहुंच गया। नीचे उतरते ही उसकी भेंट थोर से हुई। थोर ने आतुरतापूर्वक उससे पूछा कि क्या उसे हथौड़े का अता-पता लगा?

हथौड़ा उठाये, आक्रामक मुद्रा में थोर

लोकी ने थोर को वह सब कह सुनाया जो थ्रिम ने उससे कहा था। थोर ने जब यह सुना कि उसे अपना हथौड़ा तभी वापस मिल सकता है जब फ्रेया थ्रिम के संग विवाह करने पर सहमत हो जाये तो वह लोकी को लेकर फ्रेया के महल में जा पहुंचा। थोर अपना हथौड़ा वापस प्राप्त करने के लिए थ्रिम के साथ युद्ध करने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। इसके दो कारण थे—पहला तो यह कि उसका प्रमुख शस्त्र हथौड़ा चुराकर थ्रिम ने उसे निःशस्त्र और असहाय बना दिया था और दूसरा कारण यह कि जोटुन्हाइम के दैत्य असगार्ड के आरामप्रिय देवताओं की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली थे। दैत्यों को युद्ध में पराजित करके उन्हें हथौड़े के समर्पण के लिए विवश नहीं किया जा सकता था। अब देवताओं के सामने हथौड़ा प्राप्त करने का केवल यही उपाय था कि फ्रेया थ्रिम को पति के रूप में स्वीकार कर ले।

लोकी ने जब फ्रेया के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह थ्रिम के संग विवाह कर ले तो फ्रेया क्रोध से पागल हो उठी। फ्रेया का विवाह पहले ही ओड़ नामक देवता के संग हो चुका था और वह उसके साथ धोखा करके एक दैत्य को अपने पति के रूप में स्वीकार नहीं कर सकती थी।

थोर फ्रेया के उत्तर से संतुष्ट तो था परंतु उसके सामने अपना हथौड़ा वापस प्राप्त करने की विकट समस्या थी। अतः वह फ्रेया के महल से सीधा देवराज ओडिन के पास जा पहुंचा। ओडिन ने थोर का हथौड़ा फिर से प्राप्त करने की महत्त्वपूर्ण समस्या पर विचार और निर्णय करने के लिए देव-सभा बुलायी क्योंकि उस हथौड़े के अभाव में देवताओं के पास आत्मरक्षा का कोई साधन ही नहीं बचा था। देवताओं में सबसे अधिक चतुर देवता हाइमडाल था। उसने देव-सभा को परामर्श दिया कि "हमें थ्रिम को धोखा देने और छलपूर्वक उसकी हत्या करने के लिए एक षड्यंत्र रचना होगा। हम थोर को वधू जैसे वस्त्र पहनाकर और उसका चेहरा वधू के मुखावरण में छिपा दें।" यह सुनना था कि थोर बिदक गया परंतु लोकी और हाइमडाल अंततः उसे मनाने में सफल हो गये। थोर को फ्रेया के सुंदरतम वस्त्र और आभूषण पहनाकर स्त्री की तरह सजाया गया। अब उसके चेहरे पर आवरण डाल दिया गया। लोकी को थोर के साथ फ्रेया की दासी के रूप में जाना था, अतः उसे दासी की तरह सजाया गया। यह सब हो जाने पर थोर अपने रथ पर सवार हुआ तथा लोकी को साथ लेकर थ्रिम के महल पर जा पहुंचा। रथ से उतरने पर थ्रिम तथा उसके साथी दैत्यों ने थोर का स्वागत किया।

सूरज डूबने को था। अतः थ्रिम ने सबसे पहले अपनी भावी पत्नी के सम्मुख स्वादिष्ट भोजन परोसे तथा कई कलश भरकर मदिरा पेश की। थोर तो भोजनभट्ट ठहरा। वह वहां परोसा गया समस्त भोजन डकार गया, जिसमें एक पूरा सांड और सैकड़ों मछलियां शामिल थीं। उसने मदिरा के कलश भी खाली कर दिये। थ्रिम और उसके साथी दैत्य वधू की भूख देखकर दांतों तले अंगुली दबाने लगे। यह देखकर फ्रेया की दासी के वेश में लोकी ने स्थिति संभालने के लिए थ्रिम से
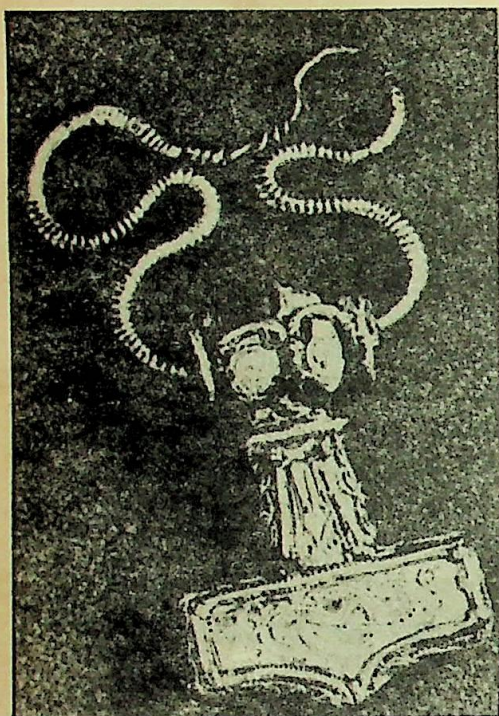
थोर का हथौड़ा

कहा कि फ्रेया उसके साथ विवाह के लिए इतनी आतुर थी कि उसने आठ दिन से कुछ खाया ही नहीं था। यह बात सुनकर थ्रिम भाव-विभोर हो उठा और वधू के चेहरे का आवरण उठाकर उसका मुख चूमने के लिए झुका तो थोर की लाल-लाल आंखें देखकर घबरा गया। इस पर लोकी ने फिर से स्थिति संभाली और कहा कि फ्रेया पिछले आठ दिन से अपने पति से मिलने के लिए इतनी व्यग्र थी कि वह सोई ही नहीं। इसी कारण उसकी आंखें लाल हो गयी हैं।

यह सुनकर थ्रिम को अपने प्रति फ्रेया के प्रेम के बारे में पूरा विश्वास हो गया और उसने अपने साथियों को थोर का हथौड़ा शुभ शकुन तथा दैवी आशीर्वाद स्वरूप वधू की गोद में रखने का आदेश दिया। उसके साथियों ने उसके इस आदेश का तुरंत पालन किया। अब थोर की बारी थी। अपने शक्तिशाली शस्त्र को अपनी गोद मे वापस पाकर थोर का मन प्रफुल्लित हो उठा। उसने फुर्ती से हथौड़ा हाथ में उठा लिया और उससे थ्रिम का सिर फोड़ दिया। उसने थ्रिम के साथियों को भी मार डाला तथा वह लोकी को साथ लेकर अपने रथ द्वारा असगार्ड लौट गया। यह एक बिरला अवसर था जब देवताओं ने दैत्यों पर विजय प्राप्त की। इसके पीछे षड्यंत्र और छल का बल था। यदि दैत्य भी युद्ध के लिए तैयार होते और दोनों के बीच शक्ति का संघर्ष होता, तब शायद देवता उन्हें नहीं हरा पाते। ■■

उत्तरी युरोप के मिथक-2: इडुन के सेब

थोर ने अपना हथौड़ा वापस प्राप्त करने के लिए जब थ्रिम की हत्या कर दी तो उसके स्थान पर थजाजी जोटुन्हाइम का शासक बना। दैत्यों के राजा थजाजी को यह मालूम था कि इडुन के सेब खाने के कारण ही देवता हमेशा जवान बने रहते हैं। ओडिन और फ्रिग के पुत्रों में से एक ब्रागी की पत्नी इडुन के पास सुनहरे सेबों की एक टोकरी थी। इस टोकरी के सेब वह देवताओं को खिलाती थी, जिससे कि उनमें अखण्ड शक्ति और यौवन बना रहता था। इडुन की दैवी और जादुई शक्तियों के कारण उसकी टोकरी न तो कभी सेबों से खाली होती थी, न ही उसमें कभी सेबों की कमी पड़ती थी। थजाजी ने सोचा कि क्यों न इडुन को दैत्यों के राज जोटुन्हाइम में ले आया जाये, जिससे कि दैत्य भी इडुन के सेब खाकर अखण्ड यौवन प्राप्त कर सकें। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह उपयुक्त अवसर की तलाश में लगा रहा।

एक बार ओडिन, लोकी तथा एक अन्य देवता होएनिर असगार्ड से उत्तर की ओर यात्रा पर निकल गये। वे अपने साथ भोजन की सामग्री लेकर नहीं गये थे। पहाड़ी से उतरने पर जैसे ही वे घाटी में पहुंचे, वहां उन्होंने सांडों का एक झुंड देखा और अचानक उन्हें भूख का अहसास हुआ। देवताओं ने उस झुंड में से एक स्वस्थ सांड पकड़ा और उसका वध कर डाला। उन्होंने आग जलाकर उसके मांस को भूरा होने तक भूना। उसके बाद जब वे भोजन के लिए बैठे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मांस एकदम कच्चा था। उन्होंने फिर से आग जलायी और मास को दोबारा भूना, लेकिन इस बार भी जब वे खाने के लिए बैठे तो देखने में जो मास भूरा लग रहा था, वह एकदम कच्चा था। यह देखकर ओडिन उलझन में पड़ गया। उसने अपने साथियों से पूछा कि ऐसी कौन-सी शक्ति है जो इस मास को भुनने से रोक रही है। उसके साथी इस बारे में कुछ नहीं सोच पाये। तभी आकाशवाणी हुई कि तुम बरगद के जिस पेड़ के नीचे बैठे हो, उसके ऊपर बैठा हुआ पक्षी इस मांस को नहीं पकने दे रहा है।

देवताओं ने ऊपर की ओर देखा, वहां पेड़ की एक शाखा पर एक विशाल चील के रूप में दैत्यराज थजाजी बैठा हुआ था। देवताओं की ओर से लोकी ने उस चील से पूछा कि वह मांस को भुनने क्यों नहीं देती? चील ने उत्तर दिया कि जब तक तुम मुझे इस मांस में मेरी इच्छा के अनुसार भाग नहीं दोगे, तब तक मैं इसे नहीं

भुनने दूंगी। देवता मांस में से उसे उसकी इच्छा के अनुसार भाग देने के लिए सहमत हो गये और चील एक बहुत बड़ा टुकड़ा उठाकर भाग गयी। यह देखकर लोकी को क्रोध आया और उसने डंडा उठाकर चील के पंखों पर मारा। वह डंडा चील के पंखों से और लोकी डंडे से चिपक गया। अब चील लोकी समेत उस डंडे को लेकर उड़ चली। लोकी ने डंडे को छोड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उसे नहीं छोड़ पाया। चील पहाड़ी पर नीची उड़ रही थी, जिससे लोकी के पांव पत्थरों से टकराकर लहुलुहान हुए जा रहे थे। लोकी बहुत बुरी तरह घायल हो गया था और उसे ऐसा लग रहा था कि उसकी भुजाएं उसके कंधों में से निकल जायेंगी। उसने बहुत नम्रतापूर्वक चील से प्रार्थना की कि वह उसे छोड़ दे अन्यथा उसकी जान निकल जायेगी।

चील ने लोकी से कहा, ''मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकती हूं कि तुम इडुन को उसके सेबों की टोकरी सहित मेरे पास ले आओगे।'' लोकी के सामने चील को वचन देने के सिवाय दूसरा कोई मार्ग न था। वह अपनी जान बचाना चाहता था, इसलिए उसने प्रतिज्ञा की कि वह अपने वायदे का पालन करेगा। इसके बाद चील ने उसे छोड़ दिया।

लोकी वापस उस घाटी में जा पहुंचा, जहां से चील उसका अपहरण करके ले गयी थी लेकिन उसने ओडिन को यह नहीं बताया कि थजाजी ने उसे किसी शर्त पर प्राणदान दिया है। ओडिन तथा अन्य सभी देबता असगार्ड लौट आये। दो-चार दिन बाद लोकी ने इडुन से कहा कि उसने पास के जंगल में सुंदर सेबों के कुछ वृक्ष देखे हैं। उसने इडुन को अपने साथ वहां चलने का निमंत्रण दिया और यह भी कहा कि ''तुम, सेबों की अपनी टोकरी साथ ले लेना, जिससे कि घाटी के सेबों की तुलना अपने सेबों से कर सको और अगर तुम्हें घाटी के सेब पसंद आ जायें तो तुम उन्हें भी अपने संग्रह में शामिल कर सकती हो।''

इडुन को लोकी पर तनिक भी शंका न हुई। उसे इस संभावना से बहुत आनंद मिला कि वह अपनी टोकरी में कुछ अन्य प्रकार के सुनहरे सेब शामिल कर सकेगी। इडुन लोकी को साथ लेकर घाटी के लिए निकल पड़ी। इडुन और लोकी जैसे ही घाटी में पहुंचे, एक विराट चील का आकार धारण करके थजाज़ी वहां आ पहुंचा और जब तक इडुन स्थिति की गंभीरता को समझ पाती, इससे पहले ही चील ने इडुन को अपने पंजे में दबोचा और वहां से उड़ गयी।

लोकी अकेला ही असगार्ड लौट आया। अगले दिन असगार्ड के देवताओं को इडुन की अनुपस्थिति का भान हुआ। उन्होंने सब ओर उसकी तलाश की। लोकी भी उसकी तलाश में इस तरह शामिल हो गया मानो उसे थजाजी द्वारा इडुन के अपहरण का कोई ज्ञान ही न हो। देवताओं के लिए इडुन का इस प्रकार गायब हो जाना कोई मामूली बात न थी। वे इडुन के सेबों के कारण ही हमेशा युवा बने रहते थे। उनके अभाव के कारण वे बुढ़ापे ओर रोगों के शिकार हो गये।

यह देखकर ओडिन बहुत परेशान हुआ और उसने समस्या पर विचार करने के लिए देव-सभा बुलाई। सभा में यह बात खुल गयी कि इडुन गायब होने से पहले अंतिम बार लोकी के साथ देखी गयी थी, जो उसे असगार्ड से कहीं दूर ले जा रहा था। इतना संकेत पाते ही देवताओं ने लोकी को धर दबोचा और उसे धमकी दी कि यदि वह इडुन को असगार्ड में लौटाकर नहीं लाया तो उसकी हत्या कर दी जायेगी।

लोकी ने देवताओं से वायदा किया कि वह जोटुन्हाइम जाकर इडुन की तलाश करेगा और उसने जोटुन्हाइम तक उड़ान भरने के लिए फ्रेया से फाख्ता के पंखों वाला उसका लबादा मांगा। फ्रेया ने लबादा उसे दे दिया और लोकी तुरंत उत्तर दिशा में जोटुन्हाइम की ओर उड़ गया।

लोकी जैसे ही जोटुन्हाइम में थजाजी के घर पहुंचा, उसने देखा कि इडुन वहां अकेली है। इडुन ने उसे बताया कि दैत्य थजाजी समुद्र पर नौका-विहार के लिए गया हुआ है। लोकी ने अपनी शक्ति के बल पर इडुन और सुनहरे सेबों की टोकरी को एक छोटे से बादाम का रूप दे दिया और उसे अपनी मुट्ठी में दबाकर तेजी से असगार्ड की ओर उड़ चला, लेकिन ऐसा नहीं मानना चाहिए कि उसे मार्ग में किसी प्रकार का खतरा ही न था। लोकी के चले जाने के कुछ समय बाद ही थजाजी घर लौटा और उसने देखा कि इडुन गायब है। उसने तुरंत चील का रूप धारण कर लिया और वह आकाश में ऊंचा उड़ने लगा, जहां से उसने देखा कि फाख्ता असगार्ड की दिशा में उड़ी जा रही है। थजाजी ने उस फाख्ता को पहचान लिया और उसका पीछा किया। उसे मालूम था कि देवता लोग फाख्ता का लबादा ओढ़कर आकाश में उड़ा करते हैं।

उस समय तक लोकी असगर्ड के इतना समीप पहुंच गया था कि देवताओं ने भी उसे देख लिया। उन्होंने यह भी देख लिया कि एक चील लोकी का पीछा कर रही है। वे तुरंत समझ गये कि वह चील और कोई नहीं थजाजी ही है। अतः उन्होंने थजाजी को लोकी पर हावी होने से रोकने के लिए असगार्ड दुर्ग की दीवारों के चारों ओर लकड़ी की छीलन के बोरे रख दिये और लोकी जैसे ही दीवार पार करके असगार्ड दुर्ग में घुसा, देवताओं ने उन बोरों में आग लगा दी। थजाजी ने लपटें देख लीं परंतु वह इतनी तेज गति से उड़ रहा था कि उसके लिए मार्ग बदलना संभव न था। वह अपने-आप को नियंत्रित नहीं कर पाया और सीधा लपटों में प्रवेश कर गया। उसके पंख जल गये और वह असगार्ड किले के द्वार के सामने जमीन पर गिर गया, जहां देवताओं ने उसे मार डाला।

थजाजी की हत्या का समाचार जब थजाजी की बेटी स्काडी के कानों में प[ड़ा] तो वह कवच और शस्त्र धारण करके अपने पिता की हत्या का बदला लेने के [लि]ए असगार्ड जा पहुंची। वहां उसकी भेंट सर्वोच्च देवता ओडिन के संग हुई, जिसने उससे कहा कि "परंपरा के अनुसार तुम्हें अपने पिता के जीवन का मुआवजा प्राप्त करने का अधिकार है, अतः तुम देवताओं में से किसी को भी अपना पति चुन सकती हो, लेकिन शर्त यह है कि तुम्हें केवल पांव देखकर चुनाव करना होगा।"

इडुन: सुनहरे सेबों के कारण थजाजी ने जिसका अपहरण किया।

स्काडी ने ओडिन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वह पहले से ही ओडिन के बेटे बाल्डुर से प्रेम करती थी। बाल्डुर एक खूबसूरत नौजवान था। अत: उसने सोचा कि उसके पांव भी खूबसूरत होंगे। यह सोचकर उसने पांवों की उस प्रदर्शनी में सबसे सुंदर पांव चुन लिए, परंतु वास्तव में वे पांव बाल्डुर के न होकर एनजोर्ड के थे।

बाल्डुर को पति के रूप में न चुन पाने के कारण स्काडी उदास हो गयी। उसकी उदासी देवताओं के लिए समस्या बन गयी, क्योंकि रिवाज के अनुसार यह आवश्यक था कि मुआवजा पाने वाला व्यक्तिं प्रसन्न हो तथा हंसे। ओडिन ने उससे कहा कि हमारी ओर से तुम्हें दिया गया मुआवजा तब तक पर्याप्त नहीं माना जायेगा जब तक हम तुम्हें हंसा न दें। स्काडी ने यह कहकर हंसने से इनकार कर दिया कि वह पति के चुनाव से प्रसन्न नहीं है, परंतु लोकी ने उसे तरह-तरह से हंसाने की कोशिश की और अंतत: स्काडी को हंसी आ गयी। इसके बाद स्काडी को खुश करने के लिए सर्वोच्च देवता ओडिन ने थजाजी की आंखें अपने हाथों से निकालीं और उन्हें आकाश की ओर उछाल दिया, जिससे कि उन्होंने तारामंडल में स्थान प्राप्त कर लिया। देवताओं के पिता की ओर से अपने पिता के इस सम्मान पर स्काडी का मन प्रसन्न हो गया और उसके मन से देवताओं के प्रति रोष का भाव पूरी तरह निकल गया। वह असगार्ड में अपने पति एनजोर्ड के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहने लगी। तब से आज तक दैत्यों और देवताओं के बीच संघर्ष नहीं हुआ। ■■

कनाडा का मिथक: रेवेन

कनाडा के पश्चिमी तट पर सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत संपन्न हैदा इंडियन जाति के लोग प्राचीन काल से रहते चले आये हैं। प्राचीन काल में वे पशुओं और पक्षियों के साथ जीवन व्यतीत करते थे। हैदा जाति के लोगों ने इन जीवों के साथ गहरा स्नेह-संबंध स्थापित कर लिया था, जिसका बोध वहां के रेवेन मिथक से होता है। इस मिथक में कहा गया है कि अत्यंत शक्तिशाली, बुद्धिमान और चालाक दैवी पक्षी रेवेन ने अपने सशक्त पंखों की सहायता से सूर्य को मुक्त करके आकाश में स्थापित किया और हैदा जाति को अंधेरे के दुष्प्रभावों से बचाया।

सृष्टि का निर्माण हुआ ही था और सूर्य को सृष्टि के निर्माताओं ने अंतरिक्ष में स्थापित किया ही था कि उनकी ओर से हैदा जाति के लोगों की रक्षा के लिए एक सरदार नियुक्त किया गया। वह सरदार नेस नदी के उद्गम के समीप एक गांव में रहता था। वह बहुत स्वार्थी था और उसके मन में अपने लोगों के लिए तनिक प्रेम न था। उसके हृदय में रोशनी का लोभ जाग उठा तथा उसने सूर्य, चन्द्रमा और तारों को बंदी बनाकर अपनी प्रजा से इस प्रकार छिपा दिया कि लोगों को उनके बारे में कुछ पता ही नहीं लग पाया कि उन्हें कहां रखा गया है।

सूर्य की अनुपस्थिति में पृथ्वी ने वनस्पति तथा अनाज उगाना बंद कर दिया और चन्द्रमा के अभाव में हैदा लोग रात के समय मछली पकड़ने में असमर्थ हो गये। खाद्य-सामग्री की कमी के कारण उन्हें बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था। हैदा जाति की बस्ती के समीप ही नेस नदी के तट पर जंगल में रेवेन नामक एक दैवी पक्षी का निवास था, जिसके पंख बहुत शक्तिशाली थे और जिसका हृदय अत्यंत दयालु था। वह अंधकार के कारण सृष्टि के जीवों तथा मनुष्यों के दुःख से अत्यंत पीड़ित था।

रेवेन ने सुन रखा कि सूर्य, चन्द्रमा और तारों को हैदा सरदारों ने बंदी बना लिया है, अतः उसने निश्चय किया कि वह सरदार के पास जायेगा तथा सूर्य, चन्द्रमा और तारों को उससे मुक्ति दिलायेगा। उसे यह बात मालूम थी कि सरदार के गांव तक जाने के लिए नेस नदी पर काफी लंबी उड़ान भरनी होगी, अतः उसने एक थैले मे बहुत सारे छोटे-छोटे पत्थर भर लिए और वह सरदार के गांव की दिशा में उड़ चला। रेवेन को जब कभी थकान होती तो वह नदी में एक पत्थर डाल देता। वह पत्थर तुरंत ही एक द्वीप का रूप धारण कर लेता, जिस पर उतरकर रेवेन कुछ देर विश्राम करता तथा फिर से उडान भर लैता।

उड़ान पूरी करके रेवेन अंततः हैदा सरदार के गांव पहुंच गया। वह नदी के किनारे बैठकर सोचने लगा कि प्रकाश को मुक्त कराने के लिए सरदार के घर में कैसे प्रवेश किया जाये? कुछ देर बाद रेवेन को सरदार की बेटी दिखाई दी, जिसके हाथों में घड़े थे। उसने घड़ों को नदी में डुबोकर पानी से भरा और वहां से रवाना होने के पहले नदी के जल से अपना मुख धोया और जी भरकर पानी पिया।

रेवेन दूर से ही सरदार की बेटी के व्यवहार का अध्ययन करता रहा और उसने मन ही मन यह तय कर लिया कि उसे क्या करना है। वह पूरे एक दिन नदी के तट पर प्रतीक्षा करता रहा। अगले दिन सरदार की बेटी जब पानी भरने के लिए वहां आयी तो रेवेन ने एक छोटे से बीज का रूप धारण कर लिया तथा जिस समय लड़की ने अपनी हथेलियों में नदी का पानी भरा, उस समय बीज रूपी रेवेन उसकी अंगुलियों के बीच छिप गया और जब वह पानी पीने लगी तो चुपके से उसके मुंह में प्रवेश कर गया। बीज के रूप में रेवेन सरदार की बेटी के शरीर में बहुत सावधानी से घूमता रहा और अंततः उसकी कोख में स्थापित हो गया।

सरदार की बेटी गर्भवती हो गयी और समय आने पर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। यह बालक और कोई नहीं रेवेन ही था। सरदार इस बालक से बहुत प्रेम करने लगा। वह घंटों उसके साथ खेलता और उस पर अपने हृदय का समूचा प्यार तथा अपनी समस्त संपदा लुटाता रहता। बालक खेलने के लिए जब भी उससे कोई वस्तु मांगता तो सरदार तुरंत ही उसे वह वस्तु दे देता।

लड़का थोड़ा बड़ा हुआ तो घुटनों के बल चलने लगा। एक दिन उसने अपने नाना के घर की दीवार पर कुछ थैले लटके हुए देखे। उन्हें देखकर वह मचल गया और जोर-जोर से रोने लगा। वह तब तक चुप नहीं हुआ जब तक कि सरदार ने उससे यह वादा नहीं किया कि वह जो कुछ भी मांगेगा, उसे वही दिया जायेगा। यह सुनकर लड़के ने दीवार पर टंगे हुए थैलों की ओर इशारा किया। बूढ़े सरदार ने दीवार से थैले उतारे और बच्चे के खेलने के लिए उन्हें फर्श पर लुढ़का दिया। वह कोई मामूली लड़का न था, थैलों के भीतर झांक-झांककर देखता रहा कि किस थैले में क्या भरा हुआ है। जब उसके हाथ वह थैला लग गया, जिसमें सरदार ने आकाश के सितारों को भर रखा था, तब उसने लपककर उस थैले को दोनों हाथों में उठाया और छत की ओर फेंक दिया। थैला अचानक ऊपर उठता गया और छत में बने धुंआरे में से होकर बाहर निकल गया। थैला आकाश में ऊंचा उड़ता चला गया और अंततः उसने सितारों को अंतरिक्ष में बिखेर दिया।

सितारों में कोई बहुत प्रकाश तो न था, फिर भी सरदार को उनका इस प्रकार हाथ से निकल जाना अच्छा न लगा, लेकिन वह अपने धेवते को किसी भी स्थिति में अप्रसन्न करने के लिए तैयार न था और अगले दिन उसके मांगने पर सरदार ने खुशी-खुशी चन्द्रमा वाला थैला भी फर्श पर लुढ़का दिया। बच्चा काफी देर तक चांद से खेलता रहा और खुश होता रहा। सरदार उसे इस प्रकार प्रसन्न देखकर

बहुत आनंदित हुआ परंतु बालक ने अवसर मिलते ही उस थैले को पहले तो धुंआरे के ठीक नीचे तक लुढ़काया और उसके बाद उसने उसे हाथों में उठाकर छत की ओर फेंक दिया। थैला धुंआरे से निकलकर आकाश की ओर उड़ने लगा और अंतरिक्ष के छोर पर पहुंचकर उसने चन्द्रमा को मुक्त कर दिया। इस प्रकार चन्द्रमा भी अंतरिक्ष में स्थापित हो गया।

सरदार को सितारों की अपेक्षा चांद को खोने का गम अधिक रहा लेकिन उसके मन में इस प्रकार की कोई शंका नहीं उठी कि उसका धेवता उसके साथ कोई चाल चल रहा है। समय बीतता गया और बालक के रूप में रेवेन सरदार के थैलों से खेलता रहा। इतना ही नहीं अब उसने सरदार के घर में रखे संदूकों को खुलवाना और उनकी चीजों से खेलना शुरू कर दिया। सरदार एक-एक संदूक खोलता गया मगर इस बीच बालक ने कोई भी चीज छत की ओर नहीं फेंकी।

एक दिन बालक की निगाह एक कोने में रखे हुए एक भारी-भरकम से संदूक पर जा पड़ी और वह तब तक रोता रहा जब तक कि सरदार ने उस संदूक को नहीं खोला, परंतु इस बार सरदार सावधान था और वह उस संदूक में बंद अपनी सबसे बहुमूल्य संपत्ति को गंवाने के लिए तनिक तैयार न था। अतः उसने छत में बने धुंआरे को किसी भारी चीज से ढक दिया। अब निश्चित होकर उसने संदूक खोला और वह उस बालक से बोला, "देखो बेटा, तुम्हारा नाना अब तुम्हें अपनी सबसे अधिक कीमती संपत्ति दिखायेगा। तुम उसके साथ जी भर कर खेलना मगर उसे संभाल कर रखना, वह तुम्हारे बहुत काम आयेगी।"

सरदार ने संदूक खोलकर उसमें से एक दूसरा संदूक निकाला, जिसे मकड़ी के जाले से मुहरबंद किया गया था। उस संदूक में तीसरा संदूक था, तीसरे में चौथा और इस तरह सरदार ने आठवां संदूक अपने हाथों में लिया तथा जब उसने हिचकिचाते हुए उसे खोला तो उसमें से तेज और चमकीली रोशनी की एक गेंद निकली। वह आग के गोले जैसी थी।

सरदार ने वह गेंद खेलने के लिए बालक के हाथों मे थमा दी। बालक उसे पाकर बहुत खुश हुआ। दिन-प्रतिदिन वह उससे खेलता और थक जाने पर उसे छोड़कर अपनी मां की गोद में चढ़ जाता। तब सरदार उसे वापस संदूकों में बंद करके सुरक्षित रख देता।

बालक के रूप में रेवेन को यह ज्ञात था कि यह चमकीली गेंद और कुछ नहीं, सूर्य ही है। वह उस गेंद को आकाश में उछालने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। दूसरी ओर सरदार, दिन-प्रतिदिन बालक की ओर से आश्वस्त होता जा रहा था तथा उसने धुंआरे पर भी ध्यान देना कम कर दिया था। धुंआरे को हर समय बंद नहीं रखा जा सकता था। उसके बंद रहने पर घर में धुएं की घुटन भर जाती, अतः उसे दिन में कई बार खोला जाता। सरदार के पास बहुत से काम थे, वह सूर्य की गेंद अपने धेवते को दे देता और वह बालक अकेला ही घर में उससे खेलता रहता।
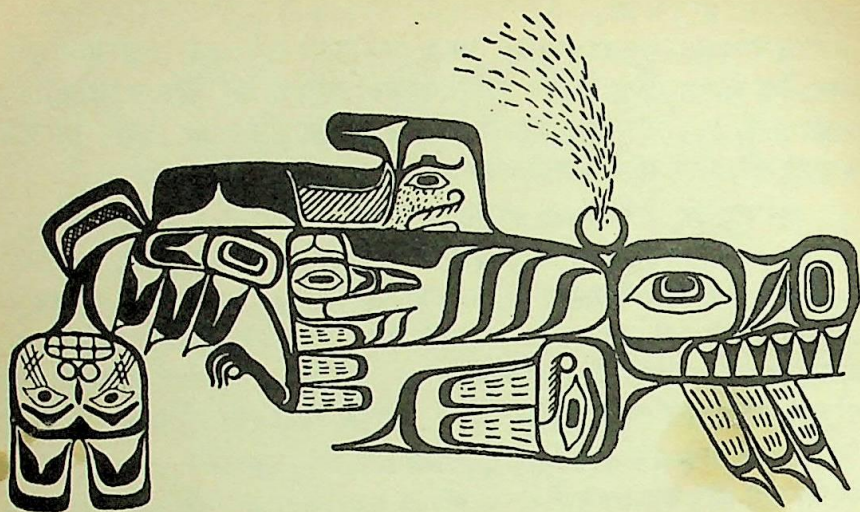
रेवेन: सूरज, चांद व सितारों का रक्षक

एक दिन बालक घर में एकदम अकेला था और संयोग की बात यह कि उस दिन धुंआंरा भी पूरा खुला हुआ था। उसने उपयुक्त अवसर देखकर बालक का रूप त्याग दिया और अपना पक्षी रूप धारण करके सूर्य को मजबूती से अपने पंजों में जकड़ा तथा धुंआरे में से होकर आकाश की ओर उड़ान भरी।

अब रेवेन के मन में हैदा जाति के लोगों के संग खिलवाड़ करने की इच्छा उत्पन्न हुई। नदी के ऊपर उड़ान भरते समय उसने देखा कि कुछ लोग अंधेरे में मछलियां पकड़ रहे हैं। उन्हें देखकर रेवेन एक पेड़ की चोटी पर उतर गया और उसने मछुआरों से कहा कि "यदि तुम मुझे कुछ मछलियां दे दो तो मैं तुम्हें थोड़ी सी रोशनी दे दूंगा।" मछुआरों को उस पर विश्वास नहीं आया, लेकिन जब रेवेन ने अपने पंख उठाकर उन्हें सूर्य का दर्शन कराया तब मछुआरों ने रेवेन को पेट भर मछलियां दे दीं।

कुछ दिनों तक यही क्रम चलता रहा। रेवेन मछुआरों को मछली पकड़ने के लिए·थोड़ी-सी रोशनी देता और वे उसे पेटभर मछली देते। एक दिन रेवेन एकांत में बैठा था कि उसके मन में अपने लोभ और स्वार्थ के कारण लज्जा का भाव उत्पन्न हो गया और उसने तुरंत अपने पंख ऊपर उठाकर अपने पंजों से सूर्य को आकाश में उछाल दिया तथा खुशी के मारे कह उठा, "अब संसार के लोगों के लिए दिन और रात दोनों में प्रकाश का प्रबंध हो गया है।" रेवेन उसी दिन से आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और सितारों की रखवाली कर रहा है तथा कोई भी उन्हें दोबारा चुराने की हिम्मत नहीं कर सका। ■■

मैक्सिको का माया मिथक: मनुष्य की सृष्टि

मध्य अमरीका के ग्वाटेमाला और मैक्सिको के यूकेतान प्रायद्वीप में प्राचीन काल में एक समृद्ध सभ्यता का उदय हुआ था, जिसे माया सभ्यता कहा जाता है। उसका आरंभ ईसा से 6,000 वर्ष पूर्व हुआ और 1524 ईस्वी में युरोप से आये स्पेन के लोगों ने उस सभ्यता को पूरी तरह नष्ट कर दिया। माया सभ्यता मिथकों की दृष्टि से बहुत संपन्न रही है। माया जाति के लोग महान् खगोल-शास्त्री थे और उन्होंने अपने देवताओं की पूजा के लिए विशाल तथा बहुत ऊंचे चौकोर पिरामिडों पर मंदिर बनाये। वे मूलतः सूर्य के उपासक थे। वर्षा के देवता चाक की गणना उनके प्रमुख देवताओं में होती है, जिसे प्रसन्न करने के लिए माया सभ्यता के लोग एक कुएं के भीतर कुआंरी कन्याओं की बलि चढ़ाते थे। वह कुआं यूकेतान में चिचेनइत्जा मंदिर के अहाते में है। माया सभ्यता के देवता भी अन्य सभ्यताओं के देवताओं की भांति मनुष्य का निर्माण करना चाहते थे। उन्होंने इस लक्ष्य की प्राप्ति किस प्रकार की तथा वे किस प्रकार के मनुष्यों का निर्माण करना चाहते थे, यह बात उनके मिथकों में भली प्रकार अभिव्यक्त हुई है।

पृथ्वी का उदय

सृष्टि के आरंभ में न हवा थी न आग, चारों ओर शांति और खामोशी थी। समूची पृथ्वी पानी की एक विशाल परत से ढकी हुई थी और उसके ऊपर आकाश फैला था। तीसरा कुछ न था। उस समय तक सृष्टि में जीवन का निर्माण नहीं हुआ था लेकिन देवताओं का अस्तित्व था। हरे और नीले पंखों से ढके हुए देवता पानी की परत के नीचे रहते थे। वे बहुत बुद्धिमान थे। एक बार उन्होंने आपस में मिलकर दो प्रश्नों पर चर्चा की। पहला प्रश्न तो यह था कि पृथ्वी को पानी के तल से कैसे निकाला जाये और दूसरा यह कि चारों और व्याप्त अंधकार को किस प्रकार दूर किया जाये?

लंबी चर्चा के बाद एक दिन देवताओं ने सृष्टि के निर्माण का संकल्प कर लिया। उन्होंने अपने सामने कुछ तात्कालिक लक्ष्य रखे—शून्य को भरना, समुद्र को इस प्रकार सीमाओं में बांधना कि पृथ्वी का उदय और प्रकाश का निर्माण हो सके। देवताओं ने मिलकर पृथ्वी से प्रार्थना की कि वह ऊपर उठकर उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति करे। पृथ्वी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वह ऊपर उठने लगी और समुद्र पीछे हटने लगा। पृथ्वी पर पर्वतों का उदय हुआ और पर्वतों की समृद्ध मिट्टी में सुंदर वन उग आये।
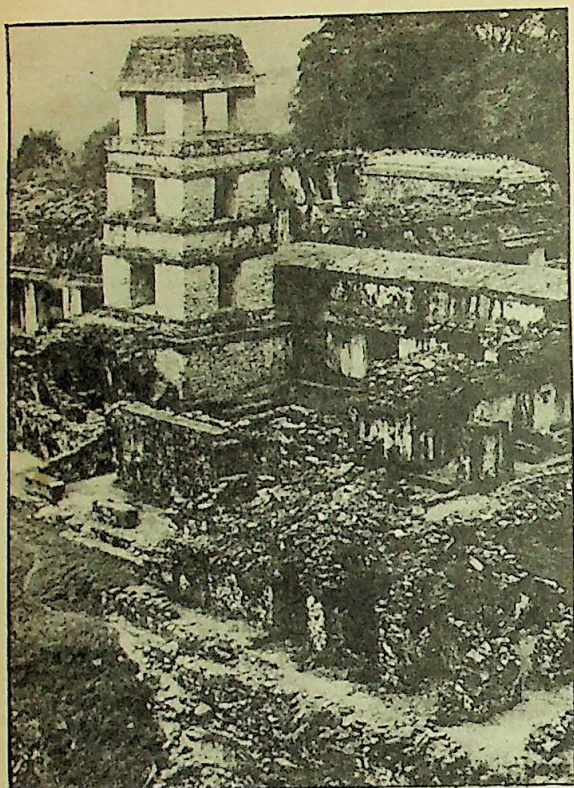
संभवतः माया लोग इस गगनचुंबी इमारत का प्रयोग वेधशाला के रूप में करते थे।

कुछ समय बाद देवताओं की दूसरी सभा हुई। जिसमें उन्होंने पृथ्वी, पर्वतों और वनों के उदय पर संतोष प्रकट किया और उन्हें अपनी श्रेष्ठ कृति घोषित किया। अब उनके सामने बुनियादी प्रश्न यह था कि वे चारों तरफ फैली हुई चुप्पी और खामोशी को बना रहने दें या वृक्षों के नीचे पहाड़ियों पर और मैदानी दलदल में जीवन की सृष्टि करें, जिससे कि सृष्टि में चहल-पहल हो सके। अंततः उन्होंने सृष्टि के मौन को तोड़ने का निश्चय करके सबसे पहले पक्षियों, पशुओं और सांपों की रचना की।

देवताओं ने इन जीवों को विश्राम करने, घूमने-फिरने और घोंसले बनाने के लिए अलग-अलग स्थान प्रदान किये। उन्होंने उनको वाणी भी प्रदान की और उनसे कहा कि "तुम अपनी-अपनी आवाजें निकालो।" उन्होंने शेरों से दहाड़ने, पक्षियों से चहचहाने और सांपों से फुंकारने तथा उन सभी से देवताओं के नाम लेकर पुकारने, उन्हें अपना स्नेह देने और उनकी प्रशंसा में गीत गाने के लिए कहा। परंतु पक्षी, पशु और सांप देवताओं की प्रशंसा में गीत नहीं गा सके क्योंकि उनकी ध्वनियां स्पष्ट न थीं।

मनुष्यों का निर्माण

यह देखकर देवताओं ने निश्चय किया कि जीवों की एक ऐसी श्रेष्ठ जाति का

दो माया देवता

निर्माण किया जाये, जो पशुओं, पक्षियों और सांपों पर शासन करे तथा उन्हें खाने के लिए उनकी हत्या करे। देवताओं के मन में आशा थी कि उस नयी जाति के जीव उन्हें पर्याप्त प्रेम और प्रशंसा दे पायेंगे। अंततः उन्होंने मिट्टी से नये प्रकार के जीवों का निर्माण किया, परंतु मिट्टी से बनाये गये नमूने संतोषजनक न थे क्योंकि एक ओर तो मिट्टी के मुलायम होने के कारण उन जीवों में प्रकृति के आघातों को झेलने की शक्ति नहीं आ सकी, दूसरी ओर उनकी भाषा देवताओं की समझ में नहीं आयी और तीसरे उनमें संतान उत्पन्न करने की क्षमता पैदा नहीं हो सकी। देवताओं ने उन नमूनों को नष्ट कर दिया और लकड़ी से एक नया नमूना तैयार किया। वह नमूना लकड़ी की भांति कठोर और सुदढ़ था तथा नये प्राणी देखने-भालने और ध्वनि की दृष्टि से मनुष्यों जैसे लगते थे। देवताओं को वह नमूना पसंद आ गया और उन्होंने उस नस्ल का निर्माण शुरू कर दिया, लेकिन उनमें सबसे बड़ा दोष यह रह गया कि उनके चेहरे एकदम भवशून्य बन गये। उनमें न आत्मा थी, न रक्त और न उन देवताओं के प्रति प्रेम, जिन्होंने उनकी सृष्टि की थी।

अंततः देवताओं ने लकड़ी के उन नमूनों को भी नष्ट करना चाहा परंतु यह मिट्टी के नमूनों को नष्ट करने जैसा आसान न था। लकड़ी के जीवों ने देवताओं का विरोध किया तथा उनमें से अधिकांश मारे गये, जो जीवित रहे उनके चेहरे इतनी बुरी तरह झुलस गये कि उनकी संतान बंदर बनी।

देवता किसी ऐसे नये पदार्थ की खोज में थे, जिससे वे अपनी कल्पना के अनुरूप मनुष्यों का निर्माण कर सकते। एक दिन जंगल के चार पशु देवताओं के
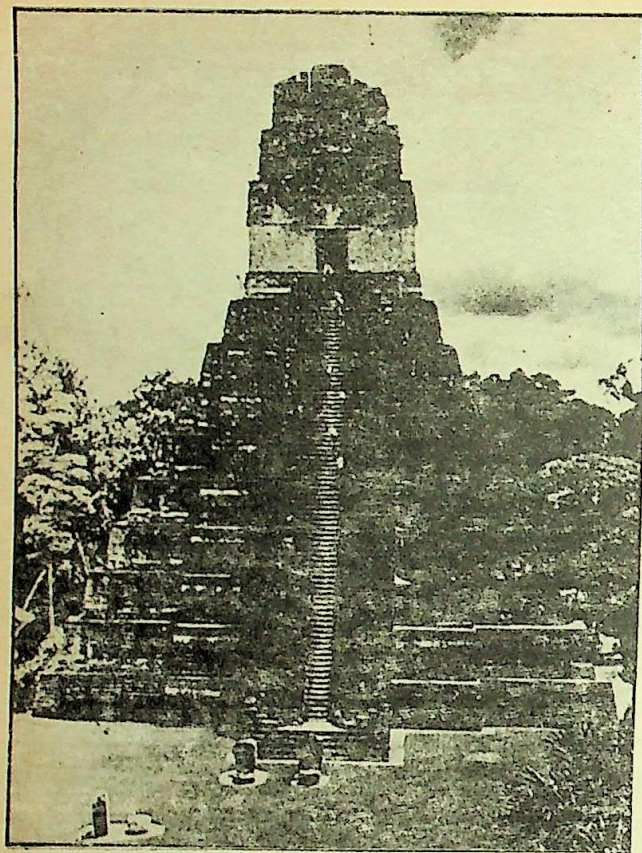
पिरामिड के आकार का एक माया मंदिर

पास आये और उन्होंने देवताओं को अपने साथ चलने का निमंत्रण दिया। वे उन्हें वहां ले गये, जहां अनाज की पीली और सफेद बालियां भारी मात्रा में उगी खड़ी थीं। देवताओं ने उन बालियों में से अनाज निकाला, उसे पीस डाला और उसके आटे से चार श्रेष्ठ प्राणियों की रचना की। देवताओं ने अनाज से ही भोजन और पेय पदार्थ तैयार किये तथा उन्हें भोजन के रूप में मनुष्यों को खिलाया। इसका परिणाम यह हुआ कि नमूने के वे मनुष्य शक्ति और बुद्धि की दृष्टि से विकसित होने लगे। अब देवताओं ने यह घोषणा की कि वे अनाज से निर्मित मनुष्यों से संतुष्ट हैं। उन्होंने उस मनुष्य जाति को अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति कहा।

मनुष्य के उन नमूनों को परीक्षा के दौर से और गुजरना था। देवता यह देखना चाहते थे कि नमूने के ये चार मनुष्य, जिनका उन्होंने निर्माण किया था और जो उनको पसंद थे, उनकी प्रशंसा और उनके प्रति प्रेम का भाव प्रकट करते हैं या नहीं। मनुष्य जाति के वे चारों पुरखे बहुत बुद्धिमान और चतुर थे। उनमें सृष्टि के समस्त रहस्यों को समझने की शक्ति थी। वे आकाश और पृथ्वी, पहाड़ों और घाटियों, नदियों तथा समुद्रों के परे के रहस्यों को जानने में समर्थ थे। उन रहस्यों
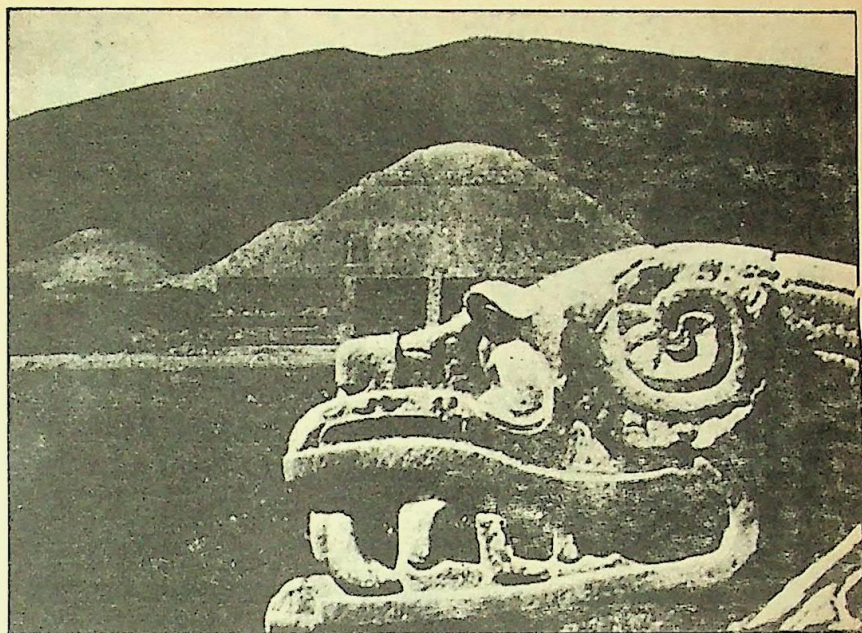
वर्षा का देवता 'चाक'

का ज्ञान होने पर वे चकित हो उठे और उनके हृदय में उन देवताओं के प्रति प्रशंसा और प्रेम का भाव तूफान की तरह उमड़ पड़ा, जिन्होंने सृष्टि की रचना की थी। उन्होंने अपनी रचना के लिए देवताओं को धन्यवाद दिया तथा देखने, सुनने, बोलने, सोचने, अनुभूति तथा चलने-फिरने और सद् तथा असद् एव सही तथा गलत के बीच विवेक की शक्ति के लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

नमूने के उन चारों मनुष्यों को अपने प्रति कृतज्ञता, प्रेम और प्रशसा प्रकट करते हुए देखकर देवता उनसे बहुत प्रसन्न हुए, परंतु उनके मन में यह आशंका उत्पन्न हो गयी कि नमूने के मनुष्य शायद देवताओं के समान ही ज्ञानी तथा श्रेष्ठ बन गये हैं। इसे वे सहन नहीं कर पाये, अतः उन्होंने नमूने के चारों मनुष्यों की आंखों में कुहरा झोंक दिया, जिससे कि उनकी पैनी और दूर-दृष्टि सीमित हो गयी।

अब देवताओं ने नमूने के चारों मनुष्यों को अपनी अंतिम स्वीकृति प्रदान की और उनमें से प्रत्येक के लिए एक-एक स्त्री का निर्माण किया। नींद से जागने पर जब उन्होंने अपनी पत्नियों को अपने पास देखा तो वे देवताओं के प्रति और भी अधिक कृतज्ञ हो उठे। अब सृष्टि का निर्माण जोरों से चल निकला। एक ओर देवता अधिकाधिक मनुष्य जोड़ों का निर्माण करने में जुटे हुए थे, दूसरी ओर मनुष्यों के जोड़े संतान उत्पन्न कर रहे थे। वे लोग देश के पूर्वी भाग में रहते थे। इनमें से कुछ गोरे रंग के थे और कुछ काले, कुछ अमीर थे और कुछ गरीब, परंतु सभी लोग देवताओं से संतान और प्रकाश के लिए प्रार्थना करते रहते थे।
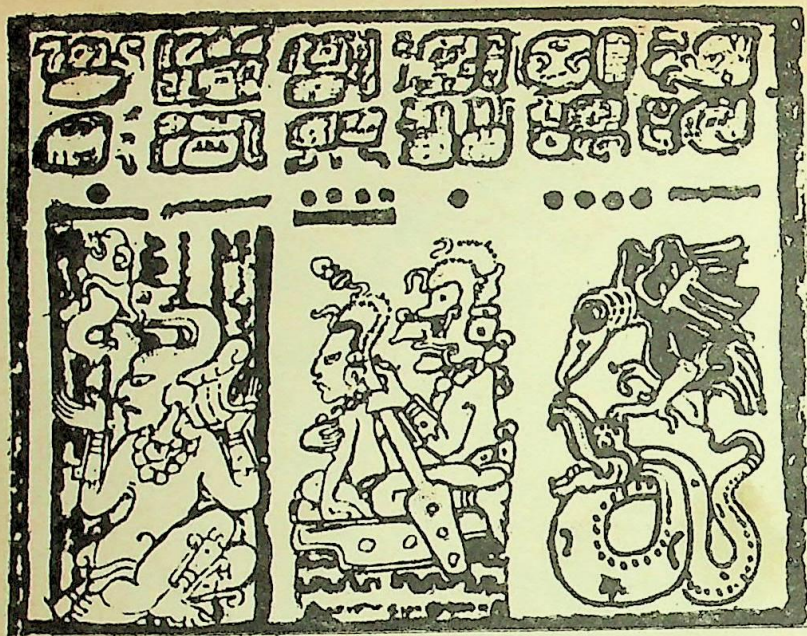
प्राचीन माया कैलेंडर का एक भाग

देवताओं ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा प्रकाश के लिए सूर्य, चन्द्रमा और सितारों का निर्माण किया। अंधकार समाप्त हो गया और एक दिन सवेरे-सवेरे जल में से उदय होकर सूर्य ने पृथ्वी पर अपनी प्रथम स्वर्ण-किरणें बिखेर दीं। इस भोर को देखकर समूची सृष्टि आनंदमग्न हो उठी।

यह एक अनूठा दृश्य था। पशु, सांप, पक्षी और मनुष्य वृक्षों की छाया में तथा नदियों के तट पर इकट्ठे होने लगे। वे सब अपनी-अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ध्वनियां करने लगे। पशुओं ने अपनी दहाड़ और चिंघाड़ से आकाश को गुंजा दिया, पक्षियों ने देवताओं की प्रशंसा में राग भरे गीत गाये और सांपों ने फुंकार लगायी। मनुष्य भी देवताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता और अपना प्रेम प्रकट करने के लिए नाचने गाने लगे। पुरोहितों ने सुगंधित धूप जलायी और देवताओं के लिए बलि दी। सृष्टि के प्रथम बार अलौकित होने पर उन सब ने खुशियां मनायीं।

माया जाति के मंदिरों में आज भी हवन सामग्री से भरे हुए बड़े-बड़े पात्र पुरोहितों की प्रतीक्षा कर रहे हैं, परंतु माया जाति अज्ञात के गर्भ में विलीन हो चुकी है। शायद अपने देवताओं की अप्रसन्नता के कारण ही उसे सर्वनाश का मुंह देखना पड़ा। ■■

अफ्रीका का मिथक: मावू देवी के पुत्र

अफ्रीका महाद्वीप के दहोमी राज्य में एक युद्धप्रिय कबीला बसता है। इसका नाम है—फौन। फौन-मिथकों के अनुसार इस सृष्टि का निर्माण महान् देवी मावू ने किया था। देवी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। मगर दुर्भाग्य से उसके इन दोनों पुत्रों की आपस में किसी भी प्रश्न पर सहमति नहीं हो सकी। वे लगभग निरपवाद रूप से हर प्रश्न पर और हर अवसर पर एक-दूसरे के विरुद्ध सोचते और चलते थे। उनके मतभेदों तथा परस्पर-विरोधी निर्णयों एवं कार्यों के कारण महान् देवी मावू की शांति और प्रसन्नता पूरी तरह नष्ट हो गयी थी। वह किसी भी प्रकार न तो उन दोनों के विचारों में सामंजस्य उत्पन्न कर सकी, न उनके बीच शांति की स्थापना। शायद यह होना ही न था। यह चेतना बड़े भाई सागबाता के मन में बहुत दृढ़ता से घर करती जा रही थी। उसने अपने छोटे भाई सोगबो से अलग होने का निश्चय करके एक दिन उसको अपना फैसला सुना ही दिया। उसने कहा, ''मैं स्वर्ग छोड़कर नीचे पृथ्वी पर जा रहा हूं। बड़ा होने के नाते मैं ही मां का उत्तराधिकारी ठहरता हूं। अतः मैं अपने साथ मां की समूची संपत्ति लेकर जाऊंगा।''

उनकी मां मावू देवी ने सागबाता के निर्णय की सराहना की। वह उनके झगड़ों से तंग आ गयी थी और उन्हें किसी भी प्रकार प्रेम से रहने के लिए नहीं मना पायी थी। उसने अपने बेटों से कहा, ''मैं तुम दोनों के आपसी झगड़ों को बहुत नापसंद करती हूं और मैं तुम दोनों में से किसी का भी साथ नहीं दूंगी। तुम दोनों को कुम्हड़े (काशीफल) की भांति मिलकर रहना चाहिए और उस विश्व पर शासन करना चाहिए, जो उस कुम्हड़े के भीतर विद्यमान है।'' मावू ने पृथ्वी पर शासन करने के सागबाता के संकल्प पर अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए उससे कहा, ''तुम बड़े हो, इस नाते तुम्हें मेरी संपत्ति प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। अतः तुम काशीफल रूपी इस सृष्टि के निचले भाग अर्थात् पृथ्वी पर शासन करने के लिए स्वर्ग छोड़ते समय मेरी समूची संपत्ति अपने साथ ले जा सकते हो।'' मावू को आशा थी कि सोगबो कुम्हड़े रूपी इस सृष्टि के ऊपरी भाग अर्थात् स्वर्ग का शासन अपने हाथों में लेगा। उसने कहा, ''तुम दोनों अलग-अलग रहोगे, फिर भी मैं यह चाहती हूं कि तुम आपस में सहयोग बनाये रखे, क्योंकि मुझे यह मालूम है कि आकाश और पृथ्वी एक-दूसरे से सर्वथा पृथक् नहीं हैं। वे दोनों मिलकर सृष्टि की संपूर्ण इकाई का निर्माण करते हैं।''

अपनी मां की समूची संपत्ति बटोरकर सागबाता पृथ्वी के लिए निकल पड़ा। उसने उस संपत्ति को एक थैले में भर लिया परंतु वह आग और पानी को अपने साथ नहीं ले जा सका। उसे डर था कि पानी उसकी अन्य संपत्ति को गीला कर देगा और गला डालेगा तथा आग उसको जला देगी। वह आग और पानी को स्वर्ग में ही छोड़कर पृथ्वी की ओर चल पड़ा। यह यात्रा बहुत लंबी और बहुत कठिन थी। पृथ्वी पर पहुंचने के बाद उसे ऐसा लगा कि अब वह अपने जन्मस्थान स्वर्ग में कभी नहीं लौट पायेगा।

उधर स्वर्ग में महान् देवी मावू के पास उसका एक पुत्र सोगबो ही रह गया। सोगबो के प्रति मावू की ममता दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। सोगबो के प्रति मावू का ममत्व देखकर सोगबो के प्रति अन्य देवताओं की आस्था भी जागृत होने लगी और वे उसमें विश्वास प्रकट करने लगे। सोगबो धीरे-धीरे स्वर्ग का राजा बन गया। उसका भाई सागबाता उससे बहुत दूर चला गया था और पृथ्वी का शासक बन गया था, फिर भी उसके मन में उसके प्रति ईर्ष्या का भाव बना रहा और वह उसे नीचा दिखाना चाहता था। अतः उसने वर्षा के देवता को बुलाकर यह आदेश दिया कि पृथ्वी पर वर्षा नहीं होनी चाहिए। पृथ्वी लगातार तीन साल तक वर्षा से वंचित रही।

पृथ्वी के निवासी अपने राजा सागबाता के पास गये और उन्होंने उससे प्रार्थना की कि आप वर्षा के देवता का आह्वान करें। प्यासी पृथ्वी का हृदय फट गया था। समूची सृष्टि में भीषण अकाल की स्थिति थी। सागबाता की प्रजा को पीने के लिए भी पर्याप्त जल नहीं मिल रहा था।

उस अभूतपूर्व सूखे के तीसरे वर्ष के अंत में स्वर्ग के दो निवासी पृथ्वी पर आये। वे अपने साथ भविष्यवाणी के लिए कुछ दैवी बीज लेकर आये थे। उनसे जब किसी विषय पर भविष्यवाणी करने के लिए कहा जाता तो वे उन बीजों को मुट्ठी में लेकर पृथ्वी पर उछाल देते और उनसे जो आकृतियां बनतीं, उनका अध्ययन करके भविष्यवाणी करते। कुछ दिनों बाद पृथ्वी के राजा सागबाता को भी यह पता लगा कि स्वर्ग के दो निवासी पृथ्वी पर आये हुए हैं और उनमें भविष्यवाणी करने की प्रतिभा है। सागबाता ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया और उनसे पूछा कि पिछले तीन वर्षों से पृथ्वी पर वर्षा क्यों नहीं हुई। उन भविष्यवक्ताओं ने राजा के सामने ही फर्श पर बीज उछाले और उनसे बनी आकृतियों का अध्ययन करके सागबाता से कहा, 'तुम्हारा भाई सोगबो, जो स्वर्ग का शासक है, तुमसे इसलिए नाराज है कि तुमने पृथ्वी की संपदा में से उसे कभी कुछ नहीं दिया। इसी कारण उसने तुम्हें, पृथ्वी को और पृथ्वी के निवासियों को दंड देने की दृष्टि से वर्षा को रोक लिया है। अतः यदि तुम पृथ्वी पर शांतिपूर्वक जीना चाहते हो तो यह आवश्यक है कि तुम अपने भाई के साथ संधि कर लो। मगर यह तभी संभव है जबकि तुम पृथ्वी की संपत्ति को अपने भाई सोगबो के साथ बांटने के लिए सहमत हो जाओ।''

सागबाता ने उन भविष्यवक्ताओं से कहा, ''सोगबो द्वारा वर्षा को स्वर्ग मे ही

रोके रखना पूर्णतया अनुचित है, क्योंकि जल और अग्नि दोनों मेरी माता की संपत्ति के अंग हैं तथा उन दोनों पर मेरा वैधानिक अधिकार है क्योंकि मैं दोनों भाइयों में बड़ा हूं। मैं जल और अग्नि को अपने साथ केवल इस कारण नहीं ला सका कि वह मेरे लिए असुविधाजनक होता। उन दोनों पर मेरे भाई का कोई अधिकार नहीं है। फिर भी मैं सोगबो के साथ संधि करने और उसे पृथ्वी की संपत्ति में उसका हिस्सा देने के लिए तैयार हूं, परंतु स्वर्ग पृथ्वी से बहुत दूर है और मेरे शरीर में इतनी शक्ति नहीं है कि मैं इतनी लंबी चढ़ाई कर पाऊं। मुझे अपने भाई के साथ संधि चर्चा करने और उसका हृदय जीतने का कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता।"

स्वर्ग के वे दोनों निवासी वास्तव में सोगबो के दूत थे। सोगबो ने उन्हें पृथ्वी पर इसीलिए भेजा था कि वे वहां जाकर उसके भाई सागबाता को यह समझायें कि जब तक वह पृथ्वी की संपत्ति में स्वर्ग के शासक सोगबे को हिस्सा नहीं देगा, तब तक सोगबो उससे नाराज रहेगा और अपमानित महसूस करेगा और पृथ्वी पर पानी नहीं बरसने देगा। उन दूतों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया और सोगबो के मन की बात सागबाता को कह दी। उन्होंने सागबाता से यह भी कहा कि पृथ्वी पर वूटूटू नामक पक्षी होता है (जिसे भारत में नीलकंठ कहा जाता है), जो पृथ्वी से स्वर्ग तक मुक्त विचरण करता है। वूटूटू की सोगबो के साथ अच्छी मित्रता है और सोबगो का भी वूटूटू पर गहरा विश्वास और प्रेम है। यदि सागबाता पृथ्वी की संपत्ति से सोगबो को उसका अंश देना चाहे तो वह वूटूटू पक्षी को बुलाकर उससे यह प्रार्थना करे कि वह स्वर्ग में उसके भाई तक उसका संदेश पहुंचा दे। वूटूटू सागबाता का कहना कभी नहीं टालेगा।

सागबाता के सामने दूसरा कोई मार्ग ही न था। यदि उसका वश चलता तो वह अपने भाई से युद्ध कर लेता परंतु स्वर्ग तक उसकी पहुंच ही न थी, इसलिए वह विवश था। अतः उसने वूटूटू पक्षी को बुलाया और उससे प्रार्थना की कि वह स्वर्ग जाकर सोगबो से कहे कि उसका भाई सागबाता उसे स्वर्ग और पृथ्वी दोनों का अधिपति तथा स्वामी मानने के लिए तैयार है, अतः अब पृथ्वी के उन प्राणियों और जीवन की रक्षा की जिम्मेदारी सोगबो पर है, जिनकी सृष्टि उनकी मां महान् देवी मावू ने प्रेम और परिश्रमपूर्वक की थी।

वूटूटू ने सागबाता का संदेश सोगबो तक पहुंचा दिया और उससे कहा कि वह पृथ्वी का शासन अपने हाथों में संभाल ले। वूटूटू ने उसे बताया कि तीन वर्ष के सूखे के परिणामस्वरूप पृथ्वी का गला सूख गया है, अतः उसे तुरंत पृथ्वी पर पानी बरसाना चाहिए। वूटूटू के मुंह से पृथ्वी और उसके प्राणियों के कष्टों की गाथा सुनकर सोगबो का हृदय पिघल गया, परंतु वह यह अवश्य चाहता था कि उसका भाई यह महसूस करे कि उसने पानी और आग को स्वर्ग में छोड़कर महान् भूल की है क्योंकि ये ही दो चीजें हैं, जो सृष्टि को जीवन प्रदान करती हैं और इन दोनों पर जिसका भी नियंत्रण होगा, पृथ्वी का शासन वही कर सकेगा। इसी कारण सागबाता द्वारा पृथ्वी पर सोगबो का अधिकार स्वीकार करने से पहले ही पृथ्वी के
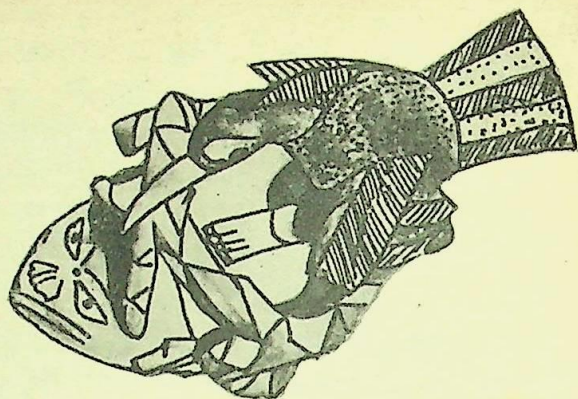
वूटूू पक्षी

शासन की बागडोर सोगबो के हाथ में आ चुकी थी। सागबाता का संदेश पाकर सोगबो के मन की जलन दूर हो गयी और उसने वूटूू से कह दिया कि सागबाता का प्रस्ताव उसे मंजूर है।

सोगबो ने वूटूू से कहा कि "इस बारे में मेरे विचार और मेरी स्वीकृति तुम सागबाता तक पहुंचा देना और उसे यह विश्वास दिला देना कि आगे से न तो कभी वर्षा रुकेगी और न अग्नि (सूर्य) को ही यह अनुमति दी जायेगी कि वह पृथ्वी के प्रति उपेक्षा अथवा उग्रता दिखाये।"

वूटूू सोगबो का संदेश लेकर स्वर्ग से रवाना हो गया। उसके पृथ्वी पर पहुंचने से पहले ही जीवनदायी जल से भरपूर काले बादल आकाश में छा गये तथा बिजली चमकने और कड़कने लगी।

वूटूू जैसे ही सागबाता के महल के निकट पहुंचा, पानी बहुत तेजी से बरसने लगा। मूसलाधार वर्षा हुई। सागबाता और उसके प्रजाजन यह समझ गये कि उनका संदेश सोगबो तक पहुंच गया है और उसने उसे स्वीकार करके पृथ्वी पर जल बरसाना शुरू कर दिया है। ठीक उसी समय वूटूू सागबाता के पास पहुंच गया और उसने सोगबो का संदेश उसे विस्तार से सुनाया। सागबाता को अपने भाई की कुशलता पाकर प्रसन्न हुई। उसने वूटूू के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यह आदेश जारी कर दिया कि पृथ्वी के निवासी हमेशा वूटूू का आदर करेंगे और वूटूू हत्या उनके लिए वर्जित होगी।

भविष्यवाणी करने वाले स्वर्ग के दो दूतों तथा वूटूू पक्षी के कारण ही गोगबो और सागबाता के बीच मनमुटाव समाप्त हो सका तथा पृथ्वी और उसके प्राणियों ने स्वर्ग की अधीनता स्वीकार कर ली और उन्होंने स्वर्ग के देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उन्हें उनका भाग देना स्वीकार कर लिया, जिससे कि वे हर साल पृथ्वी पर जल बरसाते रहें और सूर्य भी पृथ्वी पर कृपा दृष्टि बनाये रखे। दहोमी और अफ्रीका में ही नहीं विश्व के सभी भागों में अनावृष्टि होने पर स्वर्ग के देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि दी जाती है तथा यज्ञ किये जाते हैं। ■■

लगा।

घर-घर के लिए महिलोपयोगी पुस्तकें

बेबी रिकॉर्ड एलबम
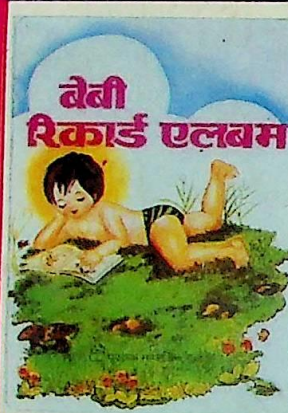
नवजात शिशु के जन्म पर सर्वोत्तम उपहार। आप मां हैं। बच्चा बड़ा होगा, उसके दांत निकलेंगे। वह बैठना, चलना, हँसना सीखेगा। इस एलबम में आप ये सारी बातें नोट कर सकती हैं। इसमें विभिन्न मुद्राओं में बच्चे की तस्वीरें लगा सकती हैं। कुछ सालों बाद, आप इस एलबम को देख-देखकर फूली नहीं समाएंगी। बच्चा बड़ा हो जाएगा। बच्चे का बचपन आपके सामने चलचित्र की भांति घूम जाएगा। पर यह एलबम आपके बच्चे की सचित्र जीवनी होगी।

पृ. 52, मूल्य :

अंग्रेजी में भी उपलब्ध। प्रत्येक पृष्ठ 5 रंगों के मनमोहक चित्रों से सज्जित।

बेबी हैल्थ गाइड
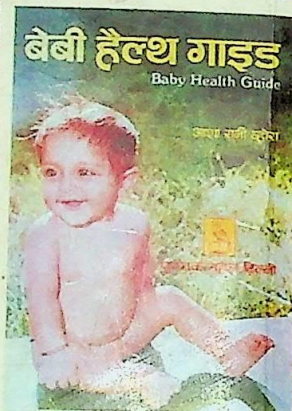
यह पुस्तक * बच्चों में होने वाली आम शिकायतें एवं बीमारियां, जैसे- दस्त लगना, सर्दी व लू लगना, जुकाम-खांसी, जिगर बढ़ना, सूखा रोग, बिस्तर गीला करना आदि से आपके बच्चे को सुरक्षित रखेगी। *बच्चों में होने वाली खराब आदतें, जैसे-जिद्दीपन, चिड़चिड़ापन, ढीठपन, मचलना-रोना, डरना, क्रोध आदि से आपके बच्चे को बचा कर आज्ञाकारी, विनम्र तथा अनुशासनप्रिय बनाने में मदद करेगी। * दुर्घटना हो जाने पर प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी देगी। ...... इसके अतिरिक्त अन्यान्य ढेरों [illegible] जानकारियां।

पृ. 260, मूल्य :

महिला विषयों की विशेषज्ञ श्रीमती आशारानी व्होरा द्वारा लिखित एवं 18 विशेषज्ञ डॉक्टरों के साक्षात्कारों पर आधारित ....

बच्चों के 2001 नाम

हर माता-पिता के सम्मुख बच्चे के जन्म के साथ ही उसके नामकरण की समस्या आती है। बच्चे का क्या नाम रखें जो नया लगे। साथ ही साथ जो जातक के व्यक्तित्व के अनुरूप हो तथा उसके जीवन में प्रभावी भी। इसके लिए वे अपने नाते-रिश्तेदारों और दोस्तों से भी सलाह-मशवरा करते हैं।

यह पुस्तक बच्चों के नामकरण की समस्या को सुलझा देती है। इसमें अकारादि क्रम से बालक और बालिकाओं - दोनों के 2001 नाम सुझाए गए हैं। आप अपनी रुचि के अनुसार बच्चे के लिए कोई भी नाम चुन सकते हैं।

पृ. 32, मूल्य :

मॉडर्न हेयर स्टायल्स

बाल सैट करवाने के लिए अब किसी ब्यूटी पार्लर में जाने की आवश्यकता नहीं। श्रीमती आशारानी व्होरा द्वारा लिखित इस पुस्तक की मदद से यह सैटिंग घर पर ही कीजिए। राउण्ड कट, स्ट्रेट कट, फीजर कट, रिंगलेट्स शोल्टुकट सहित कई अन्य स्टायल्स।

पृ. 84, मूल्य :

दाग-धब्बे

यह पुस्तक क्या है? एक प्रकार की अनूठी होमगाइड है, जो घरेलू धब्बों से निबटने के बारे में नवीनतम किंतु व्यावहारिक जानकारी देती है। धब्बे चाहे रसोईघर के हों या स्नानगृह के, फर्श पर के हों, या दीवारों पर के, फर्नीचर पर के हों या संजावटी वस्तुओं पर के, पुस्तक में निर्दिष्ट उपायों द्वारा उन्हें आसानी से मिटाया जा सकता है।

पृ.32, मूल्य : **अंग्रेजी में भी उपलब्ध।** प्रत्येक पृष्ठों में रंगीन चित्रों से सज्जित

गृह-उपयोगी नुक्ते

घरेलू उपयोग के सैकड़ों नुक्ते इस पुस्तक में। गृहिणी समय और पैसा दोनों बचा सकती हैं इसे पढ़कर भंडारण, रसोईघर, रेफ्रिजरेटर, सफाई, गृह- सज्जा जैसे विषयों के बारे में उपयोगी सुझाव।

अंग्रेजी में भी उपलब्ध।

पृ. 32, मूल्य :

अपने निकट व ए.एच.व्हीलर के रेलवे व बस-अड्डों के बुकस्टॉलों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता-

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006, फोन : 239314

शोरूम: 10 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 **फोन:** 3268292, 3268293